आलोक कुमार

मार्कस औरिलिअस की दी मेडिटेसन का हिंदी अनुवाद

Hindi Translation of Marcus Aurelius's The Meditations

www.PDFshala.com

मार्कस औरिलिअस की दी मेडिटेसन का हिंदी अनुवाद

Hindi Translation of **Marcus Aurelius's The Meditations**

डा आलोक कुमार

dralok.in

www.PDFshala.com

मेडिटेशन: मार्कस औरिलिअस, जो की एक रोमन सम्राट थे के खुद के लिखे विचारों की एक श्रृंखला है जिसे उन्होंने 161 से 180 ईशा पूर्व लिखा था. यह विचार श्रृंखला जीवन को कैसे जीएं, और कैसे हर परिस्थिति में बेहतर तरह से जीया जा सकता है इसकी महत्वपूर्ण प्रस्तुति हैं.

www.PDFshala.com

अध्याय- 1

अपने दादा विरस से मैंने अच्छी नैतिकता और अपने स्वभाव पर बेहतर नियंत्रण करना सीखा.

अपने पिता की प्रतिष्ठा और यादों से मैंने नम्रता और हिम्मती चरित्र का होना सीखा.

अपनी माँ से, धर्मपरायणता और नेक, और संयमी, न केवल बुरे कृत्यों से बल्कि बुरे विचारों से भी; और उससे आगे, सादगी मेरे रहना, जिसने मुझे अमीर लोगों की आदतों से दूर रखा.

अपने पितामह से, सामुदायिक विद्यालय की जगह अपने घर में बेहतर शिक्षक से पढ़ना, और जाना की इस तरह की चीजों में आदमी को खुल कर खर्च करना चाहिए.

अपने नियंत्रक से, न हरे न ही नीले खेमे का समर्थक होना खेलों में, न ही ग्लेडियेटरों की लड़ाई में परिमुलिरियस का या स्कटूयूरियस का समर्थक होना. उनसे सीखी मेहनत करने की ललक, और कम की चाहना रखना, और खुद अपने हाथों से काम करना, और दूसरों के मसालों सें हस्तक्षेप न करना, और बुराइयों को सुनने को तैयार न रहना.

डायोनियस से, अपने को हल्की बातों में व्यस्त न रखना, और उस बात पर ध्यान न देना जो कि चमत्कार करने वाले और बाजीगरों द्वारा मंत्र और टोना-टोटका करने के लिए कही जाती हैं; न बटेरों को लड़ाई के लिए पालना और न ही अपने को ऐसी चीजों की तरफ आकर्षित करना; और खुद के बोलने पर नियंत्रण रखाना; और दर्शन से आत्मीयता रखना; और सुनना, पहले बचुसियस को, फिर टेन्डिस और मार्केनियस को; अपने युवक होने पर भाषणों को लिखना; और कठोर बिस्तर और त्वचा की इच्छा, और जो कुछ भी जरूरी हो गर्सियन अनुशासक बनने के लिए.

रस्टीस से, मैंने यह प्रभाव लिया की मेरा चरित्र सुधार और अनुशासन चाहता है; और उनसे मैंने सीखा कैसे मिथ्या से भरे अनुकरण से भटक न जाऊं, न ही काल्पनिक मुद्दों पर लिखना, न ही तुच्छ भाषण देना, न यह दिखाना की मैं बहुत अनुशासित हूँ, या प्रदर्शन के समय अनियंत्रित व्यवहार; और वाक्पटुता, और कविता, और अलंकार पूर्ण लिखने से बचना; और अपने बाहर के कपड़ों को पहनकर घर में प्रवेश न करना, न ही ऐसी और किसी चीज को करना; और अपने पत्रों को सरल भाषा में लिखना, जैसे रस्टीस ने मेरी माँ को साईनस से लिखे; और उनको

www.PDFshala.com

सम्मान देना जिन्होंने मुझे अपने शब्दों से आहत किया, या मेरे साथ बुरा किया, सहमत होना और निर्णय लेना जैसे ही वह तत्परता दिखाएं सहमती देने में; और सावधानी से पढ़ना, किताब की सतही जानकारी से संतुष्ट न होना; न जल्दबाजी में उनको अपनी स्वीकृति देना जो ज्यादा बोलते हैं; और मैं उनका ऋणी हूं कि मुझे उन्होंने इपिकेटुस के वचनों से परिचित कराया, जिसका वह अपने खुद के संग्रह से मेरे से संवाद करते थे.

अपोनियस से मैंने सीखा इच्छा शक्ति की स्वतंत्रता और उद्देश्य के लिए न भटकने वाली स्थिरता; उद्देश्य की प्राप्ति के लिए, किसी भी चीज के तरफ एक पल के लिए भी ध्यान न देना; और हमेशा एक जैसा बना रहना, गहरे दर्द में, अपने बच्चे को खोने पर, और लंबी बीमारी में; और स्पष्ट रुप से जीवंत उदाहरण की तरह देखना की एक आदमी काफी दृढ़ और नर्म दोनों हो सकता है, और अपने निर्देश देने में चिड़चिड़ा नहीं है; और मेरी आँखों के सामने जो स्पष्टतः अपने अनुभव और अपनी योग्यता से अपनी छोटी से छोटी प्राथमिकता में दार्शनिक सिद्धांतों कि व्याख्या करते हैं; और उनसे मैंने सीखा कैसे बिना उनसे दीन दिखे या उनसे बिना संज्ञान में लिए, अपने मित्रों का सम्माननीय समर्थन लिया जाए.

सेक्टस से, उदार स्वभाव, और किस तरह से परिवार को प्यार के साथ पाला जाता है, और प्रकृति के साथ कैसे आराम से रहा जा सकता है; आकर्षण बिना अनुराग के, और मित्रों के हितों को ध्यान रखाना, और अज्ञानी व्यक्ति को और जो बिना विचार किए राय बनाते हैं उनको बर्दाश्त करना. अपने साथ सभी से सामंजस्य बैठाने की उनमें ताकत थी, जिससे की उनके साथ संवाद ज्यादा सहमति से भरा होता था न कि किसी तरह की चापलूसी से. साथ ही उस समय वह सभी से सम्मान पाते थे जो उनसे जुड़े होते थे: और उनके पास जीवन के आवश्यक सिद्धांतों को बुद्धिमत्ता और तरीके से खोजने की और व्यवस्थित करने की क्षमता थी; और उन्होंने कभी गुस्सा नहीं किया या भावावेश में रहे, बल्कि पूरी तरह से भावावेश से मुक्त, और काफी स्नेह करने वाले; वह सहमती बिना प्रदर्शन के व्यक्त करते थे, और वह बिना आडंबर के काफी ज्ञानी थे.

सिकंदर, भाषा विज्ञानी से, गलतियों को खोजने से बचना, और तिरस्कार से उनको न डाटना जिन्होंने बर्बर या अशुद्ध या अजीब-आवाज के साथ अभिव्यक्ति की है. बल्कि कुशलता से हर उस अभिव्यक्ति की व्याख्या करना जिसे प्रयोग किया गया है, और जवाब देते हुए या पुष्टि करते हुए, या चीजों की पूछताछ में खुद से जुड़ते हुए, न केवल शब्द, या कुछ उचित सुझाव.

फरन्टो से मैंने सीखा तानाशाही में क्या बुराई, और कपट, और पाखंड है, और आमतौर पर जो हमारे बीच हैं जिन्हें पेट्रिसियन कहा जाता है उनमें पारिवारिक स्नेह की कमी होती है.

सिकंदर जो प्लेटों को मानने वाले थे, न बात-बात पर न ही अनावश्यक रूप से किसी से कुछ कहना, या पत्र का लिखना, जिससे मेरा कोई वास्ता नहीं है; न ही आवश्यक जिम्मेदारियों की अवहेलना करना जो कि हमारे संबंध में जरूरी हैं जिनके साथ हम रहते हैं, अतिआवश्यक काम

www.PDFshala.com

को दोष देते हुए.

क्टूलस से, असहमत न होना जब दोस्त गलती खोजता है, जब भी वह गलती बिना किसी कारण के खोजता हो, बल्कि उसका समाधान करना; और शिक्षकों से अच्छी तरह से बोलना; और अपने बच्चों से वास्तविक प्यार करना.

अपने भाई सविरस, अपने संबंधियों से प्यार करना, और सत्य से प्यार करना, और न्याय से प्यार करना; और उनके द्वारा मैंने जानना सिखा थरेसिया, हैलविडस, कैटो, डायन, ब्रुटस को; और उनसे मैंने राजनीति के इस विचार को ग्रहण किया की सभी के लिए समान नियम होते हैं, संगठन पर समान अधिकारों और समान बोलने की स्वतंत्रता पर शासित हो सकता है, और बेहतर सरकार सभी की स्वतंत्रता पर निर्भर करती है; मैंने उससे सीखा दर्शन के लिए मेरी संगत और स्थिरता बनी रहे; और अच्छा करने का स्वभाव, और दूसरों को आसानी से देना, और अच्छी उम्मीद को जगाए रखना, और विश्वास करना की मुझे मेरे दोस्तों द्वारा प्यार किया जाता है; और उसमें मैंने अवलोकन किया की किसी कि निंदा करने के बाद अपने दृष्टिकोण पर न अड़ना, और उसके दोस्तों को यह अनुमान नहीं लगाना होता था की वह क्या चाहते हैं या नहीं चाहते हैं, बल्कि वह काफी सहज थे.

मैक्सिमस से, मैंने सीखा आत्म नियंत्रण और किसी चीज से विचलित न होना; हर परिस्थिति में, साथ ही बीमारी में भी खुश रहना; और नैतिक चरित्र में मिठास और गरिमा का सही मिश्रण. और बिना किसी शिकायत के वह करना जो कि उनके सामने प्रस्थापित किया गया है. मैंने यह अवलोकन किया है कि हर कोई सोचता है की वह विचार करते हैं बोलने से पहले, और इस सभी में उनका कोई गलत उद्देश्य नहीं होता है; वह कभी अचंभा और आश्चर्य नहीं दिखाते हैं, और वह कभी भी जल्दी में नहीं रहते हैं, और कभी जिम्मेदारी से नहीं बचते हैं, न ही व्याकुल और उदास होते हैं, न ही वह अपने क्लेश को छिपाने के लिए हंसते हैं, न ही, दूसरी तरफ, वह कामुक और संदेहजनक दिखे. वह भले कामों को करने को तैयार रहते हैं, और भूल जाने को भी तैयार रहते हैं, और वह झूठ से मुक्त हैं; और उन्होंने आदमी का वह प्रस्तुतिकरण दिया है जिसे सही करने से विचलित नहीं किया जा सकता है इसकी जगह की उसे यह सिखाया जाए. मैंने यह भी अवलोकन किया, की कोई आदमी यह सोच भी नहीं सकता है उसका तिरस्कार मैक्सिमस द्वारा किया गया था, या उन्होंने अपने को उससे बेहतर समझा हो. उनके पास सहमती के साथ विनोदी बने रहने की कला थी.

अपने पिता में मैंने निहारा की वह स्वभाव से सौम्य थे, और उन चीजों के लिए दृढ़ संकल्पित जिनको वह पूरी विवेचना के बाद करना चाहते थे; और उन चीजों के लिए अनिच्छुक जिन्हें आदमी सम्मान कहता है; और मेहनत और दृढ़ता से प्यार; उन लोगों को सुनने की तत्परता जिनके पास आम परेशानियों को दूर करने का प्रस्ताव होता था; और हर आदमी को उसकी मेहनत के अनुसार देने की अविचलित करने वाली दृढ़ता; और ज्ञान जिसे जोश पूर्ण कृत्यों और माफ करने के अवसरों से अर्जित किया गया. मैंने अवलोकन किया बच्चों के लिए सभी तरह के

www.PDFshala.com

भावावेश से उबर चुके थे; और वह अपने को किसी अन्य नागरिक से ज्यादा नहीं समझते थे; और उन्होंने अपने मित्रों को लिए समर्थन करने या जब वह बाहर जाते हैं तो उनके साथ चलने की सभी तरह की बाध्यता से मुक्त रखा था. किसी विशेष परिस्थिति को छोड़कर, मैं उनको हमेशा एक जैसा पाता था. मैंने अवलोकन किया सावधानी से सभी चीजों की विवेचना करने की आदत का, और उनकी जिद का, और उन्होंने अपनी जांच को तब तक बंद नहीं किया जब तक वह संतुष्ट नहीं हों उस बात से जो उनके सामने प्रस्तुत की गई थी. और उनका अपने दोस्तों को साथ रखने का स्वभाव था, और वह उनसे जल्दी नहीं थकते थे, न ही अपने स्नेह को हद से पार जाने देते थे. और सभी अवसरों पर संतुष्ट और हंसमुख रहना; और काफी पहले से चीजों को दूर से देख लेना, और छोटी चीजों को बिना प्रदर्शन के उपलब्ध करना. और तत्काल सार्वजनिक स्तुति और सभी तरह की चापलूसी को जांचना. और उस पर निगरानी रखना जो कि साम्राज्य के प्रशासन के लिए जरूरी हैं, और अच्छे प्रबंधक खर्च करने में, और धैर्य से आरोपों को सहन करना जो कि उनके इस आचरण के लिए लगाए जाते थे. और न वह देवताओं के प्रति अंधविश्वास करते थे, न वह दरबारियों को तोहफे देते थे या उन्हें खुश करते थे, या जनता की चापलूसी करते थे. लेकिन उन्होंने सभी चीजों में संयम और दृढ़ता दिखाई, और कभी अपने विचारों में या कृत्यों में तुच्छता नहीं दिखाई, न ही नई चीजों के लिए अधीरता दिखाई. और सभी चीजें जो कि जीवन में किसी भी तरह से मदद करती हैं, और जिनकी सौभाग्य प्रचुर मात्र में आपूर्ति करता है, उसे उन्होंने बिना घमंड के और बिना अपने से बहाना बनाए प्रयोग किया; जिससे की वह जब उनके पास होती थी, वह उनका बिना मोह के आनंद लेते थे, और जब वह नहीं होती थी वह उनकी चाहना नहीं रखते थे. कोई उनसे यह नहीं कह सकता था की वह तर्क करते हैं या क्षुद्र मानसिकता के हैं या अभिमानी हैं; बल्कि हर कोई उन्हें बिना चापलूसी के परिपूर्ण और अनुभवी व्यक्ति के रुप में स्वीकार करता था, जो खुद के और दूसरे लोगों के मसलों को संभाल सकते थे. इसके अलावा, वह उनका सम्मान करते थे जो सच्चे दार्शनिक थे, और वह उनको तिरस्कार से नहीं देखते थे जो दार्शनिक बनने का प्रयास करते थे, न ही फिर भी उनका उनके लिए झुकाव होता था. वह बातचीत करने में पहुंच में थे, और वह बिना प्रतिवाद के अपने को सहमत कर लेते थे. वह अपने शरीर के स्वस्थ की समुचित देखभाल रखते थे, परंतु उसकी तरह से नहीं जो जीवन से बहुत लगाव रखता है, न ही खुद के प्रस्तुतिकरण में बहुत संजीदा, न ही लापरवाह, बल्कि, खुद की देखभाल से, उन्हें शायद ही चिकित्सक की सलाह का या दवाइयों की या बाहरी चीजों की जरूरत होती थी. वह उन्हें बिना ईर्ष्या के देने को तैयार रहते थे जो कुछ विशेष जानकारी रखते थे, जैसेकि कानून और नैतिकता की जानकारी और ज्ञान, या कुछ दूसरा; और वह उन्हें अपनी मदद भी देते थे, जिससे हर कोई सम्मान पा सके उनके पुरस्कार से; और उन्होंने अपने देश के संस्थानों के साथ सुविधापूर्ण काम किया, बिना उनसे लगाव को दिखाते हुए. आगे, वह बदलाव के ज्यादा इच्छुक थे न ही अस्थिरता के, बल्कि वह एक ही जगह पर रहना पसंद करते थे, और खुद से उन्हीं एक जैसी चीजों में व्यस्त रखते थे. और सिर दर्द के होने के बाद वह तुरंत ताजगी से भरे हुए और जोश से अपने काम में व्यस्त हो जाते थे. उनके पास छिपाने को कुछ भी नहीं था बल्कि बहुत थोड़ा था, और वह भी केवल सार्वजनिक मसलों में; और वह सार्वजनिक समारोह में प्रदर्शन में और सार्वजनिक इमारतों के बनने, लोगों को दान देने में, और ऐसी ही चीजों में मितव्ययिता दिखाते थे. क्योंकि वह वे व्यक्ति थे जो देखते थे की क्या किया

www.PDFshala.com

जाना चाहिए, न की आदमी के कृत्यों से प्रतिष्ठा पाने का प्रयास करना. वह असमय नहाते नहीं थे; उनका इमारतों के बनाने में झुकाव नहीं था, न ही वह जिज्ञासु रहते थे उन्होंने क्या खाया, न ही अपने कपड़ों के रंग और उसकी बनावट पर, न ही अपने गुलामों की सुंदरता को लेकर. उनके वस्त्र आमतौर पर लौरिम, उनका घर जो तट के निकट था और लेनिवयूम से आते थे. वह जानते थे कि कैसे कर संग्राहक से व्यवहार करें टस्कलम जिसने उनसे माफी चाही थी; और इस तरह का उनका व्यवहार था. उनमें कुछ भी कठोर, न ही निष्ठुर, न ही हिंसक, न कोई कह सकता था की पसीना छुड़ा सकता था ऐसा था; बल्कि वह सभी चीजों का एक-एक करके परीक्षण करते थे, जैसे उनके पास समय की बहुतायत हैं, और बिना उलझन के, व्यवस्थित तरीके से, उत्साह से और निरंतर. और यह उस पर भी लागू हो सकता हैं जो सुकरात को मानने वाला हैं, जिससे की वह संयम भी रख सकते हैं और आनंद भी ले सकते हैं उन चीजों का जिनके लिए अनेक संयम नहीं रख पाते हैं और अनेक बहुतायत के न होने पर आनंद भी नहीं ले पाते हैं. बल्कि मजबूत होने के लिए किसी को एक को धारण करना चाहिए और दूसरे पर नियंत्रण होना चाहिए यह उस आदमी के विशेषताएं हैं जिनकी अजेय और दोष रहित आत्मा है, जैसेकि उन्होंने मैक्सिमस की बीमारी के समय दिखाई थी.

मैं आभारी हूँ देवताओं का, अच्छे पितामह, अच्छे माता-पिता, अच्छी बहन, अच्छे शिक्षक, अच्छे सहयोगी, अच्छे संबंधी और मित्र, सभी कुछ तकरीबन अच्छा होने के लिए. देवताओं के आगे स्वीकार करता हूँ की मैंने उनमें से किसी के विरुद्ध कोई अपराध करने की जल्दबाजी नहीं की, जबकि मेरा स्वभाव है यदि परिस्थिति ऐसी होती, मुझे इस तरह के किसी काम को करना होता; बल्कि उनके समर्थन से, मेरे सामने ऐसी कोई परिस्थिति नहीं आई जिसने मेरी परीक्षा ली हो. आगे में देवताओं को धन्यवाद देता हूँ की मेरा मेरे दादा की परिचारिका के द्वारा पालन पोषण नहीं किया, और मैंने अपनी जवानी को बचा कर रखा, और मैंने आपने पौरुष का उचित मौसम से पहले साक्ष्य नहीं दिया, बल्कि उसे स्थगित रखा समय पर; मेरा संबंध उस शासक और पिता से था, जो मेरे सभी तरह के दंभ को दूर करने के सक्षम थे, और मुझे वह ज्ञान दिया की आदमी के लिए यह संभव है की वह महलों में बिना पहरेदार के या कढ़ाईदार कपड़ों के, या मशालों और मूर्तियों के, और इस तरह के दिखावे के बिना रहे; बल्कि यह आदमी के अधिकार में है की वह अपने को खुद का बनाए रखे, या कृत्यों में उन चीजों को लेकर बेपरवाह जिन्हें सार्वजनिक हित में किसी शासक के भले के लिए किया जाना जरूरी है. मैं देवताओं को ऐसा भाई देने के लिए धन्यवाद देता हूँ, जिसने अपनी नैतिकता से मुझे अपने ऊपर निगाह रखने के लिए तैयार किया, और जिसने उसी समय अपने श्रद्धा से और प्यार से मुझे संतुष्ट किया; और मेरे बच्चे नालायक नहीं हैं और न शरीर से अस्वस्थ; मैंने वाक पटुता, कविता, और इसी तरह की अन्य शिक्षा में ज्यादा प्रवीणता नहीं ली, जिनमें संभवतः मैं पूरी तरह से अपने को व्यस्त कर लेता, यदि मैं देखता की इनमें मैं बढ़त ले रहा हूँ; जिन्होंने मुझे सम्मानजनक स्थान दिलाया, बिना देरी किए मैंने जल्दबाजी की उन्हें स्थापित करने में जिसकी उन्हें इच्छा थी, क्योंकि वह तब अभी युवा थे; मैं अपोनियस, रस्टीस, मैक्सिमस को जानता हूँ; यह कि मैंने प्रकृति के अनुसार रहने का स्पष्ट और अकसर प्रभाव पाया, और किस तरह की यह जिंदगी है, जिससे यह, जब तक वह देवताओं पर निर्भर है, और उनके तोहफों, और मदद, और प्रेरणा पर, किसी ने भी मुझे भयभीत नहीं किया

www.PDFshala.com

प्रकृति के अनुसार रहने से, जबकि मैं अभी भी अपने को असंतुष्ट पाता हूँ अपनी गलतियों से, और अवलोकन न कर पाने से देवताओं की चेतावनियों को, और, मैं अभी भी कहता हूं, की मेरा शरीर इस तरह के जीवन में काफी समय से है; मैं कभी बैनडिटा या थेरोडोस को छू भी नहीं पाऊंगा, और प्यार करने वाले जनून से मैं ठीक हो गया हूं; और, जबकि मैं अकसर रस्टीस से हंसी मजाक करता रहता हूं, मैंने कोई ऐसी चीज नहीं की है जिसके लिए मुझे बाद में पश्चाताप करना पड़े; यह कि, यह मेरी माता का भाग्य था की उनकी युवा अवस्था में मृत्यु हो गई उन्होंने अपने जीवन के अंतिम साल मेरे साथ बिताए; यह कि, जब भी मैंने किसी आदमी की उसकी जरूरत के समय, या किसी अन्य अवसर पर मदद करने की इच्छा की, मुझे कभी यह नहीं कहने की जरूरत पड़ी मेरे पास ऐसा करने के साधन नहीं हैं; और मेरे को कभी इसकी जरूरत नहीं पड़ी, की दूसरों से कुछ लेना पड़े; मेरे पास, ऐसी पत्नी, जो काफी आज्ञाकारी है, और काफी स्नेही, और काफी सरल है; मेरे पास अपने बच्चों के लिए अच्छे शिक्षकों की भरमार है; और सपनों में मेरे पास तिलमिलाहट का समाधान है; और यह, जब मेरा झुकाव दर्शन की तरफ था, मैं मिथ्या वाद के हाथों में नहीं गिरा, और मैं अपना समय इतिहास के लेखकों के बीच खराब नहीं करता हूँ, या न्याय के संकल्पों को लेकर या अपने को स्वर्ग को खोजने के प्रकटीकरण में व्यस्त रखूँ; क्योंकि यह सभी चीजें देवताओं और सौभाग्य की मदद चाहती हैं.

केवेदी के साथ गरनुआ में.

www.PDFshala.com

अध्याय- 2

सुबह की शुरूआत अपने से यह कहते हुए करो, मैं आज व्यस्त शरीर से, कृतघ्न, अभिमानी, धोखेबाज, ईर्षा पूर्ण, असामाजिक से मिलूंगा. जो कुछ भी उनके साथ होता है इस अज्ञानता के कारण होता है की क्या अच्छा या बुरा है.

परंतु मैं जिसने अच्छे के स्वभाव को देखा है जो खूबसूरत है, और बुरा जो बदसूरत है, और उनका स्वभाव जो गलत करते हैं, जो कि मेरे संबंधी हैं, न केवल एक ही खून या बीज के, बल्कि यह समान बुद्धि और देवत्व के हिस्से में भागीदारी करते हैं, मैं किसी से भी घायल नहीं हो सकता, क्योंकि कोई भी मुझ पर वह लाद नहीं सकता जो बदसूरत है, न मैं अपने संबंधी से गुस्सा हो सकता हूं, न ईर्ष्या कर सकता हूं. क्योंकि हम सहयोग के लिए बने हैं, जैसे पैर, जैसे हाथ, जैसे पलकें, जैसे दांतों की ऊपर और नीचे की पंक्ति. एक दूसरे के विरुद्ध काम करना तब स्वभाव के विपरीत होगा; और एक दूसरे के खिलाफ होना झगड़ा करना होगा.

जो कुछ भी मैं हूँ, वह थोड़ा मांस, और सांस, और शासन करने वाला हिस्सा है. किताबों को फेंक दो; यह आपका ज्यादा ध्यान न खींचें: इसकी अनुमति नहीं है; बल्कि जैसे यह व्यर्थ मर रहा है, मांस से घृणा करो; यह खून है और हड्डियां हैं और जाल है नसों, शिराओं और धमनियों का. सांस को भी देखें, किसी तरह की चीज यह है, वायु, और हमेशा एक तरह की नहीं, बल्कि हर पल बाहर भेजी जाती है और फिर से अंदर खींची जाती है. तीसरा तब शासन करने वाला हिस्सा है: इस पर ध्यान दें: वृद्ध व्यक्ति पर निगाह डालें; वह अब गुलाम नहीं है, न ही अब वह असामाजिक गतिविधियों में कठपुतली की तारों से खींचा जा रहा है, न ही अब वह वर्तमान गतिविधियों से असंतुष्ट है, या भविष्य की चिन्ता में परेशान है.

वह जो कुछ देवताओं से प्राप्त होता है वह विधि के अनुकूल है. वह जो कि सौभाग्य से है उसे अलग नहीं किया जा सकता है या गुथा हुआ नहीं है उन चीजों से जो विधि द्वारा आदेशित हैं. उनसे सभी चीजें का प्रवाह होता है; और आवश्यकता के अतिरिक्त, और वह जो कि पूरे ब्रह्मांड के हित में है, उसका यह हिस्सा है; लेकिन जो प्रकृति के हर हिस्से के लिए अच्छा है जिसे पूरी प्रकृति लेकर आती है, और जो इस प्रकृति को बनाए रखने में मदद करता है. अब ब्रह्मांड संरक्षित है, तत्वों के बदलाव से इसलिए चीजों के बदलाव से भी जो कि तत्वों से बनी हैं. इसलिए यह सिद्धांत तुम्हारे लिए काफी हैं, इनके लिए निश्चित राय रखो. परंतु प्यास को किताबों से बुझाते रहो, जिससे तुम बुदबुदाते हुए न मरो, बल्कि हर्षित, सत्य से परिचित, और देवताओं के लिए आभारी हृदय के साथ.

www.PDFshala.com

याद रखे कितने समय से तुम उन चीजों को करने से बच रहे हो, और कितनी बार तुमको देवताओं से अवसर मिला है, और फिर भी तुमने उसका इस्तेमाल नहीं किया है. तुम को यह अंततः पता होना चाहिए की तुम ब्रह्मांड का हिस्सा हो और जो कुछ भी ब्रह्मांड के प्रशासक ने उपलब्ध कराया है वह प्रवाह है, और एक निश्चित समय उनके लिए सुनिश्चित है, जिसके लिए यदि तुम अपने दिमाग से संदेह दूर नहीं करोगे, यह चीजें तुम से दूर चली जाएंगी और फिर कभी वापस नहीं आएंगी.

हर पल निरंतर अपने को रोमन और उस आदमी की तरह सोचो जिसके हाथ में जो कुछ भी है वह परिपूर्ण और सहज गरिमा से है, स्नेह पूर्ण, और स्वतंत्र और न्यायपूर्ण; और अपने को अन्य सभी विचारों से राहत दो. और इस तरह खुद को राहत देकर, तुम जीवन के हर कृत्य को इस तरह से करते हो की वह अंतिम है, हर तरह की लापरवाही और उसके होने के कारण के भावावेश से घृणा को एक तरफ रखते हुए, और सभी पाखंड, और खुद से स्नेह, और उससे असंतोष को जो तुम को दिया गया है. तब तुम देखते हो कितनी कम चीजें हैं, जिनको आदमी नियंत्रित करके, शांति से जीवन के बहाव में और देवताओं के उपस्थिति को महसूस करते हुए जी सकता है; जिसके पक्ष में देवता होते हैं उसे किसी चीज की जरूरत नहीं होती जो इन चीजों पर निगाह रखते हैं.

खुद से गलत करो, खुद से गलत करो, मेरी आत्मा; परंतु फिर तुम्हारे पास खुद के सम्मान के लिए अवसर नहीं होगा. हर आदमी का जीवन परिपूर्ण है. परंतु वह अंत के करीब होता है, जिसकी आत्मा खुद को सम्मान नहीं देती है बल्कि अपनी खुशी दूसरों की आत्मा में खोजती है.

उन चीजों को भी करें जो आपसे अलग हो? अपने को कुछ नया और अच्छा सीखने का समय दो, और एक ही चीज के चक्कर लगाने को रोको. लेकिन तब तुम इससे भी बचो की दूसरे रास्ते पर चलते रहो. क्योंकि जो लोग अस्थिर होते हैं वह लोग भी इस तरह की गतिविधियों से जीवन में उकता जाते हैं, और उनके पास कोई उद्देश्य नहीं होता किस दिशा में अपनी हर हलचल को निर्देशित करें, और, शब्दों में, अपने सभी विचारों को.

जो दूसरों की बुद्धि पर निगरानी नहीं रख रहा है वह शायद ही कभी अप्रसन्न रहता हो; लेकिन जो अपनी खुद की बुद्धि पर निगरानी नहीं रखते हैं वह निश्चित ही दुःखी रहते हैं.

अपने दिमाग में यह हमेशा रखो, क्या संपूर्ण की प्रकृति है, और मेरी प्रकृति क्या है, और कैसे यह इससे संबंधित है, और किस तरह का यह हिस्सा है और किस तरह का संपूर्ण है; और यहाँ कोई नहीं है जो तुम्हें हमेशा डरा सके करने और कहने से जो कि उस प्रकृति के अनुसार हैं जिसका तुम हिस्सा हो.

थियोपास्टस, गलत कृत्यों की तुलना करने पर- वह तुलना जो कोई आम धारणा के साथ करता है- दार्शनिक की तरह से कहता है, अपराध जो कि चाहना से किए जाते हैं वह ज्यादा दोषी होते हैं उनकी जगह जो कि गुस्से से किए जाते हैं. क्योंकि जो गुस्से में है वह अपने को निश्चित दर्द और अचेतना घबराहट के साथ उद्देश्य से दूर कर लेता है; लेकिन जो चाहना से घिरा है, वह जबरदस्त

www.PDFshala.com

आमोद से भर हुए, ज्यादा असंयम से अपने कामों को करता है. तब दर्शन की दृष्टि से सही यह है, की कृत्य जो आमोद से किए जाते हैं वह ज्यादा दोषी है उनसे जो कि दर्द में किए जाते हैं; और सार यह है कि पहला जो गलत है, वह उस आदमी की तरह से है जो दर्द के कारण गुस्सा करता है; लेकिन दूसरा अपने आवेग के चलते गलती करता है, और किसी चीज को चाहना से करने को आकर्षित होता है.

चूंकि यह संभव है तुम इस जीवन को हर पल जी सको, हर कृत्य और विचार को तदनुसार नियंत्रित करो. उन लोगों के साथ जाना, यदि वहां देवता हैं, यह कोई डरने की बात नहीं है, क्योंकि देवता तुम को बुराई में हिस्सेदार नहीं बनाएंगे; लेकिन यदि उनका अस्तित्व ही नहीं है, या उनका मानवीय पहलुओं से कोई वास्ता नहीं है, तब मेरे पास उस ब्रह्मांड में जीने के लिए क्या है जो देवताओं और विधि से रहित हो? लेकिन वास्तव में वह अस्तित्व में हैं, और वह मानवीय वस्तुओं का ध्यान रखते हैं, और उन्होंने आदमी के अधिकार में यह दिया है की वह अपने को वास्तविक बुराइयों का हिस्सा न बनाए. और बाकी के लिए, यदि यहाँ कुछ बुरा है, उन्होंने इसके लिए भी व्यवस्था की है, की यह मनुष्य के अधिकार में है वह इसमें न गिरे. अब वह जो आदमी को बदतर नहीं बनाता है, वह कैसे आदमी के जीवन को बदतर बना सकता है? न तो अज्ञानता से, और न ही ज्ञान के न होने से, बल्कि इन चीजों से अपने को बचा न पाने या उन्हें सही न कर पाने की ताकत के न होने से, यह संभव है की ब्रह्मांड की प्रकृति ने उनकी अनदेखी कर दी हो; और न ही यह संभव है की उसने इतनी महान गलती की हो, चाहे ताकत की चाहत में या कौशल की चाहत में, कि बुरा और अच्छा अंधाधुंध अच्छे और बुरे के साथ होता रहे. लेकिन मृत्यु निश्चित ही, और जीवन, सम्मान और अपमान, दर्द और आनंद, सभी चीजें अच्छे और बुरे आदमी को बराबर से होती है, वह चीजें हैं जो हमें न तो बेहतर न ही बदतर बनाती हैं. इसलिए वह न तो अच्छी न ही बुरी हैं.

कितनी तेजी से ब्रह्मांड में चीजें गायब हो जाती हैं, खुद से शरीर भी, बल्कि समय के साथ उनकी यादें भी; सभी संवेदनशील चीजों का स्वभाव क्या है, और विशेषतः उनका जो कि आनंद की चाहना में आकर्षित होती हैं और दर्द से आतंकित होती हैं, या परेशान रहती है अनहोनी से; कितनी बेकार और घृणित, और घिनौनी, और खराब और मरी हुई वह हैं- इन सभी का बुद्धि को अवलोकन करना चाहिए. उनका भी अवलोकन वह कौन है जिनकी राय और आवाज सम्मान देती है; क्या मृत्यु है, और यह तथ्य भी, यदि आदमी खुद में यह देखे, और भावनात्मक शक्ति से उन सभी चीजों का हल खोजे जो खुद को उन सभी की कल्पना कराती हैं, इसके बाद वह इन पर केवल स्वभाव के एक व्यवहार के रुप में विचार करे; और यदि कोई स्वभाव के इस व्यवहार से डरता है, वह बच्चा है. यह, केवल स्वभाव का व्यवहार नहीं है, बल्कि यह वह चीज भी हैं जो स्वभाव के व्यवहार को प्रेरित करता है. यह अवलोकन भी करना कैसे आदमी देवत्व के निकट आता है, और उसका कौन-सा हिस्सा, और कब आदमी का यह हिस्सा इतना आरोही होता है.

कुछ भी उस आदमी से ज्यादा खराब नहीं है जो हर चीज को घुमाता रहता है, और धरती के अंदर घुसकर चीजों को सुंघता रहता है, जैसे की कवि ने कहा है, और अनुमान लगाता रहता है की

www.PDFshala.com

पड़ोसी के दिमाग में क्या है, बिना यह देखे की उसके अंदर क्या चल रहा है, और उसे गंभीरता से लेता है. और उसके अंदर की भावना सनक और विचारहीनता और असंतुष्टि से भरी होती है जो कुछ भी उसे देवताओं और आदमी से मिलता है. उन चीजों के लिए भी जो देवताओं ने हमें श्रेष्ठता से दी हैं; और जो आदमियों ने भी हमारे संबंधी होने के कारण दी हैं; और कभी-कभी, उस तरह से, वह बड़े अफसोस से आदमी के अच्छे या बुरे कारण को न जानने का कारण बनते हैं; यह कमी उससे कम नहीं है जो हमें वंचित करती हैं काले और सफेद में भेद करने से.

हो सकता है की तुम तीन हजार साल तक जीने जा रहे हो, और अनेक बार दस हजार साल, तब भी याद रहे कोई भी आदमी उतनी जिंदगी नहीं खोता है जितनी की वह अभी जी रहा है, और न ही जिसे अभी वह खो रहा है उसके अतिरिक्त किसी दूसरी को जी सकता है. लंबी और छोटी तब एक सी ही हैं. क्योंकि वर्तमान सभी में एक जैसा है, जब की हो सकता है जो बीत चुकी है वह एक जैसी न हो; और इसलिए जो बीत चुकी है वह केवल एक पल है. क्योंकि आदमी न तो भूत न ही भविष्य को जी सकता है; जो आदमी के पास नहीं है, उसे कोई कैसे ले सकता है? इन दो चीजों को तब अपने दिमाग में रखो; पहली, सभी चीजें अनंत काल से एक जैसी हैं और बार-बार आती हैं, और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता की आदमी देख सके एक ही चीज को सौ साल में या दो सौ साल में, या अनंत काल में; और दूसरी, जो लंबे समय तक जीए या जो जल्दी मर जाए एक ही तरह से खोते हैं. क्योंकि वर्तमान ही एक ऐसी चीज है जिससे आदमी वंचित रह सकता है, यदि यह सही है की यही एक चीज है जो उसके पास है, और आदमी उसे नहीं खो सकता जो उसके पास नहीं है.

याद रखें सभी कुछ दृष्टिकोण है. क्योंकि जो मोनीमुस ने कहा है वह घोषणा पत्र है: और घोषणा भी काम कि है जो कहता था, यह काफी दूर तक सत्य है की आदमी वह पाता है जिसे पाया जा सकता है.

आदमी की आत्मा खुद से अत्याचार करती है, सबसे पहले, वह घाव बनती है. जो कुछ भी होता है उससे हमें और प्रकृति को अलग करती है, उन हिस्सों से भी जिससे की सभी चीजों की प्रकृति एक दूसरे से बंधी हैं. दूसरे स्थान पर, आत्मा खुद से अत्याचार करती है जब वह किसी आदमी से मुंह मोड़ लेती है, या उसकी तरफ नुकसान करने के उद्देश्य से मुड़ती है, ऐसी उन लोगों की आत्मा होती है जो गुस्सा में होते हैं. तीसरे स्थान पर, आत्मा खुद से अत्याचार करती है जब वह आनंद या दर्द से वशीभूत होती है, चौथा, जब वह भागीदारी लेती है, वह कुछ जो गंभीर और सत्य नहीं होता है उसे करती या कहती है. पांचवां जब वह अपने खुद के किसी कृत्य को और किसी कदम को बिना लक्ष्य के अनुमति देती है, और बिना विचार किए कुछ करती है और बिना विचार किए क्या यह है, यह सही है कि छोटी सी भी चीज जो कि जाती है वह अंत का कारण बनती है; और तर्कसंगत प्राणी का अंत है उसका अनुसरण बिना विचार किए करना जो कि लंबे समय से गलत चला आ रहा है.

मानव के जीवन में समय एक बिंदु है, और पदार्थ एक प्रवाह में है, और अनुभूति सुस्ती में है, और

www.PDFshala.com

शरीर की संरचना सड़ने का विषय है, और आत्मा छोड़ने को तैयार, और भविष्य देवताओं के हाथ में है, और किसी चीज की कीर्ति निर्णय से परे. और यदि एक शब्द में कहें, जो कुछ भी शरीर का है वह एक प्रवाह है, और जो आत्मा का है वह एक सपना और कल्पना है, और जीवन एक युद्ध और अंजान ठहराव, और प्रसिद्धि एक विस्मृति है. तब क्या है जो मनुष्य का आचरण हो? एक चीज और केवल एक चीज, दर्शन. बल्कि यह आदमी के अंदर की भावना को हिंसा से मुक्त और क्षति से दूर रखता है, दर्द और आनंद से ऊपर, कुछ भी बिना उद्देश्य के न करना, और न ही झूठ और पाखंड के साथ, दूसरे के करने पर या न करने पर किसी तरह से परेशान होने की अनुभूति नहीं; और इसके अतिरिक्त, स्वीकार करना जो कुछ भी हो रहा है, और जो कुछ आवंटित हो रहा है, कहीं से भी आ रहा है, कभी भी वह हो, कहीं से भी वह खुद आए; और, अंततः मृत्यु का इंतजार करना प्रसन्नता के साथ, जैसे कुछ भी न हो इसके अलावा कि तत्वों का विघटन हो रहा है, जिससे हर जीवित प्राणी बना है. जब कुछ भी तत्व के लिए नुकसानदायक नहीं है जब वह निरंतर एक से दूसरे में बदल रहा है, क्यों आदमी को आशंका है सभी तत्वों के बदलने और विघटन को लेकर? क्योंकि यह प्रकृति के अनुसार है, और कुछ भी गलत नहीं है जो कि प्रकृति के अनुसार है.

यह कार्नुटम में.

www.PDFshala.com

अध्याय- 3

हमें न केवल इस पर विचार करना चाहिए की हम अपने जीवन को रोजाना बर्बाद कर रहे हैं और उसका थोड़ा-सा हिस्सा ही बचा है, बल्कि दूसरी चीज को भी संज्ञान में लेकर आना चाहिए, कि यदि आदमी ज्यादा समय तक जीता है, यह काफी अनिश्चित है की उसकी समझ अभी भी चीजों को समझने के लिए काफी होगी, और चिंतन की ताकत को बनाए रखेगी जो उस ज्ञान को पा सके जो देवता और मानव को जान सके. क्योंकि यदि वह बुढ़ापे, काम और पोषण और कल्पना और भूख के चक्कर में पड़ गया, और जो कुछ भी इस तरह का हो, उसे इससे निकलने नहीं देंगी; लेकिन अपने सदुपयोग की ताकत, और अपने कर्तव्यों का पालन करना, और सभी तरह के दिखावे से अपने को अलग करना, और विचार करना की आदमी को अब जीवन से विदा लेनी चाहिए, और इसी तरह का कुछ कारण जो पूर्णरूप से अनुशासित उद्देश्य चाहता हो, यह सभी कुछ खुद से बुझ जाएगा. हमें तब जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए, केवल इसलिए नहीं क्योंकि हम रोज मृत्यु के निकट जा रहे हैं, बल्कि इसलिए भी चीजों की शुरूआत और उनकी समझ पहले रुकें.

हमें यह भी अवलोकन करना चाहिए की कारण जो कि कारण के फलस्वरूप उत्पन्न होते हैं जो कि प्रकृति के अनुसार कुछ मनभावन और आकर्षक पैदा करते हैं. उदाहरण के लिए, जब रोटी को सेंका जाता है कुछ हिस्से सतह पर उभरते हैं, जो खुलते हैं, और रोटी बनाने वाले को सुंदर तरीके से, कुछ बेहतर करने को उत्साहित करते हैं, और खाने के लिए इच्छा को अजीब तरह से जगाते हैं. और एक बार फिर, अंजीर, जब पक जाते हैं, खिल जाते हैं; और पकने पर यह सड़ने से पहले अजीब तरह की फल को सुंदरता देते हैं. और मक्के की बालियां और मांस के टुकड़े, और ऐसा ही कुछ जो जंगली सुअर के मुंह से गिर रहा हो, और बहुत-सी चीजें.- जबकि यह सुंदरता से काफी दूर होती हैं, यदि आदमी इनका पृथक रूप से प्रशिक्षण करे- तब भी, क्योंकि यह परिणाम है उन चीजों का जो प्रकृति द्वारा सृजित की गई हैं, संवरने में उनकी मदद की गई है, और यह बुद्धि में चाहना पैदा करती हैं; इसलिए यदि आदमी में संवेदना और गहरी समझ हो कारण को लेकर जो कि प्रकृति में उत्पन्न होता है, तब शायद ही कोई हो जो कारण के रास्ते का अनुसरण करे जो उसे नहीं दिखता इस तरह से उसे आनंद दे सकता है. और इस तरह से वह जंगली जानवरों के वास्तविक खूनी जबड़ों को कम आनंद से नहीं देखेगा जिन्हें चित्रकार या मूर्तिकार कल्पना से बनाते हैं; और वृद्ध आदमी और वृद्ध औरत में वह सुनिश्चित ही परिपक्वता और सुंदरता को देखेगा; और युवा व्यक्ति की आकर्षक सुंदरता में वह पवित्रता को देख सकेगा; और अनेक चीजें उसके सामने जो खुद को प्रस्तुत करेंगी, वह हर आदमी के मन को न भाएं, बल्कि केवल उसको जो कि वास्तव में प्रकृति और उसके कृत्यों से परिचित है.

www.PDFshala.com

हैपोक्रटस अपने को अनेक रोगों से ठीक करने के बाद बीमार पड़े और मर गए. चाल्डिए ने अनेक कि मृत्यु के बारे में बताया, और फिर उनके भाग्य ने उन्हें भी पकड़ा. सिकंदर, और पोम्मिउस, और कैस्ज सिज़र, ने अनेकों बार पूरे के पूरे शहरों को नष्ट कर दिया, लड़ाई में हजारों लोगों मौत के मौत के घाट उतार दिया, वह भी अंत में जीवन से वंचित हुए. हेराक्लीटस, जिन्होंने ब्रह्मांड की संरचना पर अनेक अटकलें लगाई वह पानी में डूबे और दलदल में फंस कर मारे गए. एक झूठ ने डेमोक्रिटस को नष्ट कर दिया; और दूसरे ने सुकरात को मार दिया. इसका क्या मतलब हैं? तुम जाग्रत हो, तुम यात्रा पर निकलो, तुम पड़ाव के पास होगे; बाहर निकलो. यदि दूसरे जीवन की चाह नहीं, तब वहाँ देवताओं की जरूरत नहीं. परंतु यदि सनसनी के बिना जीना है, तो दर्द और आनंद की अनुभूति से दूर रहो, और इच्छाओं के गुलाम होने पर, जो काफी तुच्छ हैं उससे जो श्रेष्ठ कर्म करता है: क्योंकि एक बुद्धिमान और देवता है; दूसरा मिट्टी और भ्रष्ट.

दूसरों के बारे में सोच कर अपने बाकी के जीवन को नष्ट नहीं करो, जब तक की वह दोनों के हित की चीज न हो. क्योंकि तुम काम को करने का अवसर खो देते हो जब तुम ऐसी चीजों को सोचते हो, वह व्यक्ति क्या कर रहा है, और क्यों, और क्या वह कह रहा है, और क्या वह सोच रहा है, और क्या वह योजना बना रहा है, और जो कुछ भी इस तरह का हो वह हमें हमारी खुद पर शासन करे वाली ताकत से दूर ले जाता है. हमें तब अपने सोचने की श्रृंखला पर नियंत्रण रखना चाहिए हर चीज जो बिना उद्देश्य के हो या किसी काम की न हो, बल्कि सभी तरह की अत्यधिक जिज्ञासु और घातक भावनाएं; और आदमी को अपना इस्तेमाल करना चाहिए केवल उन चीजों के बारे में सोचने में जिन्हें यदि कोई यकायक पूछे, क्या वह अभी सोच रहा है? पूरी तरह से खुल कर तुम तत्काल जवाब दे सको, यह या वह; जिससे की वह शब्दों में सरल हो जिसमें हर चीज उदार और सहज हो, और जो सामाजिक प्राणी के हित में हो, और जो बिलकुल भी आनंद देने वाले और कामुक मनोरंजन के बारे में न सोचे और न ही प्रतिद्वंद्विता या ईर्ष्या और संदेह, या कुछ चीज और जिसके लिए तुम्हें शर्माना पड़े जब वह तुम्हारे दिमाग में हों. वह व्यक्ति जो ऐसा है, वह और देर नहीं करेगा श्रेष्ठ बनने में, जैसे देवताओं का मंत्री या पुरोहित. ऐसा करके देवता जो उसके अंदर स्थापित हो चुके हैं, जो कि आदमी को आनंद से दोष रहित, दर्द से हानि रहित, अपमान से अछूता, बुरा न सोचना, कुलीन लड़ाई में योद्धा, वह भावावेश से उत्तेजित नहीं होता, न्याय से गहरा रंगा हुआ, अपनी आत्मा से वह सभी कुछ स्वीकार करना जो कुछ भी घटता है और उसके हिस्से में सौंपा गया है; और जो न ही महान आवश्यकता से, और आम इच्छा से, कल्पना करते हैं की क्या दूसरे कहते हैं, या करते हैं या सोचते हैं. वह जो कुछ भी खुद उनका है उसे अपनी गतिविधि का हिस्सा बनाते हैं; और वह निरंतर सोचते हैं उसके बारे में जो उन्हें सभी चीजों में से आवंटित किया गया है, और वह अपने कृत्यों को न्यायसंगत रखते हैं, और वह अपने हिस्से को बेहतर रखने को राज़ी रहते हैं. बहुत कुछ जो आदमी को आवंटित किया जाता है वह उसके साथ जुड़ जाता है और वह उसे अपने साथ जोड़ लेता है. और वह याद रखे की हर तर्कसंगत प्राणी उसका संबंधी है, और ध्यान रखना सभी आदमियों का आदमी के स्वभाव के अनुसार; और आदमी को सभी की राय के अनुसार नहीं बने रहना चाहिए, बल्कि उनके अनुसार जो प्रकृति के अनुसार रहना स्वीकार करते हैं. परंतु वह जो इस तरह से नहीं रहते हैं, वह हमेशा अपने दिमाग में रखे की किस तरह के आदमी वे घर में और घर से बाहर होंगे, रात और दिन दोनों में, और क्या

www.PDFshala.com

वह हैं, और किस तरह के आदमियों के साथ वह अशुद्ध जीवन जीते हैं. तदनुसार, वह उन स्तुतियों की तरफ ध्यान नहीं देता है जो ऐसे आदमी से आती हैं, क्योंकि वह खुद अपने से संतुष्ट नहीं होते हैं.

मेहनत करते हुए या अनिच्छा से, और न ही आम हित के उद्देश्य से, और न ही पूर्ण विचार करके, और न ही व्याकुलता से; और न ही अलंकृत विचार आपकी सोच को बंद कर दें, और न ही आदमी हों अनेक शब्दों के, या व्यस्त हो अनेक चीजों में. और आगे देवता जो जीवित प्राणियों में युवा और वृद्ध होने पर, और राजनीतिक मसलों में उनके अभिभावक हों, और शासक जो उनके पद को ले लेता है उस आदमी की तरह जो संकेत का इंतजार कर रहा है जो उससे उसके जीवन का आवाहना करता है, और चलने के लिए तैयार है, जिसे किसी शपथ की या मानवीय गवाही की जरूरत नहीं है. प्रसन्न रहो, और न बाहरी मदद की, और न ही प्रशांति की आशा करो जो दूसरे देते हैं. आदमी तब खुद से सीधे खड़ा रहता है, न कि दूसरों की मदद से खड़ा होता है.

यदि तुम मानव के जीवन में कुछ भी न्याय, सत्य, संयम, धैर्य, और, एक शब्द में, कुछ भी इससे बेहतर कि तुम्हारी बुद्धि खुद से संतुष्ट हो चीजों में जिन्हें वह सही कारण से करना चाहती हो, और इस शर्त पर की जो तुम्हें सौंपा गया है वह उनका चयन न हो; यदि, मैं कहूँ, तुम देखते हो कुछ भी ऐसा जो इससे बेहतर हो, उसकी तरह अपनी आत्मा को झुकाओ, और आनंद लो उसका जो तुम सबसे श्रेष्ठ पाते हो. परंतु यदि तुम्हें कुछ भी देवत्व से बेहतर नहीं प्रकट होता जो कि उसमें स्थापित हो, तब सारी भूख को खुद से नियंत्रण करो, और सावधानी से प्रभावों का अध्ययन करो, और, जैसे सुकरात ने कहा, संवेदनाओं की आस्था से खुद को अलग किया, और अपने को देवताओं को समर्पित किया, और मानवता की परवाह की; यदि तुम पाओ सभी चीजें इससे भी छोटी और कम मूल्यों की, किसी को भी जगह न दो, क्योंकि यदि एक बार भी तुम इसकी तरफ मुड़ गए और इसकी तरफ झुक गए, तब तुम आगे बिना व्याकुलता के अच्छी चीजों को प्राथमिकता नहीं दे सकोगे जिन पर तुम्हारा अधिकार है और जो तुम्हारे पास है; क्योंकि यह सही नहीं है कुछ भी दूसरी तरह की चीज, जैसे अनेक से स्तुति को पाना, या ताकत को, या आनंद का सुख, प्रतिद्वंद्वी बने उसके जो कि तर्क से और राजनीतिक या व्यवहारिक रुप से सही है. यह सभी चीजें, यद्यपि अपने को बेहतर चीजों के कुछ अंशों में अनुकूल बना लेती है, एक बार में अधिकार कर लेती हैं, और हमें दूर ले जाती हैं. फिर भी मैं कहूंगा, सरलता और स्वतंत्रता से बेहतर का चयन करो, और उसे पकड़े रखो. तो ठीक है, यदि वह तुम्हारे लिए तर्कसंगत रूप से उपयोगी है, उसे बनाए रखें; परंतु यदि यह केवल तुम्हारे लिए जानवर के रूप में उपयोगी है, ऐसा कहें, और बनाए रखें अपने निर्णय को बिना अक्खड़पन के: केवल इसका ध्यान रखें की जांच परख सुनिश्चित तरीके से की जाए.

किसी भी चीज को अपने लिए फायदेमंद नहीं समझो जो आपके संकल्पों को तोड़ने को विवश करे, आत्मसम्मान को खो दो, किसी आदमी से घृणा करो, संदेह करो, अभिशाप दो, पाखंड करो, उस चीज की इच्छा करो जिसके लिए दीवारों और पर्दों की जरूरत हो; उसके लिए जो हर बुद्धिमान चीज और देवताओं को प्राथमिकता देता है और उत्कृष्टता की पूजा करता है, कोई

www.PDFshala.com

दुखद काम नहीं करता है, कराहता नहीं है, एकांत या बहुत ज्यादा साथियों की जरूरत नहीं होती है; और, जो सभी के लिए मुख्य हो, हम बिना मृत्यु का पीछा करे या उससे भागे रह सकते हैं; लेकिन चाहे ज्यादा या कम समय के लिए उसकी आत्मा शरीर में रहे, वह इसकी बिल्कुल चिन्ता नहीं करता है: चाहे उसे तत्काल प्रस्थान करना हो, वह तैयार रहता है जैसे वह कुछ भी करने जा रहा हो जो शालीनता और अनुक्रम में हो; इस बात का सारी जिंदगी ध्यान रखते हुए, कि उसकी सोच उन चीजों से परे न हो जाए जो कि बुद्धिमान प्राणी और सभ्य समुदाय के पास होती है.

बुद्धि में जो खुद से सेवा करने वाली और शुद्ध हो वह कोई भी भ्रष्ट बात, और न ही अशुद्धता, और न ही पीड़ादायक हार पाता है. और न ही उसका जीवन अधूरा होता है जब भाग्य उससे आगे निकल जाता है, जैसे कोई उस अभिनेता के बारे में कह सकता है जो मंच को नाटक के खत्म होने से पहले छोड़ देता है. इसके अतिरिक्त, उसके अंदर कुछ ऐसा नहीं होता जो गुलाम हो, और न ही प्रभावित, और न ही बुरी तरह बंधा हुआ दूसरी चीजों से, और न ही फिर भी पृथक दूसरी चीजों से, कुछ भी आरोप लगाने को योग्य नहीं, कुछ भी ऐसा नहीं जो छुपने की जगह चाहता हो.

उन विषयों का सम्मान करो जो दृष्टिकोण देती हैं. इन विषयों पर ही यह पूरी तरह निर्भर करता है की उसपर शासन करने वाले हिस्से में कोई दृष्टिकोण जो प्रकृति से अनुचित और तर्कसंगत पशु से सहमत हो अस्तित्व में है. और यह विषय जल्दबाजी में निर्णय, और आदमी से दोस्ती, और देवताओं के आज्ञाकारी होने से स्वतंत्रता देता है.

तब सभी चीजों को फेंक देना, पकड़े रखना केवल कुछ को; और हमेशा अपने दिमाग में रखो की हर आदमी वर्तमान में जीता है, जो कि अविभाज्य है, और बाकी का जीवन या तो भूत है या वह अनिश्चित है. तब वह समय कम है जिसे हर आदमी जीता है, और पृथ्वी का वह हिस्सा भी छोटा है जहाँ वह रहता है; और मरने के बाद की लंबी प्रसिद्धि भी छोटी है, और यदि प्राणी के उत्तराधिकारियों द्वारा निरंतर बनी भी रहती है, तो वह भी शीघ्र मारे जाएंगे, और कौन जानता है न ही वह भी, उससे कम जो काफी पहले मर चुके हैं.

वह मदद जिनका वर्णन किया गया है उसमें इसे भी जोड़ लें: अपने खुद के लिए परिभाषा या विवरण उस चीज का बना लें जो तुम्हारे सामने प्रस्तुत की गई है, जिससे की तुम दूर से देख सको कि किस तरह की यह चीज अपने पदार्थों में, नग्न अवस्था में, खुद अपने में हैं, और फिर उसका उचित नाम खुद को बताओ, और उन चीजों का भी जिससे यह बनी है, और जिनमें यह लुप्त हो जाएगी. कुछ भी बुद्धि के विकास के लिए इससे बेहतर नहीं हो सकता कि हम उचित तर्क के साथ सच्चाई से हर तथ्य को परखें जो भी जीवन में हमारे सामने उपलब्ध होता है, और हमेशा चीजों की तरफ देखें जिससे हम उसी समय देख सकें की किस तरह का यह ब्रह्मांड है, और किस तरह की उपयोगिता हर चीज निष्पादित करती है, और क्या संपूर्ण के संदर्भ में हर चीज की कीमत है, और क्या आदमी के संदर्भ में, जो कि शहर के नागरिक हैं, जिनके लिए शहर के दूसरे लोग एक परिवार की तरह है; क्या हर चीज है, और किससे यह बनी है, और कितना समय यह

www.PDFshala.com

चीज लेगी जिससे यह मेरे पर प्रभाव डाल सके, और किस पुण्य की इसके संदर्भ में मुझे जरूरत होगी, जैसे नम्रता, मर्दानगी, सत्य, निष्ठा, सादगी, संतोष और आराम. इसलिए हर अवसर पर आदमी कहे: यह ईश्वर से प्राप्त हुआ है; और यह नियति के अनुसार है, और संयोग और मौके की तरह; और यह उसी में से है, रिश्तेदार और साथी, जिन्हें हम नहीं जानते फिर भी यह प्रकृति के अनुसार है. परंतु मैं यह जानता हूं; इस कारण से मेरा व्यवहार उनके साथ साहचर्य के प्राकृतिक विधान के अनुसार परोपकार और न्याय के साथ होगा. उसी समय चीजें जो उदासीन होगी मैं प्रत्येक की कीमत परखने की कोशिश करूंगा.

यदि तुम वह करते हो जो तुम्हारे सामने है, सही कारणों का पालन करते हुए गंभीरता, दृढ़ता, शांति, बिना किसी चीज से अपने को विचलित करने देते हुए, बल्कि दैवीय हिस्से को शुद्ध रखते हुए, जैसे कि उसे तुरंत वापस करना है; यदि तुम इसे बनाए रखते हो, कुछ आशा नहीं करते हो, किसी से डरते नहीं हो, बल्कि वर्तमान गतिविधि से प्रकृति के अनुसार संतुष्ट रहते हो, और बहादुरी से भरे सत्य के साथ हर शब्द और आवाज में जो तुम बोलते हो, तुम खुशी के साथ रहोगे. और यहाँ कोई आदमी नहीं है जो तुम्हें इससे रोक सके.

चिकित्सक की तरह जो अपने औजार और चाकू हमेशा तैयार रखता है उस मामलों के लिए जिन्हें उसके कौशल की तुरंत जरूरत होती है, उसी तरह तुम अपने सिद्धांतों को तैयार रखो चीजों को समझने के लिए, जो मानव या देवताओं से संबंधी हों, और हर चीज को करने के लिए, चाहे वह छोटी-सी क्यों न हों, उन बंधनों को याद रखते हुए जो मानव और देवता को एक दूसरे से जोड़ते हैं. क्योंकि वह उन चीजों को जो आदमी से संबंधित हो बिना संज्ञान में लिए देवताओं से बेहतर नहीं कर सकता है; न ही इसका विपरीत.

खतरों में भटके नहीं; और न ही अपनी खुद की यादों को पढ़ें, और न ही प्राचीन रोमन या हेलेन्स को, और किताबों को जिन्हें तुम पुराने समय से पढ़ते हुए आ रहे हो. अंत की तरफ तेजी से उससे पहले पहुंचे, और बेकार आशाओं को एक तरफ फेंक कर, खुद अपनी मदद करें, यह तुम खुद से कर सकते हो, यह तुम्हारी अधिकार में है.

वह नहीं जानते कितनी चीजों को शब्दों से प्रस्तुत किया जाता है, चुराना, बोना, खरीदना, चुप रहना, देखना क्या किया जा सकता है; क्योंकि यह आंखों से प्रभावित नहीं होता है, बल्कि अन्य तरह की दृष्टि से.

शरीर, आत्मा, बुद्धि: शरीर से संवेदना, आत्मा से भूख, बुद्धि से सिद्धांत जुड़े होते हैं. चीजों के प्रस्तुतिकरण से उनके बारे में प्रभावित होना जानवर भी जानते हैं; इच्छित चीजों की चाहना में उनकी तरफ खिचकर जाना जानवर और आदमी दोनों जानते हैं; और उस बुद्धि का होना जो कि निर्देशित कर सके उन चीजों के लिए जो उचित प्रतीक होती है उनमें भी होती है जो देवताओं में विश्वास नहीं करते हैं, और देश को धोखा देते हैं, और गलत कृत्यों को करते हैं जब वह दरवाजों को बंद कर लेते हैं. फिर भी यदि सभी चीजें सभी के लिए समान हैं जिसका मैंने वर्णन किया है,

www.PDFshala.com

वह बचा रहता है जो अच्छे आदमी के लिए ही होता है, खुश रहना और जुड़े रहना उससे जो हो रहा है और उससे जो उसे उसके लिए बुन रहा है; उस देवत्व को अपवित्र न करना जो कि उसके अंदर स्थापित है, और न ही उसे प्रतिबिंब की भीड़ से विचलित करना, बल्कि उसकी शांति को बचाकर रखना, उसका देवताओं की तरह अनुसरण करते हुए, कुछ भी सत्य के विपरीत न कहना, और न कुछ न्याय के विपरीत करना. और यदि सभी आदमी यह अस्वीकार करते हैं की वह सरल, मामूली, और संतुष्ट जीवन जीते हैं, वह न तो इनमें से किसी से गुस्सा होते हैं, और न ही विचलित होते हैं जो उन्हें जीवन के अंत की तरफ लेकर जाता है, जिसके लिए आदमी शुद्ध, शांत, जाने को तैयार, और बिना दबाव के खुद से सामंजस्य बैठाता है.

www.PDFshala.com

अध्याय- 4

वह जो खुद के अंदर शासन करता है, जब वह प्रकृति के अनुरूप होता है, वह उन घटनाक्रमों से काफी प्रभावित होता है जो हो रहे होते हैं, वह अपने को आसानी से हमेशा उनके अनुकूल बना लेता है जो हो रहा होता हैं या सामने होता है. क्योंकि यह कोई सुनिश्चित पदार्थ नहीं चाहता है, बल्कि फिर भी अपने उद्देश्य की तरफ कुछ निश्चित शर्तों पर चलता है; और इस तरह से वह खुद से उन पदार्थों में दब जता है जो उसका विरोध करते हैं, जैसे आग उससे दब जाती है जो उस पर गिरता है, जिससे छोटी ज्योति बुझ जाती है. परंतु जब आग ज्यादा होती है, वह खुद अपने में सक्षम होती उस पदार्थ पर जो उसपर गिराया जाता है, और उसे जला देती है, और भड़कती है जब कुछ भी उसके संपर्क में आता है.

कोई भी काम बिना उद्देश्य के और न ही परिपूर्ण सिद्धांतों का पालन किए बिना किया जाए.

आदमी खुद के लिए भागता है, निर्जन स्थान पर, समुद्र के किनारे, या पहाड़ों पर; और इस तरह की चाहना रखता है की उसे इस तरह की चीजों की जरूरत नहीं है. परंतु यह सभी आदमियों में संकेत है, की यह उनके अधिकार में है की वह अपने को कब खुद में अवकाश ले. तब अपनी खुद की आत्मा के अतिरिक्त कहीं भी बहुत ज्यादा शांति और स्वतंत्रता आदमी नहीं पा सकता है, विशेषतः जब वह उस तरह के विचारों में हो जिनको देखकर वह तुरंत परिपूर्ण प्रशांति को पा सके; मैं स्वीकार करता हूं की प्रशांति तब कुछ नहीं बल्कि मन को अच्छी तरह से नियंत्रण में रखना है. तब खुद को निरंतर आराम दो, और खुद का नवीनीकरण करो; और तुम्हारे सिद्धांत मौलिक और संक्षिप्त हों, जिन्हें जितनी जल्दी दोहराना चाहो, वह आत्मा को पूरी तरह से स्वच्छ करने के लिए काफी हों, और तुम्हें उन चीजों से आजाद करने के लिए जो तुम्हें परेशान कर रही हैं. किस तरह से तुम स्वतंत्र होगे? आदमी की बुराइयों से? अपनी बुद्धि को यह याद दिलाओ, कि तार्किक प्राणी एक दूसरे के लिए अस्तित्व में हैं, और इसे स्वीकार करना न्याय का हिस्सा है, और आदमी गलत बिना मन के करता है; और विचार करो कितनों ने आपस में घृणा करके, संदेह, ईर्ष्या, और लड़कर मृत्यु को पाया है, राख में बदल गए हैं; और अंततः शांत हो गए हैं. – बल्कि खुद असंतुष्ट रहे हैं उससे जो कि ब्रह्मांड ने उन्हें दिया है. इस को सावधानी से याद करो; की या तो वहां संवेदना हैं या पदार्थ, चीजों का अकस्मात होना; या उस तर्क को याद करो जिससे यह सिद्ध हो चुका है, कि संसार एक तरह का राजनीतिक समुदाय है, और वह अंततः शांत हो जाएगा. – परंतु संभवतः सांसारिक चीजें तुमसे अभी भी जुड़ी रहेंगी.- विचार करें तब की मन सांसों से नहीं जुड़ता है, चाहे वह संयमित से या संयम से रहित हों, एक बार जब वह खुद को दूर कर लेता है और अपनी ताकत को जान लेता है, और सोचता है सभी कुछ जो उसने सुना है और

www.PDFshala.com

दर्द और आनंद से सहमत होता है, अंत में शांत हो जाता है.- देखे कैसे जल्दी ही हर चीज भुला दी जाती है, देखें भूत और भविष्य अनंत काल तक वर्तमान समय के दोनों तरफ है, और वाहवाही का खालीपन, और उनमें बदलाव और निर्णय की चाहना जो स्तुति का ढोंग करते हैं, और विचारों की संकीर्णता जिसमें वह घूमता रहता है, और अंत में शांत हो जाता है. जब सारा संसार विषय हो, तब कैसे छोटे से कोने में वह विचरण कर रहे हैं, और कितने कम वह वहां हैं, और किस तरह के लोग वह हैं जो तुम्हारी स्तुति नहीं करेंगे.

तब यह बचा है: खुद की थोड़ी सी आवश्यकताओं में रहना, और उससे ऊपर खुद को न तो विचलित करना और तनाव देना, बल्कि स्वतंत्र होना, और चीजों की तरफ आदमी की तरह से, नागरिक की तरह से, और नश्वर की तरह से देखना. वह चीजें तुम्हारे हाथ में हैं जिनकी तरफ तुम मुड़ सकते हो, वह यह हों, जो कि दो हैं. एक वह चीज है जो आत्मा को नहीं छूती है, क्योंकि वह बाहरी हैं और अचल बनी रहती है; बल्कि हमारी चिन्ता खुद हमारे अंदर की राय से आती है. दूसरी यह कि सभी चीजें, जो तुम देखते हो, जल्द ही बदल जाती हैं और लंबे समय तक वहाँ नहीं रहती हैं; और निरंतर अपने दिमाग में रखो की कितने इस तरह के बदलाव तुमने खुद से देखे हुए हैं. ब्रह्मांड बदलाव है : जीवन एक दृष्टिकोण है.

यदि हमारा बौद्धिक हिस्सा समान है, उद्देश्य भी, उस कारण से की हम तार्किक प्राणी हैं. वह कारण भी समान है जो निर्देशित करता है की क्या करें या क्या न करें; यदि यह भी ऐसा है, तब वहाँ समान विधि भी होगी; यदि यह भी ऐसा है, तब हम साथी नागरिक हैं; यदि यह भी ऐसा है, हम समान राजनीतिक समुदाय के सदस्य होंगे; यदि यह भी ऐसा है, तो संसार एक सुव्यवस्थित राज्य की तरह से होगा. तब किस दूसरे समान राजनीतिक समुदाय को कोई कह सकता है की सारी मानव जाति सदस्य है? और तब, इस समान राजनीतिक समुदाय से हमारी बौद्धिक क्षमता और तर्क करने की क्षमता और कानून के अनुसार शासन करने की क्षमता निखर कर आती है? चूंकि मेरा भौतिक शरीर कुछ निश्चित धरती के तत्वों से बना है, और वह गर्म और पसीने वाला कुछ विशेष स्रोतों से रहता है (क्योंकि कुछ भी ऐसा बाहर नहीं आता जो अंदर नहीं है, और कुछ भी वापस नहीं जाता जिसका अस्तित्व नहीं है) इसलिए बौद्धिक हिस्सा भी किसी श्रोत से आता है.

मृत्यु भी पीढ़ी की तरह से है, प्रकृति का रहस्य; समान तत्वों का मिश्रण, और समान में विघटित होना; और यह कोई ऐसी चीज नहीं है जिसके लिए आदमी शर्म करे, क्योंकि तर्क करने वाले आदमी के स्वभाव के यह प्रतिकूल है, और हमारे संविधान के उद्देश्यों के प्रतिकूल नहीं है.

यह स्वाभाविक है कि यह चीजें उस व्यक्ति द्वार की जाएं, यह जरूरत का मसला है; और यदि आदमी यह नहीं कर सकता है, वह अंजीर के पेड़ को रस देने की अनुमति नहीं देने देगा. फिर भी सभी तरह से वह अपने दिमाग में रखे, की थोड़े समय के बाद दोनों मारे जाएंगे; और जल्द ही उसका नाम भी पीछे नहीं रह जाएगा.

इस राय को बदल दो, और फिर शिकायत का अवसर नहीं रहेगा, “मुझे नुकसान हुआ है.” इस

www.PDFshala.com

शिकायत को दूर कर दो, "मुझे नुकसान हुआ है." और नुकसान दूर हो जाएगा.

कुछ भी आदमी को उतना बदतर नहीं बना सकता जितना की वह खुद को कर सकता है. और कुछ भी आदमी के जीवन को बदतर नहीं कर सकता है, और न ही वह उसे बाहर से या अंदर से नुकसान पहुंचा सकता है. उसका स्वभाव जो कि सार्वभौमिक रूप से उपयोगी है वह उसे यह करने को मजबूर करता है.

विचार करें जो कुछ भी होता है, वह सही होता है, और यदि तुम गंभीरता से अवलोकन करो, तुम इसे ऐसा ही पाओगे. मैं इसे चीजों के होने की श्रृंखला के संदर्भ में नहीं कह रहा हूं, बल्कि उस संदर्भ में जो सत्य है, और जैसे कि यह उसके द्वारा की जा रही हो जो हर चीज को उसका मूल्य निर्धारित करते हैं. अवलोकन करें तब तुमने शुरूआत कर दी है; और जो कुछ भी तुम करते हो, उसे इसके संयोजन से करें, एक अच्छा आदमी बन कर, और इस संवेदना के साथ की आदमी को उचित रुप से अच्छा माना जाए. इसे हर कृत्य में बनाए रखें.

चीजों के बारे में उस तरह की राय न रखें जैसे जिसके पास यह है वह गलत करेगा, या वह इसकी चाहना रखता है, बल्कि उनकी तरफ उस तरह से देखो जैसे वह वास्तव में हैं.

आदमी को इन दो नियमों के साथ तैयार रहना चाहिए; पहला, केवल वह करो जो आदमी के लिए उपयोगी है जो शासन करने का कारण और विधिक संकाय सुझाव देता है; दूसरा, उनकी राय को बदलना, यदि कुछ हाथ में है जो चीजों को सही कर सके और अन्य सुझावों से दूर ले जा सके. परंतु सुझावों में यह बदलाव केवल निश्चित अनुनय से आ सकते हैं, कि क्या न्यायसंगत है या आम हित का है, और उसी के समान, केवल इस लिए नहीं कि वह सुखद प्रतीक होता है या प्रतिष्ठा को लेकर आता है.

क्या आपके पास उद्देश्य हैं? मेरे पास है- तब मैं इसका इस्तेमाल क्यों नहीं करता हूँ? क्योंकि यदि यह अपना खुद का काम करता है, तब तुम और क्या चाहते हो?

वह जो हिस्सा बनकर अस्तित्व में है. वह उसमें ओझल हो जाएगा जो उसे तैयार करता है; बल्कि वह उसमें रूपांतरित होकर फलदायक सिद्धांत के रूप में वापस मिलेगा.

अनेक एक ही वेदी पर सुगंध को पाते हैं; कुछ पहले, और कुछ बाद में; परंतु इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता है.

दस दिन के अंदर तुमको उनमें देवता दिखने लग जाएंगे जो अभी तुम्हें बंदर या जंगली दिख रहे हैं, यदि तुम सिद्धांतों पर वापस आ जाओ और उद्देश्य के लिए पुजा करो.

ऐसे व्यवहार नहीं करो की तुम्हें दस हजार साल तक रहना है. मृत्यु कभी भी आ सकती है. जब

www.PDFshala.com

तक तुम जीवित रहो, यह तुम्हारे अधिकार में है की अच्छे बने रहो.

वह कितनी परेशानियों से बच जाता है जो इस पर ध्यान नहीं देता की उसका पड़ोसी क्या कहता है, या सोचता है या करता है, बल्कि केवल उस पर जो वह खुद से करता है, वह जो न्यायसंगत और शुद्ध हो; या जैसे एगेथोन कहते हैं, दूसरों के भ्रष्ट आचरण की तरफ न देखो, बल्कि सीधी रेखा में चलते रहो बिना उससे विचलित हुए.

जिसमें मरने के बाद के लिए भी प्रसिद्धि अर्जित करने की प्रबल इच्छा है वह यह विचार नहीं करता है की जो उसे याद रखेंगे वह भी जल्द ही मारे जाएंगे; उसके बाद वह भी जो उनकी जगह आएंगे, जब तक की सारी यादें खत्म न हो जाएं जैसे कि वह प्रेषित होती है उस आदमी से जो मूर्खतावश स्वीकार करता है और स्तुति करता है. परंतु कल्पन करो जो याद रखें वह अमर रहें, और उनकी याद भी अमर रहे, तब भी वह उनके लिए क्या होगी? और मैं यह कहता हूँ की क्या मृत्यु के लिए है, बल्कि क्या जीवित के लिए है? स्तुति क्या है इसके अतिरिक्त की उसका कुछ उपयोग है? इसलिए तुम स्वभाव के इस उपहार को, किसी और को पकड़ा कर अस्वीकार कर दो.

कोई भी चीज जो किसी तरह से सुंदर है वह खुद में सुंदर है, उसका कोई हिस्सा अपने लिए स्तुति नहीं चाहता है. न तो इससे खराब और न ही कुछ इससे बेहतर स्तुति से हो सकता है. मैं इसे उन चीजों के लिए भी सुनिश्चित करता हूं जिन्हें अशिष्ट द्वारा भी सुन्दर कहा जाता है, उदाहरण के लिए, भौतिक चीजें और कलाकार के काम. वह जो वास्तव में सुंदर हैं उन्हें किसी की जरूरत नहीं हैं; कानून की नहीं, सत्य की नहीं, परोपकार या विनम्रता की नहीं. इन में से कौन-सी चीज सुंदर है क्योंकि इसकी स्तुति की जाती है, या दोष देकर खराब कर दी जाती हैं? क्या कोई चीज जो कि पन्ना है वह उससे बदतर कर दी जाती है जितनी की वह थी, यदि उसकी स्तुति नहीं की जाती हैं? चाहे वह सोना, हाथी दाँत, वीणा, छोटा चाकू, एक फूल, एक झाड़ी ही क्यों न हो?

यदि आत्मा निरंतर अस्तित्व में हैं, तब कैसे वायु उन्हें अनंतकाल से धारण किए हुए हैं? – बल्कि कैसे पृथ्वी उन लोगों के शरीर को धारण किए हुए है जो कि लंबे समय पहले मर चुके हैं? क्योंकि कुछ समय के बाद शरीर का विघटन होने लगता है, चाहे कैसा भी वह हों, और उनका विघटन अन्य शरीरों के लिए जगह बनाता है; इसी तरह से आत्मा कुछ समय तक वायु में बने रहने के बाद विघटित हो जाती है और ब्रह्मांड में समा जाती है, जिससे की वह नई आत्म को स्थान दे सके जो अस्तित्व में आना चाहती है. और यह वह जवाब है जो आदमी आत्म की परिकल्पना के लिए दे सकता है जो निरंतर अस्तित्व में रहती है. बल्कि हम न केवल उन शरीरों के बारे में सोचें जो मारे जा चुके हैं, बल्कि उन जानवरों के बारे में भी जो कि दूसरे जानवरों द्वारा और हमारे द्वारा रोज खाए जाते हैं. कितनी संख्या खप जाती है, और अनेक मारे जाते हैं जो उन पर निर्भर होते हैं! और फिर भी यह धरती उन्हें ग्रहण करती है उस कारण से कि वह बदल सके इन शरीरों को खून में, और रूपांतरण कर सके जीवित प्राणियों या ज्वलंत तत्वों में.

इस मसलें की खोजबीन में सत्य क्या हैं? एक विभाजन जो कि पदार्थ है और वह जो एक आकार

www.PDFshala.com

ले लेता है?

चक्कर न लगाएं, बल्कि हर पल न्याय के लिए सम्मान हो, और प्रभावित करने के हर अवसर पर समझ को बनाए रखें.

हर चीज मेरे सामंजस्य में है, जो ब्रह्मांड के सामंजस्य में है. कुछ भी मेरे लिए बहुत जल्दी या बहुत देर से है, जो उनके लिए उचित समय है. हर चीज मेरे लिए फल है जो मौसम मेरे लिए लेकर आता है, हे प्रकृति: क्योंकि उससे ही सभी चीजें हैं, उसमें ही सभी चीजें हैं, उसी को सभी चीजें वापस जाती हैं. यह कवि कहता है, मेरे प्रिय सिरोस शहर; और वह कहा सकता है मेरे प्रिय जियुस शहर?

यदि शांति से रहना चाहते हो, अपने के कुछ ही चीजों से व्यस्त रखो, यह दार्शनिक कहते हैं. बल्कि इस पर विचार करें की यह कहना बेहतर होगा, वह करो जो जरूरी है, और जो प्राणी के लिए स्वाभाविक आवश्यकता के लिए कारण हो, और जैसे उसकी जरूरत हो. क्योंकि शांति केवल तभी नहीं मिलती है जब बेहतर करते हैं, बल्कि जब कम चीजों को करते हैं. क्योंकि जो कुछ भी हम कहते हैं और करते हैं उसका अधिकांश हिस्सा अनावश्यक होता है, यदि आदमी इस रास्ते पर चले, उसके पास ज्यादा स्वतंत्रता और कम बेचैनी होगी. हर अवसर के अनुसार आदमी खुद से पुछे, क्या यह अनावश्यक चीजों में से तो नहीं हैं? इस तरह आदमी न केवल अनावश्यक कृत्यों से दूर होगा, बल्कि अनावश्यक विचारों से, इस तरह जरूरत से ज्यादा काम परेशान नहीं करेंगे.

कोशिश करें कैसे अच्छे आदमी का जीवन तुम्हारे लिए उपयुक्त हो सकता है, उसका जीवन जो अपने हिस्से से संतुष्ट है, अपने न्याय संगत कृत्यों से और उदार स्वभाव से संतुष्ट है.

क्या तुमने उन चीजों को देखा हैं? उनकी तरफ भी देखें परंतु खुद को परेशान न करें. अपने स्वयं को सरल बनाएं. यदि कोई गलत करता है? वह खुद से भुगतेगा कि उसने क्या गलत किया. क्या कुछ उसके साथ हो गया है? बहुत अच्छा; ब्रह्मांड का हिस्सा होने के कारण वह उसके ताने बाने में बंधा है. दूसरे शब्दों में, जीवन छोटा है. अपने को उचित कारण और न्याय की मदद से वर्तमान में बनाए रखें. आराम के साथ शांत रहें.

चाहे यह ब्रह्मांड व्यवस्थित हो या अशांत, तब भी यह ब्रह्मांड है. तब क्या निश्चित व्यवस्था उसमें बनी रहे, और अव्यवस्था सभी में? और यह तब भी जब सभी चीजें इतनी अलग-अलग और बिखरी हुई और सहानुभूति पूर्ण हों. एक स्याह चरित्र, जिद्दी चरित्र, वहशी, जानवर, मूर्ख, नकली, अपमानजनक, धोखेबाज, निरंकुश.

वह जो ब्रह्मांड से अंजान है यह नहीं जानता क्या उसके अंदर है, उससे ज्यादा अंजान नहीं जो यह नहीं जानता क्या उसमें चल रहा है. वह भगोड़ा है, जो सामाजिक कारण से भाग खड़ा हुआ है;

www.PDFshala.com

वह अंधा है, जिसने कुछ न समझने के लिए आंखें बंद कर ली हैं; वह गरीब है, जिसे दूसरे की जरूरत है, और जिसके पास अपना कुछ भी नहीं है जो कि जीवन के लिए जरूरी है. वह एक घाव है जिसने अपने को चीजें जो हो रही हैं उनसे नाखुश होकर प्रकृति के आम उद्देश्यों से अलग कर लिया है, क्योंकि उसी प्रकृति ने यह पैदा किया है और उसी ने उसे पैदा किया है: वह राज्य का अलग-थलग हुआ हिस्सा है, जिसने अपनी आत्मा को रोष से तर्कसंगत प्राणी से पृथक कर लिया है, जो कि वह है.

एक दार्शनिक है बिना कपड़ों के, और दूसरा बिना किताब के; और अन्य आधा नंगा: मेरे पास रोटी नहीं है, वह कहता है, और मैं कारण को लेकर जीता हूँ. और जो मैंने सीखा है उससे मुझे जीने का उद्देश्य नहीं मिलता है, और मैं खुद के उद्देश्य को लेकर जीता हूँ.

खुद से प्यार करें, चाहे कितने भी गरीब हों, जिसे तुम सीखो और उससे सहमत रहो; और बाकी के जीवन को उस तरह से बिताओ जो देवताओं पर विश्वास करता है, अपने को न तो निरंकुश और न ही किसी आदमी का गुलाम बनाते हुए.

वेस्पेसियन के समय से विचार करो. तुम लोगों में सभी चीजों को देखते हो, शादी, बच्चों का पालना, बीमारी, मरना, लड़ना, खाना, तस्करी, खेती, चापलूसी, पूर्णतः अभिमानी, शक्की, साजिश रचने वाले, दूसरों के लिए मृत्यु को चाहने वाले, वर्तमान को लेकर जुआ खेलने वाले, धन का ढेर लगाने वाले, पद की चाहत, राजसी ताकत. तब बहुत अच्छा, लोगों का यह जीवन बहुत समय तक अस्तित्व में नहीं रहता है. फिर से, तब इस समय को हटा दो. फिर से, सभी कुछ समान होगा. उनका जीवन भी समाप्त हो जाएगा, इसी तरह से समय के अन्य कालों को और संपूर्ण राष्ट्रों को देखें, और देखें कैसे अनेक महान प्रयास शीघ्र नष्ट हो जाते हैं और तत्वों में विघटित हो जाते हैं. बल्कि मुख्यतः तुमको उनके बारे में सोचना चाहिए जो खुद से खुद का ध्यान भंग निष्क्रिय चीजों के लिए करते हैं, उसकी उपेक्षा करते हैं जो कि उनके स्वभाव के अनुकूल है, और इसे मजबूती से पकड़ कर रखते हैं और इससे सहमत रहते हैं और यहां यह याद रखना जरूरी है हर जिस चीज पर ध्यान दिया जा रहा है उसका उचित मूल्य और अनुपात हो. तब तुम्हें असंतुष्ट नहीं होना चाहिए, यदि तुम अपने को छोटे मसलों में लगाते हो जो तुम्हारे अनुकूल नहीं होते हैं.

शब्द जिनसे कभी परिचित हुआ करते थे अब वह भूला दिए गए हैं: और नाम जो कभी मशहूर होते थे, अब भूले जा चुके हैं, कमीलस, सेसो, वोलसीस, लियनेटस, और उसके थोड़ा बाद सीपियो, और किटो भी, फिर आगस्तस, फिर हिडिया और ऐनटोनियस भी. जो चीज बीत चुकी होती हैं और एक किस्सा बन जाती हैं, और फिर पूरी तरह से भूला दी जाती हैं. और मैं इसे उनके लिए भी कहता हूं जिन्होंने अपने लिए शानदार मकबरे बनवाए. और बाकी के लिए भी जैसे ही उन्होंने अपनी साँस छोड़ी, कोई आदमी उनके बारे में बात नहीं करता है. और सार यह है की अविनाशी भी याद नहीं रखे जाते हैं? जैसे वह कुछ नहीं थे. तब हम किस चीज के लिए अपनी गंभीरता को दिखाएं? केवल इसी एक चीज के लिए कि न्याय संगत रहें, और सही कृत्य करें और वह शब्द कहें जो कभी असत्य न हो, और स्वभाव जो तैयार रहे जो कुछ भी हो रहा है उसे

www.PDFshala.com

स्वीकार करने को, अमूमन, जैसे वह एक ही स्रोत और सिद्धांत से प्रवाहित हो रहा है. अपने विश्वास को विश्वास की देवी क्लोथो को समर्पित कर दो, उन्हें अनुमति दो की वह तारों को खींचे उसी तरह से जैसे वह चाहें.

हर चीज केवल एक दिन के लिए होती है, दोनों वह जो याद रखती है और वह जो याद रखी जाती हैं.

निरंतर अवलोकन करें की हर चीज बदलाव के बाद ही अस्तित्व में आती है, और अपने को अनुरूप बनाएं इस पर ध्यान देने के लिए कि ब्रह्मांड की प्रकृति सबसे ज्यादा जिसे चाहती है वह चीजों को बदलना है उससे जैसी वह हैं और उनकी तरह से नई चीजों को बनाना है. हर चीज जिसका अस्तित्व है एक तरह से बीज है किसी अन्य चीज के भविष्य में होने का. जबकि तुम सोचते हो केवल उस बीज के बारे में जो धरती में या कोख में बोया जाता है; परंतु यह दिग्भ्रम है.

तुम भी जल्दी मारे जाओगे, और कोई अन्य चीज भी इससे परे नहीं है, और न ही संदेह के बिना रहो कि बाहरी चीज चोट नहीं दे सकती है, और न ही सभी के प्रति झुकाव रखो; और न ही अपनी प्रज्ञा को अलग करो कृत्यों के करते समय. आदमी पर शासन करने वाले सिद्धांतों का परीक्षण करो, उनका भी जो ज्ञानी हैं, किस तरह की चीजों से वह बचते हैं, और किस तरह की चीजों को वह आगे बढ़ाते हैं.

क्या तुम में बुराई है की दूसरों के स्थापित सिद्धांतों को स्वीकार नहीं करते हो; किसी भी मोड़ पर और परिवर्तन में. तब वह कहां है? वह तुम्हारे उस हिस्से में हैं जो उस ताकत को स्वीकार करता है जो बुराई के बारे में राय बनाती है. तब यह ताकत इस तरह की राय को न बना सके और सभी कुछ सही होगा. और यदि जो उसके निकट होगा, बेचारा शरीर, वह जल जाएगा, मसलों और सड़न से भर जाएगा, तब कभी भी वह हिस्सा जो इन चीजों को लेकर राय बनाता है शांत रहे, अर्थात, वह परीक्षण करे कि कुछ भी न तो बुरा है या अच्छा है जो समान रूप से बुरे और अच्छे आदमी को हो सकता है. वह जो समान रूप से उसे हो सकता है, जो कि प्रकृति विपरीत रहता है और उसे जो प्रकृति के अनुरूप, वह न तो प्रकृति के अनुरूप है और न ही प्रकृति के विपरीत है.

निरंतर ब्रह्मांड को एक जीवित प्राणी की तरह से देखें, जिसका एक शरीर और एक आत्मा है; और अवलोकन करो सभी चीजों की कैसे एक ही धारणा है, धारणा इस एक जीवित प्राणी की; और कैसे सभी चीजें एक पल में कृत्य करती हैं; और कैसे सभी चीजें सहयोग का कारण हैं जो अस्तित्व में हैं; अवलोकन करो धागे की निरंतर कताई का और जाले के गुथने का.

बदलाव के बारे में अपनी आत्मा को तैयार करो, जैसे इपिकेटुस कहते हैं. इसमें चीजों के लिए कोई बुराई नहीं है की वह बदलाव से गुजरें, और चीजों के लिए अच्छा नहीं हैं की वह बदलाव के परिणाम से परे रहें.

www.PDFshala.com

समय नदी की तरह है जो उन घटनाओं से बना है जो हो चुकीं है, और बहती हुई धारा है; जैसे ही चीजें दिखती हैं उन्हें ले जाया जाता है, और दूसरी उसकी जगह ले लेती है, और फिर उसे भी ले जाया जाता है.

हर वह चीज जो घटित हो चुकी है उससे वाकिफ हैं और गुलाब की तरह बसंत में और फलों की तरह गर्मी में जानी पहचानी है; उसी तरह बीमारी और मौत, और अपयश, और धोखा, और वह कुछ भी जो मूर्खों को खुश करता है और उन्हें चिंतित करता है.

चीजों की श्रृंखला में जो कि अनुगमन करती है वह उनके अनुरूप होती है जो पहले जा चुकी हैं; यह श्रृंखला केवल गणना नहीं है असंबद्ध चीजों की, जिनकी आवश्यक श्रेणी है, बल्कि तर्कसंगत संबंध: और जैसे सभी अस्तित्व की चीजें सम स्वर में व्यवस्थित की जाती है, उसी तरह से चीजें जो अस्तित्व में आती हैं और न केवल उत्तराधिकार का प्रदर्शन करती हैं, बल्कि निश्चित भव्य संबंध का.

हमेशा हेराक्लीटस के शब्दों को याद रखें, धरती की मृत्यु होने पर पानी बनता है, और पानी की मृत्यु होने पर वायु, और वायु की मृत्यु होने पर अग्नि, और इसका विपरीत भी. और उसके बारे में भी सोचो जो भूल जाता है की किस दिशा में वह जा रहा है, और वह आदमी उससे भी लड़ता है जिसके साथ उसका निरंतर संवाद होता है, कारण जो ब्रह्मांड को शासित करते हैं; और चीजें जिनसे वह रोजाना मिलता है वह उसे अजनबी दिखती हैं; और विचार करो की हम उस तरह से न तो कृत्य करें या बोले जैसे हम सो रहे हैं, और नींद में भी हम संयम से हों; और हम उस बच्चे की तरह से न हों जो अपने माता-पिता से सीखता है, कैसे बोलें और कृत्य करें जैसे हमें सिखाया गया है.

यदि कोई देवता तुम से कहता है की तुम कल मारे जाओगे, या परसों निश्चित ही, तुम्हें इसकी ज्यादा चिन्ता नहीं करनी चाहिए की यह कल होगा या परसों, जब तक आप इस उच्च अंश में उत्साह से जीते हो की कितना भी यह अंतर हो? इससे कोई फर्क नहीं पड़ता की आप अनेक सालों के बाद मरें या कल ही.

निरंतर सोचते रहें की कितने चिकित्सक बीमार को ठीक करते हुए मारे गए; और कितने ज्योतिष दूसरों की मृत्यु की व्याख्या करते हुए; और कितने दार्शनिक मृत्यु और अमरता की अनंत बहस करते हुए; कितने वीर हजारों को मारते हुए; और कितने निरंकुश जिन्होंने अपनी ताकत का प्रयोग भयानक बदतमीजी करते हुए किया जैसेकि वह अमर हैं; अनेक शहर अंततः पूरी तरह मृत्यु के आगोश में गए, जिनके बारे में कहा जाता है- हेलिस या पोम्पी और हरक्लीनीयो, और अन्य असंख्यक. इस गणना में जोड़ते जाएं उन सभी को जिन्हें आप एक के बाद एक जानते हैं. एक आदमी दूसरे को जलाने के बाद खुद मृत्यु को प्राप्त होता है, और दूसरे उसे जलाते हैं; और यह सभी थोड़े से समय में होता है. सार यह है, की कितना अल्पकालीन और व्यर्थ मानव शरीर है, कल तक जो बेलगाम था, और कल वह राख में बदल जाएगा. इसलिए इस

www.PDFshala.com

थोड़े से समय को प्रकृति के साथ विनम्रता से गुजारो, जैसेकि अंजीर टपक पड़ता है जब वह पक जाता है, प्रकृति की स्तुति करें जिसने इसका निर्माण किया है, और उसे धन्यवाद दो जिस पर वह उगा है.

उस रास की तरह से बनो जिससे लहरें टकरा कर खत्म हो जाती हैं, परंतु वह स्थिर खड़ा रहता है और अपने चारों तरफ के पानी को वश में रखता है.

मैं दुःखी हूं क्यों यह मेरे साथ हुआ है. ऐसा नहीं है, बल्कि मैं हूँ, क्योंकि यह मेरे साथ हुआ है, क्योंकि मैं दर्द से निरंतर मुक्त रहना चाहता हूँ, न तो वर्तमान से और न ही भविष्य से परास्त होना चाहता हूं. क्योंकि इस तरह की चीज हर आदमी के साथ हो सकती है; परंतु हर दर्द से ऐसे अवसर पर मुक्त नहीं रह जा सकता है. तब क्यों यह दुर्भाग्य है जबकि यह सौभाग्य हो सकता है? और जिन सभी कारणों को तुम आदमी का दुर्भाग्य कहते हो, क्या यह मानव स्वभाव से विचलित होना नहीं है? और क्या चीजें तुम्हें मानव स्वभाव से विचलित होती नहीं दिख रहीं, जब वह मानव स्वभाव की इच्छा के विपरीत नहीं हैं? बहुत अच्छा तब प्रकृति की इच्छा को जानो. क्या तब यह जो हुआ है हमें नहीं रोकता न्याय संगत, उदार, दूरदर्शी होने से, सुरक्षित करता है विचारशून्य राय और झूठ से; क्या यह तुम्हें विनम्र और स्वतंत्र होने से रोकता है, जिसकी उपस्थिति में आदमी की प्रकृति वह पाती है जो खुद उसका है? यह सिद्धांत हर उस अवसर पर याद रखें जब कुछ तुम्हें गुबार की तरफ लेकर जाए: यह दुर्भाग्य नहीं है, बल्कि इसे भले मानस की तरह सहन करना अच्छा सौभाग्य है.

यह अशिष्ट है, परंतु तब भी उपयोगी मदद है मृत्यु की अवमानना करने में, उनकी समीक्षा करने में जो मजबूती से जीवन को पकड़े हुए हैं. क्या उन्होंने उनसे ज्यादा अर्जित कर लिया जो पहले मारे गए? निश्चित ही वे अपनी कब्र में अंततः पड़े हैं, क्डेसिनियस, फेबीयस, ज्यूलिनस, लेपीनस, या कोई भी दूसरा उनकी तरह से, जिनमें से अनेक ने उनको दफन किया, और फिर खुद को दफन कराया. जबकि जन्म और मृत्यु का अंतराल छोटा है; और विचार करो कितनी परेशानी से, और किस तरह के लोगों के साथ रह कर और कितने कमजोर शरीर के साथ यह अंतराल निकल जाता है. तब जीवन को किसी तरह की कीमती चीज न समझो. इससे आगे के समय की विशालता को देखो और जो समय इससे पहले था, दूसरा असीम काल. और इस अनंत में तब क्या अंतर है उसमें जो तीन दिन रहता है और जो तीन पीढ़ी रहता है?

छोटे रास्ते पर चलें; और छोटा रास्ता प्राकृतिक है; इसी तरह से हर चीज जो कहें या करें उसे उचित कारण के साथ करें. क्योंकि ऐसी चीजें आदमी को परेशानी से, लड़ाई से, सभी दिखावट से और चालाकी भरे प्रदर्शन से दूर रखती हैं.

www.PDFshala.com

अध्याय- 5

जब सुबह के समय तुम अनिच्छा से उठते हो, तब यह विचार तुम्हारे सामने हो- मैं मानवता के लिए काम करने के लिए उठ रहा हूँ. तब क्यों में असंतुष्ट रहूं यदि मैं वह चीजें करने जा रहा हूं जिसके लिए मेरा अस्तित्व है और जिसके लिए मुझे इस संसार में लाया गया हैं? या मुझे इसके लिए बनाया गया है की मैं बिस्तर पर पड़ा रहूं और खुद से आराम करता रहूं? – क्या ज्यादा सुखद है.- मैं आनंद से सोता रहूं, और कोई काम या मेहनत नहीं करूं? क्या मैं छोटे पौधों को, छोटे पक्षियों को, चींटियों को, मकड़ी को, मधुमक्खी को काम करते हुए नहीं देखूं जो अपने हिस्से के काम को कर रहे हैं? और क्या मैं अनिच्छा से इंसान के काम करूं, और वह न करने की जल्दबाजी न करूं जो कि प्रकृति के अनुसार हैं? – परंतु आराम करना भी जरूरी है. – यह जरूरी है: परंतु प्रकृति ने इस पर भी बंधन निश्चित किया है: उसने खाने पर और पीने पर भी बंधन निश्चित किया है, और जो इन बंधनों के परे जाता है, उससे परे जो पर्याप्त है; परंतु कृत्यों में ऐसा नहीं है, बल्कि उस पर नियंत्रण रखो जिसे तुम नहीं कर सकते हो. यदि तुम खुद को प्यार नहीं करते, तो तुम प्रकृति को प्यार करो उसकी इच्छा से. बल्कि वह जो अपनी भिन्न कलाओं से प्यार करते हैं, अपने को काम में खपा देते हैं बिना नहाए और बिना भोजन के; बल्कि वह अपने खुद के स्वभाव पर कम ध्यान देते हैं उसकी जगह वह अपनी कला को निखारते रहते हैं, जैसे नाचने वाला नाच को, या पैसे का प्रेमी पैसे को, या कलाकार अपनी कला को. और ऐसे आदमी जब बुरी तरह से चीजों से जुड़ जाते हैं, न तो खाने पर, और न ही सोने पर ध्यान देते हैं बल्कि उन चीजों में प्रवीण बनने में जिनको वह चाहते हैं. परंतु वह काम जो समाज के लिए जरूरी है उनकी निगाह में बेकार के या कम मेहनत के हैं?

कितना आसान है घृणा करने लगें और भूल जाए हर उस प्रभाव को जो परेशान करने वाला हो, या अनुचित हो, तुरंत सभी तरह की शांति के लिए.

हर काम और शब्द को परखो जो तुम्हारी प्रकृति के अनुकूल हो; और दोषारोपण से विचलित न हों जो दूसरे लगाते हैं, बल्कि यदि चीजें करने और कहने के लिए सही है, उन्हें व्यर्थ न समझो. उन लोगों के लिए जिनके अजीब सिद्धांत होते हैं और जो अजीब गतिविधि का अनुपालन करते है; उन चीजों पर तुम ध्यान नहीं दो, बल्कि सीधे चलो, अपने खुद के स्वभाव का और आम प्रकृति का अनुपालन करते हुए; और दोनों का रास्ता एक हो.

मैं उन चीजों के साथ चलता हूं जो प्रकृति के अनुसार होती है जबतक मैं गिर न जाऊं और सांस में उन तत्वों को ग्रहण करता हूं जिन्हें मैं रोज लेता रहा हूं, गिरता हूं उस धरती पर जिससे मेरे

www.PDFshala.com

पिता ने बीज को, और मेरी मां ने खून को और परिचारिका ने दूध को एकत्र किया था; जिससे मैंने अनेक सालो तक भोजन और पानी ग्रहण किया है; जो मुझे तब भी धारण करती है जब मैं उस पर अनेक बार अनेक कारणों से धमकी देता हूं और दुत्कारता हूं.

ऐसा कहा जाता है की आदमी उसकी बुद्धि की सराहना नहीं कर सकता है.- ऐसा ही हो; परंतु यहां अनेक चीजें ऐसी हैं जिसके बारे में तुम नहीं कह सकते हो, की मैं प्रकृति के द्वारा इनके लिए नहीं बना हूं. उन विशेषताओं को तब दिखाओ जो कि तुम्हारे अधिकार में हैं, गंभीरता, भारीपन, श्रम को महत्व, आनंद से बचाना, थोड़ी चीजों से संतुष्ट होना, परोपकार, स्पष्टता, दिखावे से प्यार न होना, छोटापन से आजादी, उदारता. तुम नहीं देख सकते की कितनी विशेषताएं तुम तुरंत प्रदर्शित कर सकते हो, जिसमें किसी भी तरह बहाना कुदरती अक्षमता का और उपयुक्त नहीं होने का नहीं चल सकता है, और फिर भी तुम अपनी क्षमता का प्रदर्शन नहीं करते हो? या खुद से खराब बने रहकर बुदबुदाना चाहते हो, और कंजूस बनना चाहते हो, और चापलूस और गरीब शरीर में दोष खोजना चाहते हो, और आदमी को खुश करना चाहते हो, और भव्य प्रदर्शन करना चाहते हो, और खुद के मन से अशांत रहना चाहते हो? नहीं, देवताओं द्वारा नहीं: बल्कि तुम्हारे जैसे शक्तिवान को यह चीजें काफी समय पहले से दी गई हैं. यदि वास्तव में तुम बदल नहीं सकते हो, समझने में धीमे या सुस्त, तब तुम खुद को इसके लिए भी तैयार करो, इसकी उपेक्षा नहीं करते हुए और न ही खुद की सुस्ती का आनंद लेते हुए.

1rrएक आदमी, जो दूसरों की सेवा करता है, वह अपने खाते में समर्थन को जोड़ने को तैयार रहता है. दूसरा जो वास्तव में यह नहीं कर रहा होता है, परंतु वह अभी भी अपने दिमाग में यह सोचता है की आदमी उसका कर्जदार है, और वह जानता है की उसने क्या किया है. तीसरा यह जानता ही नहीं है उसने क्या किया है, परंतु वह उस अंगूर की बेल की तरह से होता है, जो कुछ नहीं चाहती है इसके अतिरिक्त की वह रसदार फल उत्पन्न करें. जैसेकि घोड़ा जब दौड़ता है, यह कुत्ता जब सुरक्षा करता है, मधुमक्खी जब शहद बनाती है, उसी तरह से जब आदमी जो अच्छे काम करता है, वह दूसरों को नहीं बुलाता कि वे आएं और देखें, बल्कि वह अपने कामों को करता रहता है, जैसे अंगूर की बेल अगले मौसम में फिर से फल देने को तैयार रहती है. आदमी को भी इसी तरह से व्यवहार करना चाहिए बिना इसे निहारे?- हां- परंतु यह चीज जरूरी है, कि निगाह रखें की आदमी क्या कर रहा है; जिसके लिए कहा जा सकता है, यह सामाजिक प्राणी के लिए देखने की जरूरत है की वह समाज के हित में कार्य करें, और यह आशा रखे की उसके सामाजिक हिस्सेदार इसे देखें.- यह सत्य है क्या तुम कहते हो, परंतु तुम इसे अच्छी तरह से नहीं समझते कि क्या अभी कहा गया है: और इस कारण से तुम वह बन जाते हो जिनके बारे में मैं पहले कह चुका हूं, कि वह चाहे किसी कारण से गुमराह हों. परंतु यदि वह यह समझने की कोशिश करते हैं कहने का अर्थ क्या है जो कहा गया है, तब डरें नहीं की इस कारण से कि आप सामाजिक कर्म की अवहेलना करते हैं.

ऐथेंस के नागरिकों की प्रार्थना: वर्षा, वर्षा, हे जियुस, बरसो ऐथेंस के खेतों पर और जमीन पर.

www.PDFshala.com

वास्तव में हमें पूजा करने की कोई जरूरत नहीं, या हमें प्रार्थना सरल और भद्र तरीके से करनी चाहिए.

जैसे कि हमें समझना चाहिए जब यह कहा गया, कि एस्टोलोपियस ने सुझाव दिया की आदमी को घोड़े की तरह से व्यायाम करना चाहिए, या ठंडे पानी से नहाना चाहिए या बिना जूतों के चलना चाहिए; तब हमें यह समझना चाहिए की कब यह कहा गया, क्या ब्रह्मांड की प्रकृति इस आदमी को बीमारी या विकृति या धोखा, या कुछ इस तरह की अन्य चीज का सुझाव दे रही है, क्योंकि पहले मसले में यह सुझाव देना कुछ इसी तरह का है: उन्होंने उस आदमी को सुझाव दिया है जिससे की वह स्वस्थ बना रहे; और दूसरे मसले में इसका मतलब है: जो कुछ भी हर आदमी के साथ होता है, या उसके अनुकूल है, वह उस तरह से निर्धारित है जो उसकी प्रकृति के अनुकूल है. क्योंकि यह वह है जो मेरा मतलब है कि जब हम कहते हैं की चीजें हमारे अनुकूल हैं, जैसे कारीगर दीवार या पिरामिड के चौकोर पत्थर से कहते हैं, की वह अनुकूल हैं, जब वह उन्हें एक दूसरे के साथ जोड़ते हैं. क्योंकि उनके एक साथ होने पर सरसता होती है. और जैसे ब्रह्मांड सभी तरह के शरीरों से बना है जैसे की वह हैं, उसी तरह से सभी मौजूदा कारणों से नियति बनी हुई है जैसेकि वह हैं. और वह भी जो पूरी तरह से अंजान हैं समझ लें जो मेरा मतलब है, क्योंकि वह कहते हैं, यह अवश्य ही नियति द्वारा उस व्यक्ति के लिए निर्धारित किया गया होगा.- इसे तब लाया जाता है और उसके लिए निर्धारित किया जाता है. तब हम उन चीजों को ग्रहण करें, साथ ही उन चीजों को जिनका एस्टोलोपियस निर्धारण करते हैं. अनेक चीजों में उनके निर्धारण से असहमत हो सकते हैं, परंतु हम इसे अच्छे स्वास्थ की आशा के साथ स्वीकार कर लेते हैं. तब चीजों को स्वीकार करना और पाना, जिन्हें आम स्वभाव बेहतर मानता है, उन्हें तुम्हारे द्वारा उसी तरह से सही मानना चाहिए जैसे स्वास्थ के लेकर मान रहे थे. और इसलिए स्वीकार करें जो कुछ भी होता है, चाहे उससे असहमति दिखे, क्योंकि यह होता है ब्रह्मांड की चाहना से, और जियुस (ब्रह्मांड) की समृद्धि के लिए. क्योंकि यह किसी भी आदमी के साथ तब तक नहीं हो सकता है, जब तक वह संपूर्ण के लिए उपयोगी न हो. न ही किसी चीज की प्रकृति, चाहे जैसी भी हो, कुछ कर सकती है जो उसके निर्देश के अनुसार न हो. दो कारणों से तब सहमत होना सही है उससे जो तुम्हारे साथ हो रहा है: पहला, क्योंकि यह तुम्हारे लिए किया जा रहा है, और तुम्हारे लिए निर्धारित है, और उस तरह से की यह तुम्हारे संदर्भ में है, मूलतः बहुत प्राचीन कारण से है जो तुम्हारी नियति से जुड़ा हुआ है; और दूसरा, जो कुछ पृथक रूप से आदमी के पास आता है उस ताकत से आता है जो ब्रह्मांड के परिपूर्ण होने का कारण है, जो उसे निरंतर बनाए रखती है. क्योंकि संपूर्ण की अखंडता विखंडित हो जाएगी, यदि किसी चीज को अलग किया जाता है, जब तक वह उसके अधिकार में है. और यदि तुम अलग होते है, जब तक यह उसके अधिकार में है, जब तुम खुद से असंतुष्ट होते हो, और किसी चीज को अलग करने की कोशिश करते हो.

न तो निराश हो, न हतोत्साही, न असंतुष्ट, यदि आप सभी चीजों को सही सिद्धांतों के अनुरूप नहीं कर पा रहे हो; बल्कि जब तुम असफल हो, फिर से वापस आओ, और संतुष्ट रहो यदि उसका बड़ा हिस्सा मानव की प्रकृति के अनुरूप है, और उसे प्यार करो जो कुछ भी वापस आ रहा है; और दर्शन की तरफ वापस न जाओ जैसे वह तुम्हारी मालिक है, बल्कि उनकी तरह व्यवहार

www.PDFshala.com

करो जिनके पास पीड़ादायक आंखें हैं और जो आप उस पर लेप लगाते हो या पानी की छीटे मारते हो. इस तरह से आप कारण की अवहेलना नहीं करते, और उसके अनुसार प्रक्रिया देते हो. और याद रखें दर्शन को केवल उन्हीं चीजों की जरूरत होती है जिसकी प्रकृति को जरूरत होती है; जबकि तुम्हारे पास वह चीजें भी होती हैं जो कि प्रकृति के अनुरूप नहीं हैं. इस पर आपत्ति हो सकती है, क्यों वह ज्यादा सहमति वाला है उससे जिसे मैं कर रहा हूं? परंतु क्या यह वह कारण नहीं है क्यों खुशी हमें धोखा देती है? और विचार करें यदि उदारता, स्वतंत्रता, सरलता, समभाव, साधुवाद, ज्यादा सहमति भरे नहीं हैं. वह जो खुद प्रज्ञा से ज्यादा सहमति भरा है, जब तुम विचार करते हो बचाव पर और सभी चीजों में खुशी पर जो कि निर्भर होता है समझने और जानने की क्षमता पर?

चीजें इस तरह से आवरण में ढकी होती हैं की वह दार्शनिक दिखती हैं, कुछ कम नहीं और न ही आम दार्शनिक, बल्कि दुर्बोध्य; न ही वैरागी जिन्हें वह खुद समझने में कठिन देखते हैं. और हमारी सभी स्वीकृति बदलने योग्य है; क्योंकि कहां है वह आदमी जो कभी बदलता नहीं है? बदल दे चीजों को लेकर विचारों को, और विचार करें की कितनी कम उम्र के वे हैं और व्यर्थ, और वे नीच, वेश्या या चोरों के कब्जे में हैं. तब उनकी नैतिकता की तरफ देखें जो इसके साथ रहते हैं, और उनकी सहना काफी कठिन है तब भी जब वह उनसे काफी सहमत हों, उस आदमी के लिए कुछ नहीं कहना जो खुद की सहन नहीं कर सकता हो. तब ऐसे अंधकार में और गंदगी में और स्थिरता में पदार्थ और समय दोनों का बदलाव, और चीजें जो चली गई हैं, क्या ऐसा विषय है जो बहुत कीमती हो या जिसके पीछे गंभीरता से लगा जाएं, जिसकी मैं कल्पना नहीं कर सकता हूं. बल्कि इसके विपरीत यह आदमी का कर्तव्य है की अपने को आराम दे, और प्राकृतिक समाधान का इंतजार करे और देरी होने पर झगड़े नहीं, बल्कि केवल इन सिद्धांतों पर टिका रहे; पहला, कुछ भी मेरे साथ नहीं हो सकता है जो कि ब्रह्मांड की प्रकृति के अनुरूप न हो; और दूसरा, यह मेरे अधिकार में है की मैं अपने देवताओं के विपरीत कृत्य न करूं: क्योंकि वहां कोई आदमी नहीं है जो मुझे इसके लिए मजबूर कर सके.

किस चीज के लिए अभी में अपनी आत्मा को व्यस्त रख रहा हूँ? हर एक अवसर पर मैं खुद से यह एक प्रश्न करता हूं, और परीक्षण करता हूं, की क्या मेरे उस हिस्से में चल रहा है जिसे वह शासन के सिद्धांत मानते हैं? और किस की आत्मा अभी मेरे अंदर है? बच्चे की, या युवक की, या कमजोर औरत की, या निरंकुश की, या घरेलू जानवर की, या जंगली जानवर की?

किस तरह की चीजें वह हैं जो अनेक को अच्छी लगती हैं, हम उससे भी सीख सकते हैं. क्योंकि यदि कोई व्यक्ति यह मानता है की कुछ चीज निश्चित ही अच्छी हैं, जैसेकि विवेक, संयम, न्याय, धैर्य, वह पहली कल्पना में इससे सहमत नहीं होना चाहेगा जो कि उससे सद्भाव में नहीं हैं जो वास्तव में अच्छी हैं. बल्कि यदि आदमी कल्पना करता है कि वह अच्छी चीज है जो दूसरों को अच्छी प्रकट होती है, वह सुनेगा और उन्हें उस तरह से ग्रहण करेगा जैसेकि हास्य लेखक द्वारा कही जाती हैं. अतः यदि अनेक भिन्नता को देखते हैं. जहां ऐसा नहीं है, ऐसा कहना अपराध नहीं है, उसे पहली बार में खारिज नहीं कर दिया जाएगा, बल्कि हम उसे ग्रहण करेंगे यदि वह दौलत

www.PDFshala.com

के बारे में कहता है, और उस अर्थ के बारे में जो आगे आराम और प्रसिद्धि दे. तब जाओ और पूछो यदि वह महत्व देते हैं और सोचते हैं उन चीजों को अच्छा, जिनको मन में पहली कल्पना के बाद हास्य लेखक ने उतारा है, जबकि शुद्ध बहुतायत इसको खुद से महत्व नहीं देना चाहती है.

मैं यथा रिती और पदार्थों से बना हूं; और इन में से कुछ भी ऐसा नहीं है जो नष्ट हों उसमें जिसका अस्तित्व न रहा हो, क्योंकि इनमें से कुछ भी अस्तित्व में नहीं उससे जिसका अस्तित्व नहीं रहा हो. मेरा हर हिस्सा विघटित हो जाएगा बदल कर ब्रह्मांड के किसी दूसरे हिस्से में, और फिर वह भी बदल जाएगा ब्रह्मांड के किसी हिस्से में, और इसी तरह से आगे. और इस बदलाव के परिणाम स्वरूप मेरा अस्तित्व है, और उनका भी जो मुझे लेकर आए हैं, और इसी तरह का अन्य दिशाओं में भी है. क्योंकि कुछ भी हमें यह कहने से रोक नहीं सकता है, तब भी जब ब्रह्मांड का संचालन क्रांति के सुनिश्चित कालों के अनुसार होता है.

कारण और कारण को जानने की कला (दर्शन) वह ताकत हैं जो खुद के लिए और खुद के काम के लिए पर्याप्त हैं. वह अपने पहले सिद्धांत का पालन करते हुए आगे बढ़ते हैं, और उस रास्ते पर चलते रहते हैं जो उनको प्रस्तावित किया जाता है; और यही कारण है कि क्यों ऐसे कृत्य को कैथोसिस (सही कृत्यों को उचित तर्कों के साथ करना) या सही कृत्य कहा जाता है, वह शब्द जो इंगित करता है की वे सही रास्ते पर चलें.

इनमें से किसी को भी आदमी का नहीं कहा जा सकता है, जो आदमी से संबंधी न हो, आदमी की तरह. वह आदमी की जरूरत नहीं है, और न ही आदमी का स्वभाव इसका वादा करता है, और न ही वह माध्यम हैं की आदमी की प्रकृति अपने अंत को प्राप्त कर ले. न ही आदमी का अंत इनमें समाहित है, और न ही वह जो इस अंत को पाने में मदद करते हैं जो कि अच्छा है. इसके अतिरिक्त, यदि इनमें से कोई भी चीज आदमी से संबंधी है, तो यह आदमी के अधिकार में नहीं है की वह इनसे घृणा करे और अपने को इनके विरूद्ध करे; न ही आदमी स्तुति के काबिल है जो यह प्रदर्शित करता है की इन चीजों की जरूरत नहीं है, और न ही जिसने अपने को समझा रखा है की इनमें से कोई अच्छी है, यदि वास्तव में यह चीजें अच्छी थी. बल्कि इनमें से जितनी ज्यादा चीजों से आदमी खुद को वंचित करता है, या अन्य उसके जैसी चीजों से, या यदि जब वह वंचित होता है, उतने धैर्य से वह नुकसान को सहता है, उसी अंश में जिसमें वह बेहतर आदमी है.

ऐसे उसके स्वाभाविक विचार हैं, ऐसा ही उसकी बुद्धि का चरित्र है; क्योंकि आत्मा विचारों से रंगी होती है. इसे तब निरंतर विचारों की श्रृंखला से रंगें जैसे कि; उदाहरण के लिए, जहाँ आदमी रह सकता है, वहाँ वह भी अच्छी तरह से रह सकता है. बल्कि वह महलों में भी रह सकता है;-तब बहुत अच्छा, वह अच्छी तरह से महलों में भी रह सकता है. और फिर, इस पर विचार करें जिस किसी उद्देश्य से हर चीज का निर्माण होता है, उसके लिए वह बनी है, और इसके लिए उसे आगे बढ़ना चाहिए; और उसका अंत उस उद्देश्य के लिए हो; और जहाँ उसका अंत है वहां फायदा है और सभी अच्छा है. तर्कसंगत प्राणी के लिए समाज का होना अच्छा है; यह कि हम समाज के लिए बने हैं. क्या यह सही नहीं है की निम्नतर का अस्तित्व उच्चतर की खातिर है? बल्कि वह चीजें

www.PDFshala.com

जिनमें जीवन है वह उनसे श्रेष्ठ हैं जिनमें कोई जीवन नहीं है, और जिनमें जीवन है उसनें श्रेष्ठ वह हैं जिनके पास कारण है.

उसकी चाहना जो असंभव है पागलपन है: और यह असंभव है की अयोग्य इस तरह का कुछ न करे.

कुछ भी उस आदमी को नहीं होता है जो भालू के स्वभाव से नहीं बना है. दूसरों को वही चीज होती हैं, और क्योंकि या तो वह नहीं देखते क्या वह बन गए हैं या वह महान भावना दिखाते हैं की वे मजबूत हैं या नुकसान से बने रहेंगे. यह तब शर्म की बात है की अज्ञानता और गुमान मजबूत हों ज्ञान से.

चीजें खुद से आत्मा को नहीं छूती हैं, थोड़े से अंश में भी नहीं; और न ही वह आत्मा में प्रवेश करती हैं, और न ही वह आत्मा को खुद से बदल या चलायमान कर सकती है; बल्कि यह आत्मा ही है जो खुद से बदल सकती है या चलायमान हो सकती है, और जो कुछ भी निर्णय वह सोचती हैं सही है लेने के लिए, वह खुद से लेती है उस चीज के लिए जो उसके सामने प्रस्तुत की गई है.

एक संदर्भ में आदमी मेरे सबसे करीब की चीज है, जब तक मैं आदमी के लिए अच्छा करता हूँ और उसकी सराहना करता हूँ. परंतु जब कोई आदमी मेरे उचित कृत्य में बाधा बनता है, आदमी मेरे लिए बन जाता है वह चीज जो उदासीन है, सूरज या आंधी या जंगली जानवर से कम नहीं. अब यह सत्य है कि वह मेरे कृत्यों के लिए बाधा बनें, परंतु वह मेरे प्रभाव और स्वभाव के लिए बाधा नहीं बन सकते हैं, जिसमें परिस्थितियों के अनुसार काम करने की और बदलने की ताकत है: क्योंकि दिमाग हर रुकावट को समर्थन में बदल देता है; और इस तरह जो बाधा थी वह कृत्यों के लिए अवसर बन जाती है; और जो रास्ते में रुकावट हैं वह इस रास्ते में मदद करती हैं.

श्रद्धा रखें उनमें जो ब्रह्मांड में श्रेष्ठ हैं; और यह वह है जो सभी चीजों को उपयोगी बनाता है और निर्देशित करता है सभी चीजों को. और उसी तरह से श्रद्धा रखें उनमें जो खुद तुम्हारे अंदर श्रेष्ठ हैं; और भी उसी के जैसा है. क्योंकि खुद में भी, जो सभी चीजों को उपयोगी बना लेते हो, वह यह है, और तुम्हारा जीवन इससे निर्देशित होता है.

वह जो राज्य को कोई हानि नहीं पहुंचाते हैं, वह उसके नागरिकों को कोई हानि नहीं पहुंचा सकते हैं. हर तरह के नुकसान के प्रस्तुतिकरण में इस नियम को लागू करो: यदि राज्य को इससे कोई हानि नहीं है, तब मुझे भी कोई नुकसान नहीं है. परंतु यदि राज्य को हानि है, तो तुम्हें उसपर गुस्सा नहीं होना चाहिए जिसने राज्य को नुकसान पहुंचाया है. उसे बताओ गलती कहां है.

अकसर सोचो उस तेजी के बारे में जिससे चीजें गुजरती हैं और अप्रकट हो जाती हैं, दोनों चीजें जो हैं और जो प्रकट होती है. क्योंकि पदार्थ उस नदी की तरह से निरंतर प्रवाह में रहता है, और चीजों

www.PDFshala.com

की गतिविधि निरंतर बदलती रहती हैं, और अनंत तरह से कारण बनती हैं; और शायद ही कोई चीज है जो स्थिर है. और विचार करो जो तुम्हारे निकट है, यह असीम रसातल भूत काल का और भविष्य का है जिसमें सभी चीजें अप्रकट होती हैं. तब कैसे वह मूर्ख नहीं है जो जुड़ा रहना चाहता है चीजों से और खुद को दुःखी बना लेता हैं? क्योंकि वह अपने को कुछ समय के लिए चिढ़ाते हैं.

सोचे ब्रह्मांड के पदार्थों के लिए, जिसमें तुम्हारा बहुत थोड़ा-सा हिस्सा है; और ब्रह्मांड का समय, जिसका बहुत ही छोटा और अविभाज्य समय तुम्हें दिया गया है; और वह जो नियति द्वारा निश्चित है, और उसका कितना छोटा हिस्सा तुम्हारे पास है.

क्या दूसरे ने मेरे साथ गलत किया? वह उसे देखने दो. उसका अपना स्वभाव है, अपनी खुद की प्रकृति. मेरे पास वह है जो सार्वभौमिक प्रकृति ने चाहा है मेरे पास हो; और मैं वह करूंगा जो मेरी प्रकृति मुझे कराना चाहती है.

आत्मा का वह हिस्सा जो नेतृत्व करता है और शासन करता है वह शरीर की गतिविधियों से अविचलित रहे, चाहे दर्द में या आनंद में: और वह इनसे न जुड़े, बल्कि खुद को नियंत्रित रखे और उसके प्रभावों को बनाए रखे. परंतु जब यह प्रभाव दिमाग को प्रभावित करें उन कारणों से जो कि स्वाभाविक रूप से शरीर की गतिविधि से होते हैं, तब तुम संवेदनाओं का विरोध न करो, क्योंकि यह स्वाभाविक हैं: बल्कि खुद पर शासन करने वाला हिस्सा संवेदनाओं की उस राय से जुड़ न जाए जो अच्छी या बुरी हो सकती हैं.

देवताओं के साथ रहें. और जो देवताओं के साथ रहता है जो निरंतर उन्हें रास्ता दिखाते हैं, उसकी खुद की आत्मा उससे संतुष्ट रहती है जो उसे नियत किया जाता है, और वह, वह सभी कुछ करता हैं जो देवता चाहते हैं, जिसे जियुस ने हर आदमी को दिया है उसका अभिभावक और निदेशक बनने के लिए, खुद का हिस्सा. और यह हर आदमी की समझ और कारण है.

तुम उनसे घृणा करते हो जिनकी कांख से बदबू आती हैं? तुम उससे गुस्सा करते हो जिसके मुख से दुर्गंध आती हैं? क्या अच्छा यह तुम्हारे लिए कर सकता है? उसका उस तरह का मुख है, उसकी उस तरह की कांख है: यह जरूर है की इस तरह की दुर्गंध उन चीजों में हो- परंतु आदमी के पास कारण हैं, कि उसे कहा जाए, और वह इसके लिए सक्षम है, यदि वह कष्ट उठाता है, की क्या उसे सुधार सकता है- मैं चाहता हूं उसे खुद से खोजें. तब उसके पास कारण होगा; की तर्कपूर्ण तरीके से उसे सुधारे; उसे उसकी गलती बताओ, उसे सुधारने का अवसर दो. क्योंकि यदि वह सुनता है, तब वह उसे सुधार सकता है, और फिर गुस्सा करने का कोई कारण नहीं है. न दुखांत अभिनेता और न ही फूहड़ स्त्री...

वहां बने रहने से क्या फायदा जब तुम खुद बाहर निकल आए हो,.. क्योंकि यह तुम्हारे अधिकार में है की तुम यहां रहो. बल्कि यदि कोई तुम्हें इसकी अनुमति नहीं देता है, तब जीवन से बाहर

www.PDFshala.com

निकल जाओ, उस तरह से की तुम किसी नुकसान को सहन न करो. घर धुंध से भरा हुआ था, और मैं बाहर निकल आया. क्यों तुम सोचो कि यह किसी तरह की परेशानी है? परंतु जब तक इस तरह की कोई चीज मुझे परेशान नहीं कर रही है, मैं बना रहूंगा, आजाद हूं, और कोई आदमी मुझे डरा नहीं सकता है वह करने से जो मैं चाहता हूं; और मैं वह करना चाहता हूं जो कि तार्किक और सामाजिक प्राणी के अनुकूल है.

ब्रह्मांड की बुद्धि सामाजिक है. इसी के अनुसार उसने निम्न चीजों को श्रेष्ठ की खातिर बनाया है, और उसने श्रेष्ठ को इसके अनुकूल. जिससे की वह देख सके की कैसे वह चीजों को उचित तरह से समन्वित कर सके, उसके उचित योगदान के लिए निर्देशित कर सके, और सामंजस्य बैठा सके जिससे की चीजें बेहतर कर सकें.

कैसे अब तक तुम्हारा व्यवहार देवताओं, माता-पिता, भाइयों, बच्चों, शिक्षकों, जिन्होंने तुम्हारी बचपन में देखभाल की है, दोस्तों, गुलामों के प्रति रहा हैं? विचार करें अब तक यदि आपने इस तरह से व्यवहार किया है जैसे कहा गया है: कभी भी कृत्यों के करने या शब्दों के कहने में गलत आदमी न हों. और याद रखना कितनी चीजों से तुम गुजरे हो, और कितनी चीजों को तुमने सहन किया है; और जीवन का इतिहास अब खत्म हो चुका है और उसके काम भी खत्म हो चुके हैं; और कितनी सुंदर चीजों को तुमने देखा है; और कितने आनंद और दर्द से तुम गुजरे हो; और कितनी चीजें जिन्हें सम्मानजनक कहा जाता है तुमने अस्वीकार किया है; कितने गलत विचारों के आदमियों ने सम्मानजनक व्यवहार किया है.

क्यों अकुशल और अज्ञानी आत्माएं उनको परेशान करती हैं जिनके पास कुशलता और ज्ञान है? तब आत्मा के पास क्या कुशलता और ज्ञान हो? जो कि शुरूआत और अंत को जानता हो, और उस कारण को भी जो कि सभी पदार्थों में व्याप्त है और जो हर समय ब्रह्मांड पर शासन करता है.

जल्द ही, बहुत जल्द ही, तुम राख में, कंकाल में बदल जाओगे, और नाम रहेगा या नहीं रहेगा; परंतु नाम एक आवाज और गूंज है. और चीजें जो जीवन में बहुत महत्वपूर्ण हैं वह खोखली और वीभत्स और तुच्छ हैं, और छोटे कुत्तों की तरह से एक दूसरे को काटती हैं, और छोटे बच्चे की तरह लड़ना, हंसना और फिर रोना. परंतु विश्वसनीयता और नम्रता और न्याय और सत्य दूर तक साथ रहता है.

औलंपस तक दूर तक फैली धरती से. तब क्या वहां है जो तुम्हें अभी तक यहां रोके हुए हैं? यदि संवेदनाओं के तथ्य आसानी से बदल सकते हैं, और दृष्टिकोण को ग्रहण करने वाले अंग सुस्त और आसानी से गलत प्रभाव को ग्रहण कर लेते हैं; गरीब आत्म खुद खून से सांस ले रही है. तब अच्छी प्रतिष्ठा के लिए स्वीकार करें ऐसा संसार खाली चीज है. तब तुम अंत के लिए शांति से क्यों नहीं रुकते हो, चाहे वह एक अवस्था का अंत ही क्यों न हो? और जब समय नहीं आता है, क्या काफी हैं? क्यों, तब क्या देवताओं की स्तुति के अतिरिक्त है, जो आदमी के लिए अच्छा कर सके, और सहनशीलता और आत्मसंयम का अभ्यास करा सके; परंतु जैसा हर चीज के साथ है

www.PDFshala.com

जो कि सांसों और जीवन के अधिकार के परे है, याद रखें वह न तो तुम्हारा है और न ही तुम्हारे अधिकार में है.

तुम अपने जीवन को खुशी से बिता सकते हो, यदि आप सही रास्ते पर चलते हैं. दो चीजें ईश्वर की आत्मा और आदमी की आत्मा और सभी तर्क करने वाले प्राणियों में समान है, कि वह एक दूसरे के लिए रुकावट पैदा नहीं करते हैं; और न्याय की खातिर और इसके पालन करने में मिलकर साथ रहते हैं और इसी में तुम्हारी इच्छा को संतुष्टि मिलें.

यदि यह मेरी खुद की बुराई नहीं है, और न ही मेरी खुद की बुराई को प्रभावित करती है, और आम हित आहत नहीं हो रहे हैं, तब मैं इसके लिए परेशान क्यों हूँ? क्या आम हितों को नुकसान पहुंचा रहा है?

चीजों के प्रस्तुतिकरण से असहज न हो, बल्कि सभी की उनकी योग्यता और क्षमता के अनुसार मदद करो; और यदि उन्हें इस मसले में निरंतर नुकसान हो जो कि उदासीन हैं, इसे क्षति की तरह न देखो. क्योंकि यह खराब आदत है.

जब तुम्हारा खुद तुम्हें मंच पर बुला रहा हो, तब क्या भूल गए, क्या यह चीजें हैं?- हां; यह उन लोगों के लिए महान चिन्ता के विषय हैं- तब कैसे वह इन चीजों के लिए मूर्ख बन सकते हैं? एक समय में सौभाग्यशाली आदमी था, परंतु मैंने इसे खो दिया, मैं नहीं जानता कैसे.- बल्कि सौभाग्यशाली होने का मतलब है की आदमी ने अपने लिए अच्छा सौभाग्य नियत किया हुआ है; और अच्छा सौभाग्य आत्मा के अच्छे स्वभाव को बनाए रखना, अच्छी भावना, अच्छे कृत्य हैं.

www.PDFshala.com

अध्याय- 6

ब्रह्मांड के पदार्थ आज्ञाकारी और किसी चीज पर अड़ने वाले नहीं हैं; और जो कारण इस को निर्देशित करते हैं उनमें खुद से बुरा करने का कोई कारण नहीं है, क्योंकि वह किसी से द्वेष नहीं करते हैं, और न ही किसी का बुरा करते हैं, और न ही किसी चीज को उनके द्वारा नुकसान पहुंचता है. बल्कि सभी चीजें इसी कारण से बनती है और सिद्ध होती हैं.

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता की बाहर गर्मी या सर्दी है यदि तुम अपने कर्तव्यों का पालन कर रहे हो; और चाहे तुम अलसाए या पूरी नींद लिए हो; या चाहे तुमसे गलत बोला जाता है या स्तुति होती है; और चाहे मर रहे हो या कुछ और कर रहे हो. क्योंकि यह जीवन के कृत्यों में से एक है, वह कृत्य जिससे हम मरते हैं: इसलिए यह तब काफी है की इस कृत्य के लिए बेहतर करें जो हमारे हाथ में है.

अंदर देखो. किसी चीज की अजीब विशेषता और न ही उसके मूल्य उसे छोड़ दें.

सभी अस्तित्व में दिखने वाली चीजें जल्दी ही बदल जाएंगी, और या तो वह भाप बन कर उठ जाएंगी, यदि सभी पदार्थ एक हैं, या वह ओझल हो जाएंगी.

कारण जो शासन करता है जानता है उसकी स्थिति क्या है, और उसने क्या किया है, और किस पदार्थ पर वह काम करता है.

खुद से बदला लेने का सबसे सही तरीका है की गलत करने वाले की तरह न बनो.

एक चीज में आनंद लो और उस पर रुको, एक सामाजिक कृत्य के बाद दूसरे सामाजिक कृत्य को करते हुए, ईश्वर का ध्यान रखते हुए.

शासन करने का सिद्धांत यह है जो खुद को उठाता और गिराता है, और वह खुद को वैसा बनाता है जैसा वह है और जैसा वह होना चाहता है, तब हर चीज को वह उसी तरह से बनाता है जैसे वह देखना चाहता है.

ब्रह्मांड की प्रकृति के अनुरूप होने पर हर एक चीज को पाया जा सकता है, निश्चित ही यह किसी

www.PDFshala.com

दूसरी प्रकृति से अनुरूपता नहीं है की हर चीज को पाया जा सके, चाहे वह प्रकृति जो बाहर से इस जाने, या प्रकृति जो अंदर से इस प्रकृति को समझती है, या प्रकृति जो इससे स्वतंत्र हो.

ब्रह्मांड या तो भ्रम है, और चीजों का आपसी मेलजोल, और फैलाव; या यह एकरूपता, व्यवस्था और विधान है. यदि यह बाद वाला है, तब मैं चीजों के फलदायक संयोजन के होने की इच्छा क्यों करूं और अव्यवस्था के होने की? और क्यों मैं चिन्ता करूं किसी और चीज की इसके अलावा की अंतः में मिट्टी में मिल जाऊंगा? और क्यों मैं परेशान हूं, उसे लेकर जो होगा चाहे जो कुछ भी मैं करूँ. बल्कि यदि दूसरी कल्पना सत्य है, मैं पूजा करता हूं, और मैं दृढ़ निश्चित हूं, और मैं विश्वास करता हूं उसमें जो शासन करता है.

जब आपको अशांत होने के लिए परिस्थितियों के द्वारा विवश किया जाए, जल्दी ही खुद में वापस लोटकर आओ और उसमें लंबे समय तक नहीं बने रहो; इस तरह तुम्हारा प्रभुत्व निरंतर उसे अर्जित करते हुए सामंजस्य पर होगा.

यदि तुम्हारी सौतेली मां और मां एक ही समय पर हैं, तुम सौतेली मां के पल्लू को पकड़ोगे, बल्कि निरंतर अपनी मां के पास भी जाओगे. उसी तरह से सार्वजनिक जीवन और दर्शन तुम्हारी सौतेली मां और मां हों; दर्शन के पास निरंतर लोटकर आओ और उसे बनाए रखो, जिससे की तुम सार्वजनिक जीवन में जिससे भी मिलो वह सहन करने योग्य प्रतीक हो और तुम भी सार्वजनिक जीवन में सहनशील प्रकट हो.

जब हमारे सामने मांस होता है और हर खाने की चीज के साथ हमें यह प्रभाव मिलता है, की यह मछली का मृत शरीर है, और यह पक्षी का या सुआर का मृत शरीर है; और फिर, यह शराब केवल एक अंगूर का रस है, और यह बैंगनी रंगा वस्त्र किसी भेड़ की ऊन का जो शैल-मछली के रंग से रंगा है: इस तरह के यह प्रभाव होते हैं, और यह खुद से चीज के पास पहुंचते हैं और उन्हें भेदते हैं, और तब हम देखते हैं की किस तरह की यह चीजें हैं. इसी तरह से हम पूरे जीवन कृत्य करते हैं, और जहाँ भी यह चीजें होती हैं जो हमें अपने अनुसार सबसे जरूरी लगती हैं, हम उन्हें नग्न देखें और उनके गैर-जरूरी होने को और नंगा करे उन शब्दों को जिसने उनकी प्रशंसा की गई है. क्योंकि बाहरी प्रदर्शन कारण का भव्य दिखावा करता है, और जब तुम खुद से पूरी तरह से संतुष्ट हो जाओ की चीजों के लिए लगाव दर्द देता है, तब यह सबसे बड़ा धोखा देती है. विचार करें उसपर जिसे क्रेट ने जैनोक्रेट से खुद कहा था.

अधिकांश चीजें जिनकी अधिकांश लोग सराहना करते हैं वह अधिकांश सामान्य तरह की चीजें होती हैं, जो कि संयोग से या प्राकृतिक संयोजन से तैयार होती हैं, जैसे पत्थर, लकड़ी, पेड़ आदि से. परंतु जिन चीजों की सराहना उन आदमियों द्वारा की जाती है जो कि थोड़े से तार्किक होते हैं उनका संदर्भ उनसे होता है जो जीवित होती है, जैसे जानवरों का झुंड. वह जिनकी सराहना उन लोगों द्वारा की जाती है जो ज्यादा समझदार होते हैं वह चीजें हैं जो तार्किक आत्मा से साथ-साथ जुड़ी होती है, ब्रह्मांड की आत्मा से नहीं, बल्कि तार्किक क्योंकि वह आत्मा किसी कला में

www.PDFshala.com

हुनरमंद है, या विशेषज्ञ किसी तरह की, या तार्किक जब तक की उसके अधिकार में कुछ संपत्ति है. परंतु जो तार्किक आत्मा को महत्व देता है, ब्रह्मांड की आत्मा और जो राजनीतिक जीवन के अनुकूल हो, वह इसके अतिरिक्त किसी का सम्मान नहीं करता है; और इसके अतिरिक्त वह अपनी आत्मा को और अपनी गतिविधि को उचित कारण और सामाजिक जीवन में नियंत्रित रखता है, और वह उनके साथ अंत तक सहयोग करता है जो उसकी तरह के हैं.

कुछ चीजें अस्तित्व को बनाने के लिए संघर्ष करती हैं, और कुछ चीजें उनसे बाहर निकलने के लिए; और वह जो अस्तित्व में है वह पहले से बुझ चुका है. गति और बदलाव निरंतर संसार को बदल रहे हैं, जैसे कि समय का निरंतर चलता चक्र हमेशा अनंत काल खंड को बदलता रहता है. इस बहती धारा में तब, जिस पर कोई रोक नहीं है, तब उन चीजों का क्या होगा जो जल्दबाजी में रहती है जिनपर आदमी भारी कीमत लगाता है? यह तो उसी तरह से है जैसे आदमी गौरैया से प्यार करने लगता है जो उड़ जाती है, जबकि वह पहले से आंखों से ओझल है. कुछ इसी तरह से आदमी की जिंदगी है, खून का बहना और सांसों का छोड़ना. जैसे हम एक बार सांस खींचते हैं और फिर बाहर निकालते हैं, जिसे हम हर पल करते हैं, ऐसा ही हर श्वसन तंत्र के साथ है, जिसे तुम जन्म के साथ कल पाते हो और उससे एक दिन पहले वापस दे देते हो उस तत्व को जिससे पहले तुमने इसे लिया था.

न तो वाष्प जैसेकि पौधों में, चीज जिसकी कीमत है, और न ही श्वसन, जैसे पालतू और जंगली जानवरों में, और न चीजों के प्रकटीकरण का प्रभाव, और न ही चाहना में वशीभूत धागे से खिचे चले जाना, और न ही झुंड का जुटना, और न ही भोजन का पोषण; क्योंकि यह भोजन के अनावश्यक हिस्से से दूर होने जैसा है. तब मूल्यवान होना किस काम का है? तालियों के साथ स्वागत का होना? नहीं. और न ही मुंह के द्वारा वाहवाही पाना, जो अनेक मुखों से आती है. कल्पना करो तुमने इस बेकार की चीज जिसे प्रसिद्धि कहते हैं उसे छोड़ दिया है? यह मेरी राय में, खुद को आगे बढ़ाना है और बनाए रखना है उचित संविधान के समरूप, जिसके अंत में सभी रोजगार और कलाएं नेतृत्व करती है. क्योंकि सभी कलाए इसको लक्ष्य बनाती है, की चीजें जिन्हें बनाया गया है वह उसे ग्रहण कर ले जिसके लिए उन्हें बनाया गया है; और अंगूर की बेल लगाने वाला जो अंगूर की देखभाल करता है, और घुड़सवार जो घोड़ों को प्रशिक्षित करता है, इसी अंत को चाहते हैं. क्योंकि शिक्षा और युवाओं का शिक्षण किसी चीज पर लक्ष्य बनाना है. तब शिक्षा और शिक्षण का महत्व है. और यदि यह सही है, तब तुम्हें किसी चीज की चाहना नहीं होगी. तब तुम अनेक चीजों को मूल्यवान नहीं समझोगे? तब तुम न तो स्वतंत्र, और न पर्याप्त होगे खुद की खुशी के लिए, और न भावावेश के होगे. आवश्यकता के अनुसार तुम जलोगे, ईर्ष्या करोगे और संदेह करोगे उनसे जो उन चीजों को ले सकते हैं, और साजिश करोगे उनके विरुद्ध जिनकी इससे कीमत है. आवश्यकता के अनुसार आदमी चिन्ता करता रहता है. जो इन चीजों को चाहता है; और इसके अतिरिक्त, वह अकसर देवताओं में दोष देखता है. परंतु खुद के मन के लिए श्रद्धा और सम्मान खुद को खुश रखता है, और समाज से सद्भाव, और देवताओं से सहमती, अर्थात, उसके लिए धन्यवाद देना जो उन्होंने दिया है और जिसके लिए आदेश दिया है.

www.PDFshala.com

ऊपर, नीचे, सभी तरफ तत्वों की गतिविधियां हैं. परंतु नियति की गति इनमें से कोई नहीं है: वह इससे कुछ ज्यादा पवित्र है, और उस रास्ते पर खुशी से चलती है जिसका मुश्किल से अवलोकन हो पाता है.

कितना अजीब आदमी व्यवहार करता है. वह उनकी स्तुति नहीं कर सकता है जो उसके खुद साथ रहते हैं और जिनके साथ वह रह रहा है; बल्कि स्तुति पाना चाहता है भावी पीढ़ी से, जिन्हें वह कभी नहीं देख पाता है या वे उसे कभी देख सकेंगी, यह वह है जिस पर वह ज्यादा जोर देता है. बल्कि यह काफी उसके समान है की उन्हें दफना दिया जाए क्योंकि जो लोग उनसे पहले रहे हैं उन की स्तुति न कर सकें.

यदि किसी चीज को खुद से कर पाना तुम्हारे लिए कठिन है, तो यह नहीं सोचें की यह किसी दूसरे आदमी के लिए भी असंभव है: बल्कि यदि कोई चीज किसी आदमी के लिए संभव है और उसके स्वभाव के अनुकूल है, तब सोचें की आप भी उस चीज को हासिल कर सकते हैं.

व्यायाम करते समय माना कोई आदमी अपने को चोट पहुंचाए, और उसके घावों को संक्रमित करने के लिए छोड़ दे. तब हम उसे न चिढ़ाते हैं और न ही हम उस पर क्रोधित होते हैं, और न ही छली साथी की तरह से व्यवहार करते हैं; और फिर भी हम उससे अपने को सुरक्षित करते हैं, दुश्मन की तरह से नहीं, और नहीं ही संदेह करते हुए, बल्कि हम धीरे से वहां से निकल आते हैं. कभी-कभी इस तरह का व्यवहार हम जीवन के सभी हिस्सों में देखते हैं; हमें इस तरह की अनेक चीजों को अनदेखा कर देना चाहिए. क्योंकि यह हमारे अधिकार में है, जैसा मैंने कहा, कि उनके रास्ते से हट जाओ, और न किसी तरह का संदेह और न ही कोई घृणा.

यदि कोई आदमी मुझे सहमत कर सके और दिखा सके की मैं न तो सही सोचता हूं या कृत्य कर सकता हूं, मैं खुशी से बदल जाऊंगा; क्योंकि मैं उस सत्य को जानना चाहता हूं जिससे कोई आदमी कभी आहत हुआ हो. बल्कि वह घायल हुआ है जो अपनी गलती और अज्ञान के साथ रहना चाहता है.

मैं अपने कर्तव्यों को पूरा करता हूँ: दूसरी चीजें मुझे परेशान नहीं करती हैं; क्योंकि चाहे तो यह चीजें बिना जीवन के होती है, या चीजें बिना कारण के, या चीजें जो भटक गई हैं और अपने रास्ते को नहीं जानती हैं.

जैसे जानवरों के पास कोई उद्देश्य नहीं होता और आमतौर पर सभी चीजों और पदार्थों के पास, परंतु तुम्हारे पास होता है, चूंकि तुम्हारे पास उद्देश्य होता है और उनके पास नहीं, उनका उदारता और खुले दिल से उपयोग करो. बल्कि मानवता के लिए, जैसेकि उनके पास उद्देश्य है, सामाजिक भावना से व्यवहार करें. और सभी अवसरों पर देवताओं को याद करें, और खुद पर संदेह न करें कि कितना समय तक तुम इसे कर सकते हो; क्योंकि तीन घंटे भी इस तरह बिताने के लिए पर्याप्त होते हैं.

www.PDFshala.com

मेसेडिनिया के सिकंदर और उनकी घोड़ी को उसी राज्य में लाया गया; उनको दफनाने में उन्हीं ब्रह्मांड के सिद्धांतों का पालन किया गया, वह समान रूप से अणुओं में ओझल हो गए.

विचार करें कितनी चीजें अविभाजित समय में समान होती हैं, चीजें जो शरीर से संबंधित हैं और चीजें जो आत्मा से संबंधित हैं: और इसलिए तुम्हें आश्चर्य नहीं करना चाहिए यदि और बहुत चीजें, या चीजें जो उनके अस्तित्व में आती है जो सभी कुछ है, जिसे हम ब्रह्मांड कहते हैं, सभी से उसी समय अस्तित्व में होता है.

यदि कोई तुम से यह प्रश्न करे की कैसे ऐनटोनियस नाम लिखा जाएगा, तब तुम हर अक्षर की आवाज निकाल कर दिखाओगे? तब क्या होगा यदि वह नाराज हो जाएं? तब क्या तुम शांत रह कर हर अक्षर को नहीं बोलोगे? उसी तरह से जीवन में हैं की हर कर्तव्य कुछ निश्चित हिस्सों से मिल कर बना है. तब वहां तुम्हारा अवलोकन करने का कर्तव्य है और बिना विचलित हुए या उनकी तरफ गुस्सा दिखाए जो गुस्सा हो रहे हैं तुम अपने रास्ते पर चलो और उसे पूरा करो जो लक्ष्य तुम्हारे सामने है.

कितनी क्रूरता है आदमी को अनुमति न देने की वह करने की जो कि उनके स्वभाव के लिए उचित और फायदेमंद है! और उसी तरह से उन्हें वह करने की अनुमति देना, जब तुम खुद से देखते हो की वह गलत कर रहे हैं. जैसेकि वे निश्चित ही उन चीजों की तरफ आकर्षित होंगे क्योंकि वह खुद के स्वभाव को उसके अनुकूल और फायदेमंद मानते हैं. परंतु ऐसा नहीं है. तब उन्हें सिखाओ और दिखाओ बिना गुस्सा हुए.

मृत्यु संवेदनाओं को न ग्रहण कर पाने का अंत है, और उन स्वादों से दूर ले जाना है जो भूख को पैदा करते हैं, और विचारों की स्वतंत्रता पर और आमोद पर रोक हैं.

यह आत्मा के लिए शर्म की बात है कि वह पहले जीवन को छोड़ दे, जबकि शरीर ने साथ नहीं छोड़ा है.

इसका ध्यान रखो कि तुम सिज़र जैसे न बन जाओ, तुम उसके रंग में न रंग जाओ; क्योंकि ऐसी चीजें होती हैं. बल्कि अपने को सदाचारी, अच्छा, शुद्ध, गंभीर, स्वांग से स्वतंत्र, न्याय का मित्र, देवताओं की पूजा करने वाला, विनम्र, स्नेही, सभी उचित कृत्य करने में उत्साही बनाओ. निरंतर अपने को उसी तरह का बनाओ जैसा दर्शन तुम्हें बनाना चाहता है.

देवताओं के लिए सम्मान और आदमी की मदद. जीवन छोटा है. इस सतही जीवन का केवल एक ही पुरस्कार है, धर्म परायण स्वभाव और सामाजिक कृत्य. सभी कुछ ऐसे करो जैसे ऐनटोनियस के अनुयायी हो. उनकी भक्ति को हर उस कृत्य में याद रखें जो कि कारण के अनुकूल हैं, और संतुलित सभी चीजों में, और उनकी धर्मपरायणता, मुख की प्रशांति, और उनकी मिठास, और अनुचित प्रसिद्धि के लिए असहमति, और चीजों को समझने का उनका प्रयास; और कैसे वह

www.PDFshala.com

किसी भी चीज को तब तक नहीं गुजरने देते थे जब तक वह उसका सावधानी से परीक्षण नहीं कर लेते थे और उसे स्पष्टता से समझ नहीं लेते थे; और कैसे वह उनसे ऊब जाते थे जो उन्हें अनुचित तरीके दोष देते थे बिना उन्हें बदले में कोसते हुए; कैसे वह कुछ भी जल्दबाजी में नहीं करते थे; कैसे वह चुगली को नहीं सुनते थे, और कैसे वह मसलों का परीक्षण करते थे और कार्यवाही करते थे; लोगों का बिना तिरस्कार किए, और न ही डरपोक, और न ही संदेहजनक, न ही हेतु वादी हुए; और कितने कम से वह संतुष्ट रहते थे, जैसे आवास, बिस्तर, कपड़े, भोजन, नौकर आदि के लिए; और कैसे कम भोजन शाम को किया करते थे, और निश्चित समय के बाद भोजन का न करना; और उनकी मित्रता के लिए दृढ़ता और सरसता; और कैसे वह बोलने की स्वतंत्रता का सम्मान करते थे जो उनकी राय का विरोध करते थे; और सुख की अनुभूति जब कोई उन्हें बेहतर चीज दिखाता था; और बिना अंधविश्वास के कितने वह धार्मिक थे. सभी कुछ की नकल कर सकते हो जो उनके पास था अच्छे अंतःकरण से, जब अंतिम समय आए, जैसा उनके पास था.

अपनी शांत संवेदनाओं के पास वापस आओ और खुद को वापस बुलाओ; और जब तुम अपने को नींद से उठा लो और मान लो की वह केवल सपना था जो तुम्हें परेशान कर रहा था, अब अपने जागने वाले समय में इनकी तरफ देखो (चीजें जो तुम्हारे सामने है) जैसे तुम सोते समय उनकी तरफ देख रहे थे (सपने में).

मैं छोटे से शरीर और आत्मा से बना हूं. और अब इस शरीर में सभी चीजें भिन्न-भिन्न हैं, परंतु वह अंतर को नहीं महसूस करती हैं. बल्कि उन चीजों को समझने में उदासीन हैं, जो कि उनकी गतिविधि का हिस्सा नहीं है. बल्कि जो कुछ भी खुद की गतिविधि का हिस्सा है, वह सभी उनके अधिकार में हैं. और उनमें से भी वह जो वर्तमान के संदर्भ में है; दिमाग में भविष्य और भूत की चल रही गतिविधि के लिए भी वर्तमान उदासीन है.

न तो वह काम जो हाथ करते हैं और न ही जो पैर करते हैं वह प्रकृति के प्रतिकूल हैं, जब तक पैर, पैर का काम करते हैं और हाथ करते हैं काम हाथ का. इसलिए जब तक आदमी प्रतिकूल नहीं होता आदमी की प्रकृति के जब तक आदमी के काम करता है. बल्कि यदि काम प्रतिकूल नहीं अपनी प्रकृति के, तब वह उसके लिए बुराई नहीं है.

कितना ज्यादा आनंद चोरों, लुटेरों और निरंकुश द्वारा उठाया जाता है.

क्या तुम नहीं देखते की कलाकार अपने को एक निश्चित बिंदु पर समाहित करता है उनकी अपेक्षा जो कला में प्रवीण नहीं होते हैं- न तो वह कला के सिद्धांतों को पकड़ कर रखते हैं और न ही वह उनसे दूर भागते हैं? इसमें कोई अजनबी बात नहीं है की वस्तु शिल्पी या चिकित्सक के पास अपने उद्देश्यों के लिए ज्यादा सम्मान होता है उस आदमी से जिसके अपने उद्देश्य होते हैं, जो कि उसके और देवताओं के लिए समान होते हैं?

www.PDFshala.com

एशिया और यूरोप ब्रह्मांड के कोनों पर हैं: सारा समुद्र ब्रह्मांड में एक बूंद के समान है, ऐथेंस ब्रह्मांड में थोड़ा ठंडा है: वर्तमान समय अनंत काल में एक बिंदु के समान है. सभी चीजें छोटी, बदलने वाली और नष्ट हो जाने वाली हैं. सभी चीजें वहां से आती है, ब्रह्मांड पर शासन करने वाली ताकतों से या तो सीधे या अनुक्रम में. और उसी के अनुसार, शेर का मजबूत जबड़ा, और वह जो जहरीला है, और हर हानिकारक चीज, कांटे की तरह, मिट्टी की तरह, भव्य और सुंदरता के बाद के उत्पाद हैं. तब कल्पना नहीं करो की यह दूसरी तरह के हैं जिनका तुम आदर करते हो, बल्कि सभी एक स्रोत से एक स्पष्ट राय से.

वह जिसने वर्तमान को देखा है उसने सभी देख लिया, चीजें जिन्होंने अनंत काल में जगह ली है और चीजें जो भविष्य में जगह लेंगी; क्योंकि सभी चीजें एक से संबंधित हैं और एक उद्देश्य से हैं.

ब्रह्मांड में निरंतर सभी चीजों के संयोजन और उसके एक दूसरे से संबंधों पर विचार करते रहो. किस तरह से सभी चीजें एक दूसरे से फंसी हुई हैं, और कैसे इस तरह वह एक दूसरे से मित्रता निभा रही हैं; कैसे एक चीज अनुक्रम में दूसरे के बाद आ रही है, और यह सक्रिय पल के गुणों के कारण, और आपसी मंत्रणा और पदार्थों की संगति के कारण हो रहा है.

खुद को उन चीजों के अनुरूप बनाएं जिनका प्रकृति ने सृजन किया है: और उन आदमियों के अनुकूल भी जो इसमें हिस्सेदार हैं, उनसे प्यार करो, परंतु सच्चे दिल से, गंभीरता से.

हर औजार, हर उपकरण, हर बरतन, यदि उस उपयोग का है जिसके लिए वह बना है, वह बेहतर है, और तब भी जब जिसने उसे बनाया है वह वहाँ नहीं है. बल्कि उन चीजों में जो कि स्वभाव से साथ-साथ होती है उनके अंदर भी उसकी ताकत होती है जिसने उन्हें बनाया है; इसलिए जितना ज्यादा वह उस ताकत से सहमत होती हैं, और सोचती है, यदि वह उसके अनुसार रहती है, तब सभी चीजें उसके अंदर भी बुद्धिमत्ता के अनुरूप होती है. और इसी तरह ब्रह्मांड में भी जो चीजें उससे संबंधित होती है वह भी बुद्धिमत्ता से सहमत होती हैं.

जो कुछ भी चीजें हों जो तुम्हारे अधिकार में नहीं हों तुम उन्हें अपने लिए अच्छा या बुरा समझ सकते हो, यह निश्चित है, यदि कुछ खराब चीज होती है या किसी अच्छी चीज का नुकसान होता है, तुम देवताओं को दोष दे सकते हो, और आदमी से घृणा कर सकते हो, जो कि दुर्भाग्य या नुकसान के कारण हैं, या वह भी जो कि इसके संभावित कारण हो सकते हैं; और निश्चित ही हम अन्याय करते हैं, क्योंकि हम इन चीजों के बीच अंतर करते हैं. बल्कि यदि हम उन चीजों का परीक्षण करें जो हमारे अधिकार में अच्छी या बुरी हैं, तब कोई कारण नहीं रहता की हम ईश्वर में दोष देखे या आदमी की तरफ शत्रुतापूर्ण रवैया के साथ खड़े हों.

हम सभी एक ही अंत के लिए काम करते हैं, कुछ जानकारी से और तैयारी से, और दूसरे बिना यह जाने की वह क्या कर रहे हैं; तब भी जब वह सो रहे हों, जिनके लिए यह हेराक्लीटस हैं, मैं सोचता हूं, जो कहते हैं की वे श्रमिक और सहयोगकर्ता हैं उन चीजों में जो ब्रह्मांड में अस्तित्व में

www.PDFshala.com

आते हैं. परंतु आदमी अनेक तरीकों के बाद सहयोग करता है: और वह भी जो प्रचुरता में सहयोग करते हैं, जो उसमें गलती देखते हैं जो हो रहा है और वह जो विरोध करने की कोशिश करते हैं और दूसरों को डराते हैं; क्योंकि ब्रह्मांड को ऐसे लोगों की भी जरूरत होती है. यह तब तुमको याद दिलाता है की किस तरह के काम करने वाले आदमी यहाँ पर हैं; वह जो सभी चीजों पर शासन करते हैं वह निश्चित ही इनका इस्तेमाल जानते हैं, और वह उनसे भी कुछ सहयोग लेते हैं और उनका भी जो अंत की तरफ जाने के लिए मेहनत कर रहे हैं. परंतु खुद उस तरह के न हों जो नाटक में नीच और हास्यास्पद प्रकृति के होते हैं, जिसके बारे में क्रिसपस कहते हैं.

क्या सूर्य वर्षा का काम करने को तैयार रहता है, या एस्टोलोपियस अन्न पैदा करने वाले का काम करता है? और कैसे आप हर तारें के बारे में कहेंगे, क्या वह भिन्न-भिन्न नहीं हैं और फिर भी वह एक ही अंत के लिए साथ-साथ काम करते हैं?

यदि देवताओं ने मेरे बारे में तय किया है और उन चीजों के बारे में भी जो मेरे साथ होती है, उन्होंने सही तय किया होगा, क्योंकि देवत्व की कल्पना करना बिना पूर्व विचार के आसन नहीं है; और मेरे को नुकसान पहुंचाने की उनकी चाहना होगी? क्या उनको उससे फायदा होगा यह उनके अधिकार का विशेष विषय हैं? बल्कि यदि वह मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से संकल्पित नहीं है, वह कम से कम संपूर्ण के लिए संकल्पित होंगे, और चीजें जो क्रमानुसार एक सामान्य व्यवस्था में होती है मैं उन्हें स्वीकार करता हूं और उनसे सहमत होता हूं. बल्कि यदि वे संकल्पित नहीं है किसी चीज के लिए- जो कि विश्वास करने योग्य नहीं हैं, या यदि हम विश्वास करते हैं, तब हम न बलिदान दें और न ही प्रार्थना करें और न ही उसकी कसम खाएं और न ही कुछ करे जिसे हम करते यदि देवता उपस्थित होते और हमारे साथ रहते- बल्कि यदि देवता किसी भी चीज के लिए संकल्पित नहीं है जो हमसे संबंधी है, मैं खुद से संकल्प ले सकता हूं, और मैं उसके लिए संकल्प ले सकता हूं जो उपयोगी है; और जो हर आदमी के लिए उपयोगी है वह खुद की प्रकृति और संविधान के अनुकूल है. परंतु मेरी प्रकृति तार्किक और सामाजिक है; और मेरा शहर और देश, जब तक मैं ऐनटोनियस हूं वह रोम हैं और जब तक मैं आदमी हूं, वह संसार है. वह चीजें जो इन शहरों के लिए उपयोगी हैं वह अकेले मेरे लिए भी उपयोगी हैं. जो कुछ भी हर आदमी को होता है, वह ब्रह्मांड के हित में है: यह काफी है. वह चीजें जो कि इन शहरों के लिए महत्वपूर्ण हैं, वह मेरे लिए भी महत्वपूर्ण हैं. जो कुछ भी प्रत्येक आदमी के साथ होता है, वह ब्रह्मांड के हित में होता है: यह काफी है. बल्कि आगे तुम अवलोकन करो इसे आम सत्य मानते हुए, यदि तुम अवलोकन कर सको, की जो कुछ भी किसी आदमी के लिए फायदेमंद होता है वह दूसरे के लिए भी फायदेमंद होता है. परंतु यहां शब्द फायदेमंद को इस तरह से लेना चाहिए की उसे मध्य प्रकार की चीजों के लिए कहा गया है, जो न तो अच्छी और न ही खराब हैं.

जैसा तुम्हारे साथ होता है नाटकशाला में और ऐसी ही कुछ जगह, बराबर देखने पर उसी चीज को और एक सा देखने पर बोरियत होने लगती है, उसी तरह से जीवन में भी होता है; सभी चीजें जो ऊपर नीचे एक जैसी हैं और एक में से हैं. तब कितने समय तक एक जैसी रहें?

www.PDFshala.com

निरंतर यह सोचें की सभी तरह के आदमी और सभी तरह के प्रयास और सभी राष्ट्र नष्ट हो जाएंगे, उसी तरह से वह विचार भी जो पवेस्चन और फिवस और औरगीनियम को आए. अब अपने विचारों को दूसरी तरह के आदमियों के लिए लगाएं. उन जगहों के लिए तब हम हटा दें, जहां अनेक वक्ता हैं, और अनेक महान दार्शनिक, हेराक्लीटस, पायथागोरस, सुकरात; अनेक विजेता पिछले समय के, और अनेक नायक और निरंकुश उसके बाद के; इसके अतिरिक्त, ईयूडोक्स, हैंपिर्चस, आर्कमिडिज, और अनेक आदमी तीव्र प्रतिभा, महान बुद्धि, मेहनती, विविधता से भरे, आश्वस्त, आदमी के अल्पकालिक और विनाशशील जीवन को ताना मारने वाले, जैसे मैनीपस और उनके जैसे लोग. वह जिन पर विचार किया है वह सभी धूल में मिल चुके हैं. तब इसमें उनको क्या हानि है; और उनका क्या जिनका नाम अनजाना है? एक चीज यहां महान सौदा है, अपने जीवन को सत्य और न्याय के साथ बिताना, साथ में उदार व्यवहार झूठों और अन्यायी के साथ भी.

यदि तुम खुद को खुश रखना चाहते हो, उन लोगों के गुणों के बारे में सोचो जो आपके साथ रहते हैं; उदाहरण के लिए, गतिविधि एक की, शीलता दूसरे की, उदारता तीसरे की, और कुछ अन्य विशेषता चौथे की. कुछ भी उससे ज्यादा खुशी नहीं दे सकता है जितना की उदाहरण गुणों के, जब वह प्रदर्शित होते हैं उनके चरित्र में जो हमारे साथ रहते हैं और जिसे वह प्रचुरता में प्रस्तुत करते हैं, जितना संभव होता है. इसलिए इन्हें हम अपने से पहले रखें.

तुम्हें असंतुष्ट नहीं होना चाहिए, मैं सोचता हूँ, क्योंकि तुम थोड़ी ही पी सकते हो न कि हजारों गिलास. असंतुष्ट न हों तब क्योंकि तुम कुछ ही सालों तक रहोगे न की उससे ज्यादा; इसलिए तुम्हें संतुष्ट होना चाहिए उस मात्रा से जो तुम्हें निर्धारित की गई है, जो समय के साथ खपा दी जाएगी.

हमें उनको (आदमी को) राज़ी करने की कोशिश करनी चाहिए. बल्कि उनकी इच्छाओं के खिलाफ भी जाना चाहिए, जब न्याय का सिद्धांत उस रास्ते का नेतृत्व करता है. फिर भी यदि कोई आदमी ताकत का इस्तेमाल कर उनके रास्ते में आता है, अपने धैर्य को और शांति को बनाए रखें, और उसी समय रुकावट को दूर करने के लिए कुछ और उपाय करें; और याद रखें आपके यह प्रयास नियंत्रित हों, और असंभव को करने की चाहना न करें. तब चाहना का क्या होगा? कुछ प्रयास इस तरह. बल्कि तुम लक्ष्य को प्राप्त करो, यदि तुम उन चीजों की तरफ मुड़ते हो जिन्हें पाया जा सकता है.

वह जो ख्याति से प्यार करता है वह दूसरे आदमी की गतिविधियों को भी अपना समझता है; और वह जो आनंद से प्यार करता है, अपनी खुद की संवेदनाओं को; परंतु जिसके पास समझ होती है, वह अपने कृत्यों से ही अपना हितों पर विचार करता है.

यह हमारे अधिकार में है कि हम चीजों के बारे में कोई राय न बनाएं, न ही अपनी आत्म को सताएं; क्योंकि चीजों के पास कोई स्वाभाविक ताकत नहीं है की वह हमारे निर्णय तैयार करें.

www.PDFshala.com

अपने को अभ्यस्त करें की सावधानी से ध्यान दें जो दूसरों के द्वारा कहा जा रहा है, और जहाँ तक संभव हो सके, बोलने वाले के दिमाग में घुसने का प्रयास करें.

वह जो छत्ते के लिए अच्छा नहीं है, वह मधुमक्खी के लिए भी अच्छा नहीं हो सकता है.

यदि घोड़ा सारथी से या मरीज चिकित्सक से बदतमीजी करते हैं, तब क्या वह किसी और की सुनते हैं; कैसे सारथी तब उनकी सुरक्षा सुनिश्चित कर सकता है जो रथ पर हैं या चिकित्सक उनकी जिनकी वह देखभाल कर रहा है?

इस संसार में कितनों के साथ में आया था वह इससे पहले ही जा चुके हैं.

जिसे पीलिया हो उसे शहद कड़वा लगता है, और जिसे पागल कुत्ते में काट लिया है उसे पानी से डर लगता है; और छोटे बच्चे के लिए एक गेंद सुंदर चीज है. तब में क्यों गुस्सा हूं? तुम क्या सोचते हो झूठी राय में कम ताकत होती है पीलिया में पित्त से या उसके जहर से जिसे पागल कुत्ते ने काटा है?

कोई भी आदमी अपनी प्रकृति के अनुसार जीने से डरे नहीं: कुछ भी ब्रह्मांड की प्रकृति के उद्देश्य के विपरीत नहीं हो सकता है.

किस तरह के लोग वह हैं जिन्हें लोग खुश करना चाहते हैं, और किन चीजों के लिए, और किस तरह के कृत्यों से? कितनी जल्दी सभी चीजों को वह ढक देगा, और कितनों को उसने पहले ही ढक दिया है.

www.PDFshala.com

अध्याय- 7

क्या बुराई हैं? यह वह है जिसे तुमने अकसर देखा है. और हर अवसर पर जो अपने दिमाग में होता है यह ध्यान रखो, यह वह है जो तुमने अवसर देखा है. हर जगह ऊपर या नीचे जाने पर आप ऐसी ही चीज को पाते हो, जिससे पुराना इतिहास भरा हुआ है, जिससे मध्य काल भी और खुद तुम्हारा आज भी है; वह जिससे शहर घर आज भरे हुए हैं. कुछ भी नया नहीं है; सभी चीजों से परिचित हैं और उनका छोटा-सा जीवन है.

कैसे हमारे सिद्धांत खत्म हो सकते हैं, जब तक विचार जो उनसे संबंधित हैं अस्तित्व में हैं? बल्कि यह तुम्हारे अधिकार में है की तुम इन विचारों को हवा दो आग बनने के लिए. मेरी यह राय हर चीज के लिए है, जो मैं सोचता हूँ मेरे पास है. यदि मैं कर सकता हूं, तब क्यों में परेशान हूं? चीजें जो मेरी बुद्धि के बाहर की हैं उनका मेरी बुद्धि से कोई संबंध नहीं है. यह कि वह प्रभावित करें और तुम अटल रहो. जीवन को पुनः नियंत्रण में लाना तुम्हारे अधिकार में है. चीजों को फिर से देखें जैसे तुम उन्हें देखा करते थे; इसमें तुम्हारे जीवन की पुनः प्राप्ति है.

मंच पर नाटक का, भेड़ के झुंड का, भाले के साथ अभ्यास का, छोटे कुत्ते की हड्डी का, मछली के तालाब में दाना डालने का, चींटियों की मेहनत और बोझ से कहराने का, छोटे चूहे के डर के भागने का, कठपुतली को तार से खींचने का- सभी चीजों का प्रदर्शन समान है. यह तुम्हारा कर्तव्य है की इन सभी चीजों के बीच तुम अच्छे विनोद को प्रदर्शन करो. यह समझने के लिए की हर आदमी उतना ही कीमती है जितना चीजें कीमती हैं जिनके लिए तुम अपने को व्यस्त रखते हो.

वार्ता करते समय तुम इस पर ध्यान दो क्या कहा गया है, और हर पल इस पर ध्यान दो क्या किया जा रहा है. तब तुम तुरंत देख सकते हो कि क्या अंत होगा, बल्कि गंभीरता से अवलोकन करने पर यह भी की चीज क्या दर्शाती है.

क्या मेरी समझ इसके लिए काफी है या नहीं? यदि वह काफी है, मैं इसका इस्तेमाल उस औजार के रूप में करूंगा जो ब्रह्मांड ने मुझे दिया है. परंतु यदि यह काफी नहीं है, तब में या तो काम से सेवानिवृत्त हो जाऊंगा और उसके लिए रास्ता छोड़ दूंगा जो बेहतर कर सकता है, जब तक की वहाँ पर कोई कारण न हो क्यों मैं ऐसा नहीं करूं; या मैं बेहतर से बेहतर करने की कोशिश करूं, उन लोगों की मदद से जो मेरे शासन करने के सिद्धांत के अनुकूल हो और आम हित में अच्छा हो. जो कुछ भी मैं खुद से या दूसरों की मदद से कर सकता हूँ, वह केवल इससे निर्देशित हो, कि

www.PDFshala.com

क्या समाज के लिए उपयोगी हैं और उसके अनुकूल है.

कितने जिन्होंने यश को पाया था उन्हें भूला दिया गया है; और कितने जिन्होंने यश दिया था काफी पहले मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं.

मदद लेने में शर्म महसूस नहीं करो; क्योंकि उनका काम है की वह अपने कर्तव्यों का पालन करें जैसे कि सैनिक लड़ता है शहर की सुरक्षा के लिए. कैसे, अकेले होने पर तुम दीवार को नहीं बना सकते हो, परंतु दूसरों की मदद से यह संभव हैं?

तुम भविष्य के लेकर परेशान न हो, कैसा वह होगा, जब वह आएगा, तब तुम उसके साथ उसी तरह से रह सकते हो जैसे वर्तमान के साथ.

सभी चीजें एक दूसरे में फंसी हैं, और उनका बंधन पवित्र है; और शायद ही कोई चीज दूसरी चीज से जुड़ी न हो. क्योंकि चीजें जुड़ी हुई हैं, और वह इसी ब्रह्मांड के सृजन के लिए जुड़ी हैं. क्योंकि एक ही ब्रह्मांड इन सभी चीजों से मिलकर बना है, और एक ईश्वर, और एक पदार्थ, और एक नियम, एक समान कारण सभी बुद्धिमान प्राणियों में, और एक सत्य जो सभी चीजों को प्रभावित करता है; निश्चित ही यहां पर सभी प्राणियों के लिए एक पूर्णता है जो एक झुंड के हैं और एक उद्देश्य में भागीदार हैं.

जो कुछ भी अभी दिख रहा है, वह जल्द ही मिट जाएगा; और वह जो कुछ भी अभी है वह सार्वभौमिक कारण से वापस ले लिया जाएगा; और सभी चीजों की यादें समय के साथ भुला दी जाएंगी.

तर्क करने वाले प्राणी के लिए सभी कृत्य प्रकृति के अनुसार और कारण के अनुसार होते हैं.

जोड़े जाओ, या जुड़े हो. जैसे किसी संगठन के सदस्यों में सभी सदस्य एक उद्देश्य के लिए होते हैं, जबकि सभी पृथक अस्तित्व हैं, वह एक बन जाते हैं. और इसका उनके लिए मतलब होता है, जो खुद से कहते हैं की मैं इसका सदस्य हूं. बल्कि यदि तुम सुनिश्चित हो की तुम्हारा खुद का हिस्सा अभी तक आदमी को हृदय से प्यार नहीं करता है; उपकार तुमको खुद के लिए खुश नहीं कर सकता है; वह अभी भी केवल संपत्ति की तरह से तो हो सकते हैं, और फिर भी खुद का भला नहीं कर सकते हो.

जब वह गिरे तो यह उनकी समझ की बात है की वह गिरने के प्रभाव को महसूस करें. वह हिस्से जो गिरते हैं वह शिकायत करेंगे, यदि वह चाहेंगे. परंतु मैं, जब तक मैं यह नहीं सोचता हूं की जो कुछ भी हो रहा है वह गलत है, मैं पीड़ित नहीं हूं. और यह सोचना मेरे अधिकार में है.

चाहे जो कुछ भी दूसरा कहें या करें, मैं अच्छा बना रहूंगा, जैसेकि सोना हमेशा बना रहता है. चाहे

www.PDFshala.com

कुछ भी कोई कहे या करे, मैं सोना बना रहूंगा और अपने को वैसा बनाए रखूंगा.

शासन करने वाली ताकतें खुद से परेशान नहीं करती हैं; मेरा मतलब, खुद से नहीं डराती या दर्द देती हैं. परंतु यदि कोई दूसरा डराता है या दर्द देता है, तो उसे यह करने दो. क्योंकि शासन करने वाली ताकतें खुद को अपनी राय में इस तरह नहीं करने दे सकती हैं. शरीर खुद से ध्यान रखे, यदि वह रख सकता है, की वह पीड़ित नहीं है, और उसे बोलने दो यदि वह पीड़ित है. परंतु खुद आत्मा के लिए, जो भी डर और दर्द का विषय है, उसके लिए पूरी तरह नियंत्रण में है कि वह उनके लिए क्या राय बनाए, वह पीड़ित नहीं हो सकती, क्योंकि वह कभी भी ऐसे निर्णयों से विचलित नहीं होती है. खुद पर शासन करने का सिद्धांत खुद से कुछ नहीं चाहता है, जब तक वह खुद से कोई चाहना न करे; और इसलिए यदि वह खुद को परेशान न करे और खुद को न रोके वह बेचैनी और बाधाओं से स्वतंत्र है.

खुशी एक अच्छा प्रेत है, या एक अच्छी चीज. तब हे कल्पना तुम यहां क्या कर रही हो. यहाँ से जाओ, मैं देवताओं से अनुनय करता हूं, जब तुम आती हो, मैं तुम्हें नहीं चाहता हूं. परंतु तुम हमेशा आती हो. मैं तुम से नाराज नहीं होता हूँ: केवल दूर चला जाता हूं.

क्या कोई आदमी बदलाव से डरता हैं? कैसे क्या बिना बदलाव के स्थान ले सकता हैं? क्या तब ज्यादा पसंद या ज्यादा उचित होगा सार्वभौमिक प्रकृति के लिए?

और तुम नहा नहीं सकते जब तक जंगलों में बदलाव न हो? और तुम्हारा पोषण नहीं हो सकता जब तक कि भोजन बदलाव से न गुजरे? और क्या कोई भी चीज उपयोगी हो सकती है जब तक वह बदलाव से न गुजरे? क्या तुम यह नहीं देखते कि तुम भी बदलते रहते हो, और यह ब्रह्मांड की प्रकृति के लिए समान रूप से जरूरी हैं?

जिस तरह से ब्रह्मांड बना है उसी तरह की उग्र धारणाओं को सभी शरीर धारण करते हैं, जो कि अपनी प्रकृति के अनुसार एक साथ होते हैं और संपूर्ण बनने के लिए शरीर का हिस्सा बनकर एक दूसरे का सहयोग करते हैं. कितने क्रिसपस, कितने सुकरात, कितने इपिकेटुस को निगला जा चुका हैं? और यही विचार उनके लिए भी आदमी और चीजों के संदर्भ में हैं.

एक चीज जो मुझे परेशान करती है, मैं वह चीज करूं जिसको मानव स्वभाव अनुमति नहीं देता है, न उस तरह से जिस तरह से उसे करने की अनुमति न हो, या वह जिसे अभी करने की अनुमति न हो.

सभी चीजों के लिए उनमें विस्मृति हो; और सभी चीजों में उनके लिए विस्मृति हो.

यह आदमी के लिए असहज होता है की वह उन्हें भी प्यार करे जो गलत करते हैं. यदि जब वह गलत करते हैं उनके साथ यह हो सकता है की वह रिश्तेदार हो, और वह लापरवाही और

www.PDFshala.com

अनजाने में गलत कर रहे हों, और जल्द ही आप दोनों मृत्यु को प्राप्त होगे; और उससे ऊपर, गलत करने वाले तुम्हारा कोई नुकसान नहीं कर सकते हैं, क्योंकि उन्होंने शासन करने वाले को उससे बदतर नहीं किया है जितनी की वह पहले से थी.

ब्रह्मांड, ब्रह्मांड के पदार्थों को उसी तरह से प्रयोग करता है जैसेकि वह मोम हों, फिर वह घोड़े को ढालती है, और जब वह टूट जाता है, वह उसी पदार्थ का प्रयोग पेड़ बनाने में, फिर आदमी के बनाने में, फिर कुछ के बनाने में करती है; और इनमें से प्रत्येक चीज थोड़े ही समय के लिए बनी रहती हैं. तब इसमें कोई कठिनाई नहीं की बर्तन टूट जाए, जैसेकि कुछ भी हमेशा बना रहे.

नाक-भौं सिकोड़ना अस्वाभाविक है; जब अकसर यह मान लिया जाता है, की सारी मनोरमता खत्म हो चुकी है, और अंत में इस तरह से बुझ गई है की वह फिर से जलाई नहीं जा सकती है. इस तथ्य से यह निष्कर्ष निकालने की कोशिश करो, की यह कारण के विपरीत है. यदि गलत करने की अनुभूति चली भी जाए, तब और ज्यादा जीने का क्या कारण है?

प्रकृति जो सभी पर शासन करती है वह सभी चीजों को बदल देगी, और इन सभी पदार्थों से दूसरी चीजें बनाएगी, और फिर दूसरी चीजें इनमें से, जिससे की यह संसार हमेशा नया बना रहें.

जब आदमी ने कुछ गलत किया हो, तुरंत उस बात पर ध्यान दो किस अच्छी या बुरी राय से उसने गलत किया है. क्योंकि जब तुम इसे देख लेते हो, तुम उससे अफसोस करोगे, और न ही आश्चर्य और न ही क्रोध. क्योंकि या तो तुम खुद से सोचते हो वही चीज अच्छी हो जैसे उसने की है या दूसरी चीज उसी तरह की. इसलिए यह आपका कर्तव्य है की उसे माफ कर दो. परंतु यदि तुम नहीं सोचते ऐसी चीजों को अच्छा या बुरा, तुम जल्दी से उसका अच्छे से निपटारा कर दोगे जो गलत है.

उतना ज्यादा न सोचो की किसी को वैसा नहीं होना चाहिए जैसाकि वह है; बल्कि उन चीजों से जो तुम्हारे पास है सबसे सही का चयन करो, और फिर यह प्रतिबिंबित करो कि कितनी उत्सुकता से उसे प्राप्त किया गया है, तब भी जब ऐसा नहीं किया गया है. उसी समय यह भी ध्यान रखो की तुम उससे उतना ज्यादा तुष्ट न हो जाओ की तुम उसके आदी हो उसका अधिक मूल्यांकन करने लगो, जिससे की तुम उसके लिए विचलित होने लगो जब वह तुम्हारे पास न हो.

खुद में संतुष्ट रहो. तर्क संगत सिद्धांत जो शासन करता है उसका यह स्वभाव होता है, संतुष्ट रहता है जब वह सही करता है, और इस तरह से शांति को पाता है.

कल्पना को पोंछ दो. तारों को खींचना रोक दो. अपने को वर्तमान में सीमित करो. अच्छी तरह से विचार करो जो तुम्हारे साथ या दूसरों के साथ होता है. हर तथ्य को विभाजित करो और बांट दो कारण और उद्देश्य में. अंतिम समय पर विचार करो. वह जो आदमी ने गलत किया है वहीं बना रहे जहाँ गलत किया गया था.

www.PDFshala.com

अपने ध्यान को उस पर लगाओ जो कहा गया है. तुम्हारी समझ उन चीजों में हो जो रही हैं या चीजों जो उन्हें करती हैं.

अपने को सादगी और शालीनता से सजाओ और उदासीन रखो उन चीजों से जो पुण्य और पाप के बीच स्थित हैं. मानवता से प्यार करो. ईश्वर का अनुसरण करो. कवि कहता है विधि सभी पर शासन करती है. और यह याद रखना काफी है की विधि सभी पर शासन करती है.

मृत्यु के बारे में: चाहे यह फैलाव है, या संकल्प या विनाश, या विलुप्त होना या बदलना परमाणु में .

दर्द के बारे में: दर्द जो कि असहनीय है वह हमें उठा लेगा. बल्कि जो लंबे समय तक बना रहता है वह सहनीय हो जाता है; और दिमाग उससे अपनी खुद की प्रशांति बना लेता है उसमें सम्मिलित होकर, और शासन करने वाला विषय और खराब नहीं होता है. परंतु वह हिस्से जो दर्द से नुकसान उठाते हैं, उन्हें, यदि हो सके, अपनी राय देने दो.

यश के बारे में: उन लोगों के दिमाग को देखो जो यश चाहते हैं, अवलोकन करो क्या वह हैं, और किस तरह की चीजों से वह बचते हैं, और किस तरह की चीजों का वह पीछा करते हैं. और विचार करो जैसे रेत के ढेर पर दूसरा रेत का ढेर डालने पर, दूसरा रेत के ढेर पहले को छुपा देता, उसी तरह से जीवन में अवसर जो पहले आए थे दूसरे अवसर के आने से ढक जाते हैं.

प्लेटों से: व्यक्ति जिसने बुद्धि का परीक्षण किया और सभी समय और तत्वों को निहारा, जो सोचते हैं की यह उनके लिए संभव है वह सोचें मानव जीवन महान है? यह संभव नहीं है, उन्होंने कहा- ऐसा आदमी तब सोचे की मृत्यु भी कोई बुराई नहीं है- निश्चित नहीं.

ऐनटेस्टनीस से: यह शाही है की अच्छा करो और दुत्कारे जाओ.

मुखाकृति के लिए यह मुख्य आधार है की आज्ञाकारी बनें और विनियमित हों और उसी तरह से अपने को तैयार करो जैसे मन निर्देश देता है, और मन के लिए की वह विनियमित न हो और खुद से तैयार हो.

हमारा चीजों से चिढ़ना सही नहीं है, क्योंकि वह इसकी चिन्ता नहीं करते हैं.

अमर देवताओं को और हमें आनंद दो.

जीवन को मक्के की बालियों की तरह से काटो; एक आदमी पैदा होता है; दूसरा मरता है.

यदि देवता मेरी और मेरे बच्चों की चिन्ता नहीं करते हैं, तब भी इसके लिए कोई कारण होगा.

www.PDFshala.com

मेरे साथ अच्छा और न्याय संगत ही होगा.

दूसरों के रोने धोने और उग्र जज्बात में साथ न दो.

प्लेटों से: मैं इस आदमी को उचित उत्तर दूंगा, जो यह है: तुम सही नहीं कहते हो, यदि तुम सोचते हो की यदि आदमी जो किसी चीज में अच्छा है वह जिंदगी और मौत के नुकसान को देखे, और उसे उस संदर्भ में न देखे जो उसने किया है, चाहे उसने गलत किया है या सही, और अच्छे और बुरे आदमी के काम.

यह तब सत्य है ऐथेंस के लोगों: जब भी आदमी ने अपने को स्थापित किया है यह सोचते हुए की यह उसके लिए सबसे अच्छी जगह है, या वह सेना नायक द्वारा स्थापित किया गया है, तब मेरी राय में उसे वहां बना रहना चाहिए, और नुकसान को सहन करना चाहिए, बिना किसी गणना को किए, चाहे मौत हो या कुछ और चीज, इससे पहले की वह वहां से हटे.

परंतु मेरे, अच्छे मित्र, प्रतिबिंबित करो वह जो कुलीन और अच्छा है वह बचना या बचाए जाने से अलग नहीं है; क्योंकि जैसे आदमी इस तरह से रह रहा है, कम से कम एक जो वास्तव में आदमी है, विचार करे की यह वह चीज नहीं है जिसे विचारों से हटाया जा सके; और वहां जीवन से कोई प्यार नहीं हो: बल्कि ऐसे मसलों पर आदमी उन्हें ईश्वर को सौंप दे और विश्वास करे जो कि औरतें कहती हैं, की कोई आदमी अपने भाग्य से अलग नहीं हो सकता है, अगली जांच है कि कैसे वह बेहतर तरह से जीवन को जीए उस समय तक जब तक उसे जीना है.

तारों के रास्तों की तरफ भी देखो, जैसे वह अपने रास्ते पर चले जा रहे हैं; और निरंतर तत्वों के एक-दूसरे में रहे बदलावों पर विचार करो; क्योंकि ऐसे विचार जीवन की गंदगी को दूर करते रहते हैं.

प्लेटों का ठीक कहना है: वह जो आदमियों के बारे में प्रवचन करता है वह सांसारिक चीजों को भी देखे जैसेकि उसने उन्हें ऊंची जगह से देखा है; वह उन्हें देखे अपनी सभाओं में, सेनाओं में, किसानों में, शादियों में, मंच पर, जन्म, मृत्यु, न्यायालय, सुदूर स्थान, जंगलियों के भिन्न देश, दावत, विलाप. बाजार, सभी चीजों का मिश्रण और विरोध.

भूत काल पर भी विचार करो; राजनीतिक वर्चस्व में महान बदलावों पर भी. जिससे की तुम अंदाज लगा सको की चीजें किस तरह से होंगी. वह निश्चित ही एक तरह की हो सकती है, और यह संभव नहीं है की वह उन चीजों के होने से विचलित हो जो अभी हो रही हैं; उसी तरह से जैसेकि विचार करना चालीस साल के मानव जीवन का दस हजार साल के मानव जीवन से. क्या तुम उसे देख सकोगे?

वह जो धरती पर धरती से पैदा हुआ है, वह या तो अणुओं का विखंडन है या एक चीज से दूसरी

www.PDFshala.com

चीज में बदलना है. बल्कि वह जो स्वर्ग से आया है वह वापस स्वर्ग में समा जाएगा.

भोजन और शराब और चालक जादू की कला के साथ, मौत की भगदड़ से बचने की राह को खोजना. वह हवा जिसे स्वर्ग ने भेजा है. हम सहन करें, और बिना शिकायत के परिश्रम करें.

कोई अपने विरोधी को ढालने में प्रवीण हो सकता है; परंतु वह न तो ज्यादा सामाजिक है, और न ही बहुत नरम, और न ही जो हो रहा है उसका समाना करने में बहुत अनुशासित, और न ही बहुत विचारशील अपने पड़ोसियों के दोषों को लेकर.

जब कोई काम किसी अच्छे उद्देश्य से देवताओं और आदमी के लिए किया जाए, तब डरने की कोई बात नहीं है: जहाँ हम लाभ उन गतिविधियों से ले रहे हैं जो सफल हुई हैं और जो हमारे संघटन के अनुसार हैं, तब संदेह करने की कोई जरूरत नहीं है.

हर जगह और हर समय यह तुम्हारे अधिकार में है की वर्तमान स्थिति से संतुष्ट रहें, और उनसे न्याय संगत व्यवहार करें जो वहां पर हैं, और वर्तमान विचारों को ध्यान दें, तब कुछ भी कोई चुरा नहीं सकता है जिसका अच्छी तरह परीक्षण किया गया है.

कभी भी दूसरे आदमी के शासन करने के सिद्धांतों की तरफ न देखें, बल्कि सीधे इसकी तरफ देखें, किसी तरफ प्रकृति नेतृत्व करती है, सार्वभौमिक प्रकृति की तरफ कैसे चीजें तुम्हारे साथ हो रही हैं, और खुद अपनी प्रकृति जिससे की तुम्हारे द्वारा कृत्य किए जाते हैं. बल्कि प्रत्येक चीज को वह करना चाहिए जो उनके संविधान के अनुकूल हो; और सभी दूसरी चीजों का सृजन तार्किक प्राणी के लिए किया गया है, जैसेकि तर्क शून्य चीजों में अवर श्रेष्ठ के लिए होती हैं, जबकि तार्किक एक दूसरे हित के लिए होती हैं.

मुख्य सिद्धांत तब आदमी के संविधान के लिए है की वह सामाजिक हो. और दूसरा है की शरीर की मनुहार न करें, क्योंकि यह तार्किक और बुद्धि गतिविधि पर खुद से अजीब तरह से प्रतिबंध लगाता है, और कभी भी संवेदनाओं की गतिविधि से या चाहना से नियंत्रित न हो, क्योंकि दोनों पशु वृति की हैं; बल्कि बुद्धिमानी पूर्ण गतिविधि बेहतरीन होती है और अपने को अनुमति नहीं देती की हम दूसरों के द्वारा नियंत्रित हों. और उचित कारण से सभी का उपयोग करें, क्योंकि यह प्रकृति द्वारा तैयार किया गया है. तार्किक संविधान में तीसरी चीज है गलती और धोखे से आजादी. तब शासन करने वाले सिद्धांत तेजी से सीधे इन चीजों पर नियंत्रण करे.

अपने को मरा हुआ समझो, और पूरी तरह से वर्तमान समय में जीओ; और प्रकृति के अनुसार जीओ अवशेष जिसकी तुमको अनुमति है.

उससे प्रेम करो जो तुम्हारे साथ होता है और जो तुम्हारी नियति से गुथा हुआ है. यह ज्यादा उचित है?

www.PDFshala.com

हर चीज जो होती है अपनी आंखों के सामने उन लोगों को रखो जिनके साथ ऐसी चीज हुई है, और कैसे वह बेचैन हुए, और उन्होंने इस अजनबी चीज का उपचार किया, और खुद से गलती को ढूंढा; और अब वे कहां हैं? कहीं नहीं. तब तुम क्यों उसी कृत्य को वैसे ही करना चाहते हो? और क्यों इस व्याकुलता को छोड़ नहीं देते हो जो कि प्रकृति के अनुकूल नहीं है, उनके लिए जो उसके कारण हैं और जो उससे साथ चलते हैं? और क्यों तुम सही तरीके पर जोर नहीं देते हो उन चीजों को करने के लिए जो तुम्हारे साथ हो रही हैं? जिससे तुम उनका सही उपयोग कर सको, और तुम्हारे पास सामग्री हो जिस पर तुम काम सको. केवल खुद पर ध्यान दें, और जो कुछ भी कृत्य तुम करते हो उसमें अच्छा आदमी बनने का संकल्प लें: और याद रखें... खुद के अंदर झांकें. खुद के अंदर अच्छाई का झरना है, और वह अभी भी बह रहा है, यदि तुम उसे खोदते हो.

यह शरीर सुगठित है, और उसके साथ कोई अनियमितता न तो कृत्यों में न ही विचारों में दिखाओ. क्योंकि जो कुछ भी मन चेहरे पर दिखाता है वह उसे बुद्धि और औचित्य के संतुलन से दिखाता है, जिसके लिए संपूर्ण शरीर की जरूरत होती है. जबकि इन सभी चीजों का अवलोकन बिना जुड़ाव के करना चाहिए.

जीवन बहुत कुछ मुक्केबाज के समान है न की नर्तक के समान, उसे तैयार रहना चाहिए हर उस चीज को सामना करने के लिए जो कि यकायक और अप्रत्याशित रुप से हो सकती है.

निरंतर उनको निहारो जिनकी सहमति तुम चाहते हो, और कौन से शासन करने वाले सिद्धांतों पर वह अमल करते हैं. तब तुम न तो उनको दोष दोगे जिन्होंने जान बूझ कर अपराध नहीं किया है, और न ही तुम उनकी सहमति लोगे, यदि तुम उनकी राय और भूख को देखते हो.

, दार्शनिक कहते हैं, प्रत्येक आत्मा सत्य से वंचित होती है; उसी तरह से वह न्याय और संयम और परोपकार और इसी तरह से सभी चीजों से. इसलिए इसे निरंतर बुद्धि में बनाए रखना बहुत जरूरी है की तुम सभी के लिए विनम्र बने रहो.

हर दर्द के साथ यह विचार बना रहे, इसमें कोई अनादर नहीं है, और न ही यह शासन करने वाली बुद्धि को खराब करता है, क्योंकि यह बुद्धि को नुकसान पहुंचाता है जब तक बुद्धि तार्किक है या जब तक वह सामाजिक है. बल्कि अधिकांश दर्द में ऐपाक्युरस तुम्हारी मदद करे, कि दर्द न तो असहनीय होता है और न ही हमेशा बना रहता है, यदि यह दिमाग में हो कि इसकी भी सीमा है, और यदि कोई कल्पना में कुछ और नहीं जोड़ता है: और इसे भी याद रखे, की हम इसे बनाए रखें की अनेक चीजें जिनसे हम असहमत होते है वह भी हमारे लिए दर्द है, जैसे कि अत्यधिक तंद्रा, और गर्मी से पसीने का आना, और भूख का न होना. जब आपमें इनमें से किसी भी चीज के लिए असंतोष हो, खुद से कहें, यह चीजें दर्द पैदा कर रहीं थी.

इस बात का ध्यान रखें की अमानवीय न हों, जब वह मानवीय हों.

www.PDFshala.com

कैसे हम जाने की टेलीगुयस चरित्र में सुकरात से बेहतर नहीं थे? क्योंकि क्या यह काफी नहीं है की सुकरात महान मौत मरे, और तर्क से सहमती रखते हुए, और ठंड में रात को ज्यादा धीरज के साथ बिताया, और जब उनसे सलोनियस के लियोन को गिरफ्तार करने को कहा गया उन्होंने इनकार करना ज्यादा जरूरी समझा, और इठलाते हुए चले गए- जबकि इस तथ्य की तरफ अनेक संदेह से देखते हैं की वह सत्य था. बल्कि हमें इस बात का परीक्षण करना चाहिए किस तरह की आत्म सुकरात की आत्मा थी, और कि उसका झुकाव आदमी की तरफ न्यायोचित और देवताओं की तरफ धर्मपरायण था, न तो आदमी के खलनायक होने पर झगड़ने वाला, और न ही इससे असहनीय बनना, और न ही अपनी समझ को दु:खी शरीर के प्रभाव से सहानुभूति पूर्ण बनाना.

प्रकृति ने बुद्धि को उतनी अच्छी तरह से शरीर से घुलाया मिलाया नहीं है, तुम्हें खुद को नियंत्रित करने की अनुमति नहीं दी है और खुद के नियंत्रण में लाने की सभी कुछ को जो खुद तुम्हारा है; क्योंकि इसकी काफी संभव है कि दिव्य पुरुष हों और दूसरों द्वारा स्वीकार न किए जाएं. इसे हमेशा अपने दिमाग में बनाए रखें; दूसरी चीजों को भी, खुश जीवन के लिए थोड़े से यथार्थ की जरूरत होती है. और क्योंकि तुमने प्रकृति को जानने से अपने को वंचित कर रखा है, इस कारण से स्वतंत्र और विनम्र और सामाजिक और देवताओं के प्रति आज्ञाकारी होने की आशा को न छोड़ें.

यह तुम्हारे अधिकार में हैं की सभी बाधाओं से मुक्त होकर जितना संभव हो सके शांत बुद्धि के साथ रहो, तब भी जब सारा संसार उसके खिलाफ चिल्ला रहा हो, और तब भी जब जंगली जानवर उन लोगों को टुकड़ों में बांट दे जो इस मसले में उसके चारों तरफ एकत्र हो गए हैं. क्योंकि जो बुद्धि को इन सभी के बीच में शांत बने रहने की जगह बाधा पहुंचाता है और तुरंत निर्णय करना चाहता है उसके बीच जिनसे वह घिरा हुआ है और तैयार है उन चीजों का प्रयोग करने के लिए जो उसकी निगरानी में हैं: यह वास्तव में एक कला है, आदमी की राय में जो भिन्न तरह की प्रकट होती है; और इसका उपयोग जो हाथ में होता है यह कहता है: कैसे चीजों को करूं जिन्हें मैं चाहता हूं; मेरे लिए जो खुद से प्रस्तुत होता है वह तार्किक और राजनीतिक दोनों तरह से पुण्य करने लिए सामग्री है, दूसरे शब्दों में, कला का अभ्यास, जो आदमी या ईश्वर से संबंधित है. हर चीज जो होती है उसका संबंध या तो ईश्वर से या आदमी से होता है, और नियंत्रित करने के लिए न ही यह नई है या कठिन है, बल्कि सामान्य और उपयुक्त तरीके से काम करने योग्य.

नैतिक चरित्र की परिपूर्णता इसमें समाहित है, हर दिन को ऐसे जीएं जैसे कि वह अंतिम है, और न ही हिंसक रुप से उत्तेजित हों, और न ही आलसी और न ही पाखंड करें.

देवता जो अमर हैं वह गुस्सा नहीं होते हैं क्योंकि लंबे समय से वह आदमी को निरंतर सहन कर रहे हैं जैसाकि वह है और उनमें से अनेक खराब हैं; वह उनकी सभी तरह से चिन्ता करते हैं. परंतु तुम, जो कि शीघ्र नष्ट हो जाओगे, गलत करने को तैयार रहते हो, और यह भी तब जबकि तुम

www.PDFshala.com

उनमें से एक हो?

यह आदमी के लिए हास्यास्पद चीज है की वह अपनी खुद की बुराई से भागें नहीं, जो कि संभव है, बल्कि दूसरे आदमियों की बुराई से, जो असंभव है.

जो कुछ भी तार्किक और राजनीतिक (सामाजिक) बुद्धि से, न ही सामाजिक और न ही बुद्धिमत्तापूर्ण, उसका उचित रुप से परीक्षण करना चाहिए की क्या वह हमारे अहित में तो नहीं है.

जब तुमने कोई अच्छा काम किया और दूसरे ने इसे स्वीकार किया, तब तुम तीसरे की तरफ क्यों देखते हो, जैसा मूर्ख करते हैं, चाहे तो अच्छा काम करने की वाहवाही या बदले में कुछ चाहते हैं?

कोई भी व्यक्ति उस चीज को ग्रहण करने से नहीं थकता जो उपयोगी है. बल्कि यह प्रकृति के अनुसार उपयोगी कृत्य है. इसलिए जिसे करना दूसरों के लिए उपयोगी हो उसे ग्रहण करने से थकें नहीं.

बदलाव की प्रकृति ब्रह्मांड को बनाती है. परंतु अभी जो कुछ भी हो रहा है वह पूर्व के परिणाम या निरंतरता के फलस्वरूप होता है; और मुख्य चीज जिसके लिए शासन करने वाली ताकत अपनी खुद की गति को निर्देश देती है किसी तर्कसंगत सिद्धांत से शासित नहीं होते हैं. यदि इसे याद रखा जाए तो यह तुम्हें अनेक चीजों के लिए शांत रखेगा.

www.PDFshala.com

अध्याय- 8

यह प्रतिबिंब खाली प्रतिष्ठा की चाहना को दूर करता है, यह तुम्हारे अधिकार में नहीं है की तुम दार्शनिक की तरह पूरे जीवन, या कम से कम युवावस्था के ऊपर को जीओ; बल्कि अनेक दूसरों और खुद के लिए यह आसान हैं कि तुम दर्शन से दूर रहो. तुम तब अव्यवस्था में फंस जाओगे, यह तुम्हारे लिए आसान नहीं होगा की तुम्हें दार्शनिक की प्रतिष्ठा मिल सके; और जीवन को लेकर तुम्हारी योजना भी इसका विरोध करती है. यदि तुमने वास्तव में देखा है की कहां मसला स्थित हैं, विचारो को दूर करो, कैसे तुम दूसरों को देखते हो, और संतुष्ट हो यदि तुम उस तरह से बाकी के जीवन को जी सकते हो जैसेकि प्रकृति की चाहना है. तब अवलोकन करें की क्या वह चाहता है, और तब कोई चीज उसमें रोड़ा न बने; क्योंकि जिन को बिना कहीं आनंद को पाए इधर-उधर भटकने का अनुभव है, न तो न्याय में, और न ही दौलत में, और न ही प्रतिष्ठा में, और न ही मनोरंजन में, और न ही कहीं भी. तब वह कहां हैं? वह करने में जो कि आदमी की प्रकृति चाहती है. तब आदमी कैसे इसे करे? यदि उसके पास सिद्धांत है जिससे उसके प्रभाव और उसके कृत्य आते हैं. क्या सिद्धांत? वह जो कि अच्छे और खराब से संबंधित हैं: यह विश्वास कि कुछ भी आदमी के लिए अच्छा नहीं है, जो कि उसे न्यायोचित नहीं बना सके, संयम, आदमी को आजाद करता है; और यहां कुछ भी बुरा नहीं है, जो कि खंडन नहीं करता है उसका जिसका वर्णन किया गया है.

हर कृत्य के अवसर पर अपने से पूछें, यह कैसे मेरे से संबंधित हैं? क्या मुझे इस पर पश्चाताप करना होगा? थोड़ा समय और मैं मार जाऊंगा, और सभी कुछ चला जाएगा. क्या और मैं चाहता हूँ, क्या जो मैं कर रहा हूँ वह बुद्धिमान जीवित प्राणी का काम है, और सामाजिक प्राणी का, और उसका जो ईश्वर के समान नियम के अंतर्गत हैं?

सिकंदर और गिईस और पोम्मिउस, किस तरह से वे डायोजनीज और हेराक्लीटस और सुकरात से तुलना में हैं? क्योंकि उनका लगाव भौतिक चीजों से, और उसके कारण से, और उसके उद्देश्य से, और इस सभी के शासन करने का सिद्धांत एक ही था. परंतु दूसरे, कितनी चीजों की वह चिन्ता करते थे, और कितनी चीजों के वह गुलाम थे?

विचार करें आदमी उन्हीं चीजों को फिर से करता रहता है, जबकि वह उनमें खप जाता है.

यह मुख्य चीज है: परेशान नहीं हो, क्योंकि सभी चीजें ब्रह्मांड की प्रकृति के अनुसार होती हैं; और थोड़े से ही समय में तुम कुछ नहीं रहोगे या कहीं नहीं रहोगे, हैंडिया और आगस्तस की तरह

www.PDFshala.com

से. अगले स्थान पर अपनी निगाह को निरंतर एकाग्रचित्त रखो उस पर जो तुम्हारा काम है, और उसी समय याद रखो अच्छा आदमी होना तुम्हारा कर्तव्य है, और यह आदमी के स्वभाव की मांग है, इसे पर बने रहो बिना विचलित हुए; और वह बोलो जो न्याय संगत है, केवल अच्छा स्वभाव शीलता के साथ और बिना पाखंड के बना रहे.

ब्रह्मांड की प्रकृति के लिए यह काम करने को है, उस जगह को हटाना जिसमें यह चीजें हैं, उन्हें बदलना, उन्हें ले लेना, और उन्हें वहाँ से ले जाना. सभी चीजें बदलती हैं, फिर हमें कुछ भी नए से नहीं डरना चाहिए. सभी चीजों से हम परिचित हैं; परंतु उनका विस्तार हमेशा एक सा बना रहता है.

प्रत्येक स्वभाव खुद से संतुष्ट रहती है जब वह अपने रास्ते पर सही चल रहा होता है; और विवेकशील स्वभाव भी अपने रास्ते पर सही चल रहा होता है, जब उसकी सोच में कुछ भी गलत और अनिश्चित नहीं होता है, और जब वह अपने को सामाजिक कृत्यों के अनुसार निर्देशित करता है, जब वह अपनी चाहना और घृणा को उन चीजों के प्रति सुनिश्चित करता है जो उसके अधिकार में हैं, और जब वह हर उस चीज से संतुष्ट होता है जो कि उसे समान प्रकृति द्वारा प्रदान की जाती है. इस समान प्रकृति की प्रत्येक विशेष प्रकृति हिस्सा होती है, जैसे कि पत्ती की प्रकृति पौधे की प्रकृति का हिस्सा होती है; इसके अतिरिक्त की पौधे में पत्ती की प्रकृति उस प्रकृति का हिस्सा होती है जिसकी कोई अनुभूति या कारण नहीं होता है, और वह अवरुद्ध होने का विषय है; परंतु आदमी की प्रकृति उस प्रकृति का हिस्सा है जो कि अवरुद्ध होने का विषय नहीं हैं, और वह बुद्धिमान और न्यायोचित है, क्योंकि वह सभी को उचित मात्रा में और जरूरत, समय, तत्व, कारण, कृत्य और उद्देश्य के अनुसार देता है. परंतु परीक्षण करें, इसे न खोजने की कोशिश करें की कोई भी चीज दूसरे से तुलना करने में सभी तरह से बराबर हो सकती है, बल्कि सभी हिस्सों को एक साथ लें और फिर तुलना करें दूसरे सभी हिस्सों को साथ लेकर.

तुममें पढ़ने या समझने की योग्यता नहीं हो सकती है. परंतु तुम में उद्दंडता को समझने और परखने की योग्यता होनी चाहिए; तुम्हें आनंद और दर्द से ऊपर उठने की योग्यता होनी चाहिए; तुममें शोहरत के लिए चाहना नहीं होनी चाहिए, और मूर्ख और कृतघ्न लोगों के लिए चिढ़ नहीं होनी चाहिए, और न ही उनके लिए चिन्ता.

कोई भी तुम्हारे से किसी की गलती के बारे में सार्वजनिक जीवन में या खुद से सुने. दोष देना खुद को कोसना है किसी महत्वपूर्ण उपयोगी चीज से अनजाना बनते हुए; बल्कि वह जो अच्छा है वह कुछ उपयोगी है, और उचित आदमी उसके बारे में बात करें. परंतु कोई आदमी आनंद के लिए ऐसा नहीं करे. तब आनंद न तो अच्छा या उपयोगी होता है.

यह चीज, खुद में क्या हैं, क्या खुद का निर्माण हैं? क्या उसके तत्व और पदार्थ हैं? और क्या उसका करने योग्य स्वभाव हैं? और वह संसार में क्या कर रहा हैं? और कितने समय तक वह अस्तित्व में बना रहेगा?

www.PDFshala.com

जब तुम नींद से जागो, याद रखो की यह तुम्हारे स्वभाव के अनुरूप है और मानव स्वभाव के अनुरूप है की सामाजिक कृत्य करें, बल्कि सोना तो तर्कहीन प्राणी को भी आता है. जो प्रत्येक व्यक्ति के स्वभाव के अनुरूप है वह खुद के विचित्र रुप से समान है, और खुद के स्वभाव के अनुरूप है, और निश्चित ही ज्यादा सहमती वाला.

निरंतर और, यदि संभव हो, आत्मा पर प्रभाव के हर अवसर पर, लागू करें भौतिकी, ईथिक की और डायलिकी के सिद्धांत.

जिस किसी से आदमी मिलता है, खुद से तुरंत कहें: इस आदमी की गलत और सही के बारे में क्या राय हैं? आनंद और दर्द और प्रत्येक के कारण के लिए, और नाम और बदनामी, मृत्यु और जीवन के लिए उसकी ऐसी राय है, वह मुझे कुछ भी आश्चर्यजनक और अनजानी नहीं दिख रही है, यदि वह ऐसी चीजों को करता है; और मैं अपने दिमाग में रखूं की वह ऐसा करने को विवश है.

यह शर्म की बात है कि आश्चर्य करो की अंजीर का पेड़ अंजीर देता है, उसी तरह से आश्चर्य की बात है की जिस चीज के लिए जो चीज बनी है वह वही चीज उत्पन्न करती है; चिकित्सक और कर्णधार के लिए यह शर्म की बात है की वह आश्चर्य करे की आदमी को बुखार है, या हवा का रुख प्रतिकूल है.

याद रखें की खुद की राय को बदलना और उसका अनुसरण करना जो तुम्हारी राय को बदलता है वह स्वतंत्रता से उतना ही जुड़ा है जितना तुम गलती से जुड़े हो. क्योंकि यह खुद की है, वह गतिविधि जो कि खुद तुम्हारी प्रवृति और निर्णय से बनी रहती है, और तुम्हारी खुद की समझ से कृत्य करती है.

यदि कोई चीज तुम्हारे अधिकार में है, तब तुम क्यों नहीं उसे करते हो? बल्कि यदि यह दूसरे के अधिकार में हैं, तो तुम किसको दोष देते हो? अवसर या देवताओं को? दोनों मूर्खता हैं. तुम किसी को दोष न दो. क्योंकि यदि तुम कर सकते हो, उसे सही करो जो कि उसका कारण है; बल्कि यदि तुम उसे नहीं कर सकते हो, कम से कम चीज को सही करने की खुद से कोशिश करो; बल्कि यदि तुम यह भी नहीं कर सकते हो, तब उससे क्या फायदा की तुम दोष देखो? कुछ भी बिना उद्देश्य के नहीं किया जा सकता है.

वह जो मर जाता है वह ब्रह्मांड के बाहर नहीं गिरता है. वह यहीं रहता है, वह यहीं बदलता है, और विलय हो जाता है अन्य पदार्थों में, जो कि ब्रह्मांड के तत्व है और खुद में. और वह भी बदलते हैं और वह भी अमर नहीं हैं.

हर चीज जिसका अस्तित्व है उसका अंत भी है, चाहे घोड़ा, या पौधा हो. क्यों आश्चर्य करते हो? सूर्य भी यह कहता है, मैं किसी उद्देश्य के लिए हूँ, और शेष देवता भी यही कहते हैं. तब किस

www.PDFshala.com

उद्देश्य के लिए कला होती है? सुख का आनंद लेने के लिए? देखे यदि सहज बुद्धि इसकी अनुमति दे.

प्रकृति का संबंध हर चीज से न केवल उसके अंत से बल्कि उसकी शुरूआत से और उसकी निरंतरता से भी होता है, उसी तरह से जैसे आदमी गेंद को ऊपर फेंकता है. तब क्या अच्छा है गेंद के लिए उसे ऊपर फेंकना, या क्या नुकसान है उसके नीचे आने में, या गिर जाने में? यही चीज प्रकाश के लिए भी कही जा सकती है.

उसे (शरीर को) अंदर से बाहर कर दे, और देखें किस तरह की चीज वह है; और जब वह वृद्ध होगा, किस तरह की चीज वह बन जाएगा, और जब वह बीमार हो.

छोटा जीवन स्तुति करने योग्य और करवाने योग्य दोनों है, और याद रखने योग्य और याद करवाने योग्य है; और यह संसार के इस छोटे से हिस्से में है; और न ही यहां सभी सहमत हैं.

उस चीज को संज्ञान में ले जो तुम्हारे सामने है, क्या यह राय है या कृत्य या शब्द.

इसे न्यायोचित सहन करें: जिससे तुम आज बेहतर बनने की कोशिश करो कल की जगह.

क्या मैं कुछ कर रहा हूँ? मैं इसे करूंगा मानवता के भले के लिए. क्या कुछ मुझे होता है? मैं इसे ग्रहण करूंगा और इसे देवताओं को समर्पित करूंगा, और सभी चीजों के स्रोत को, जिससे वह जो कुछ होता है प्रवाहित होता है.

जैसे नहाना तुम को प्रकट होता है- तेल, पसीना, गंदगी, गंदा पानी, सभी चीजें अलग-अलग- उसी तरह से जीवन का हर हिस्सा है और सभी कुछ.

ल्यूकिला ने विरस को मरते हुए देखा, और फिर ल्यूकिला मारे गए. सिकुंडा ने मैंक्सिमस को मरते हुए देखा, और फिर सिकुंडा मारे गए. ईपीटेनसुस ने डायटोमस को मरते हुए देखा और फिर ईपीटेनसुस मारे गए. ऐनटोनियस ने फैस्टीना को मरते हुए देखा और फिर ऐनटोनियस मारे गए. इसी तरह से सभी कुछ है. कैलर ने हैडरिन को मरते हुए देखा, और फिर कैलर मारा गया. वह तेज बुद्धि वाले और गर्व से भरे हुए लोग, अब कहां हैं? उदाहरण के लिए प्लेटों और डेमेट्रस और उन्हीं के जैसे लोग. सभी क्षण भंगुर लोग बहुत पहले मारे गए. कुछ निश्चित ही थोड़े समय के लिए भी याद नहीं रखे जाते हैं, और अन्य किस्से और कहानी के नायक बन जाते हैं, और फिर अनेक किस्सों से भी गायब हो जाते हैं. याद रखें तब, यह छोटा-सा पदार्थ, खुद से न तो विघटित हो जाए, या सांसें खत्म हो किसी दूसरी जगह स्थापित हो जाएं.

यह आदमी के लिए संतुष्टि देने वाला है की आदमी उचित काम करे. अब यह आदमी के लिए उचित काम होगा की वह खुद के लिए उदार बना रहे, संवेदनाओं पर नियंत्रण रखे, सुखद

www.PDFshala.com

प्रस्तुतिकरण के लिए उचित निर्णय ले, और ब्रह्मांड की प्रकृति और वह चीजें जो उसके साथ हो रही हैं उनका सर्वेक्षण करे.

यहाँ तीन संबंध हैं तुममें और दूसरी चीजों में: पहला उस शरीर से जो तुम्हें ढकता है; दूसरा दिव्य कारण जिससे यह सभी चीजें सभी के पास आती हैं; और तीसरा उनसे जो तुम्हारे साथ रहते हैं.

दर्द शरीर के लिए बुराई हो सकता है- तब शरीर करे जो वह उसके बारे में सोचता है; परंतु यह आत्मा के अधिकार में है की वह अपने धीरज और शांति को बनाए रखे, और न सोचे की दर्द बुराई है. क्योंकि हर निर्णय और गतिविधि और चहना और घृणा खुद के अंदर है, और कुछ भी बुराई उस पर हावी नहीं हो सकती है.

अपने अंदर की सभी कल्पनाओं को पोंछ डालो: यह अब मेरे अधिकार में है की कोई बुराई मेरी आत्मा में न रहे, और न ही कोई गड़बड़ी भी; बल्कि सभी चीजों की तरफ देखकर मैं देखता हूं क्या उनकी प्रकृति है, और मैं उसे उसकी अहमियत के अनुसार उपयोग करता हूं.- यह वह ताकत है जो मुझे प्रकृति ने दी है.

संसद में या हर आदमी से चाहे जो भी वह हो, वह बोलो जो उचित हो, बिना किसी स्वांग के: सहज भाषा का प्रयोग करके.

आगस्तस के साथी, पत्नी, बेटी, संतान, पूर्वज, बहन, स्तुति करने वाले, संबंधी, मित्र, चिकित्सक, और लंबी आयु की कामना करने वाले पुजारी- सभी कोई मारे गए. तब आराम करो, एक आदमी की मृत्यु पर न विचार करते हुए, बल्कि पूरे साम्राज्य की, जैसे कि पोम्पी की; और वह जो मकबरे में दफन हैं- अपनी दौड़ में अंतिम. तब विचार करो उनके सामने क्या परेशानी होती है जो उत्तराधिकारी छोड़ते हैं; और तब, जब कोई उनमें अंतिम होता है. फिर से यहाँ पूरे साम्राज्य की मृत्यु पर विचार करो.

अपने हर कृत्य में जीवन को बेहतर तरीके से जीना तुम्हारा कर्तव्य है; और यदि हर कृत्य अपने कर्तव्य का पालन करता है, जहां तक संभव हो, इसे बनाए रखें; और कोई भी तुम्हें भयभीत नहीं कर सकता है की हर कृत्य अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करे. परंतु कुछ बाहरी इस रास्ते पर खड़ी हो सकते हैं? कुछ भी उस रास्ते पर खड़ा नहीं हो सकता है जिस पर तुम न्यायसंगत और गंभीरता से और विचार करके काम कर रहे हो. परंतु कुछ सक्रिय ताकतें रुकावट डाल सकती हैं? बहुत अच्छा, तब रुकावट में घुसकर और अपने प्रयासों उसे बदल दो, अपने अगले प्रयास को तत्काल उसके आगे रखो जो रुकावट है, और उसके अनुकूल बनो जिस हम कह रहे हैं.

दौलत या समृद्धि बिना घमंड के ग्रहण करो; उसके जाने के लिए तैयार रहो.

क्या तुमने हाथ, या पैर, या सिर को कटा हुआ देखा है जो शरीर से दूर पड़ा हो, उसी तरह से

www.PDFshala.com

आदमी अपने को बना लेता है, जितना संभव होता है, यदि वह इस पर विचार नहीं करता है की क्या हो रहा है, और अपने को दूसरों से अलग कर लेता है, या कुछ असामाजिक करता है. कल्पना करें की उन्होंने अपने को प्राकृतिक एकता से खुद को पृथक कर लिया है जबकि वह प्रकृति के हिस्सा हैं, परंतु अब उन्होंने अपने का अलग कर लिया है- ईश्वर ने ऐसा करने की किसी अन्य हिस्से को अनुमति नहीं दी है, की वह पृथक हो जाए और फिर से जुड़ जाए. बल्कि विचार करें उस दयालुता पर जिससे उसने आदमी को प्रतिष्ठित किया है, क्योंकि उसके अधिकार में है की ब्रह्मांड से अपने को अलग न करे; और जब वह अलग हो जाए, वह उसे वापस आने की अनुमति देता है और जुड़ने की और अपने को हिस्सा बनाने की.

जैसे ब्रह्मांड की प्रकृति ने सभी तर्क संगत जीवों को वह सभी ताकत दी हैं जो उसके पास हैं, उसी तरह से हमने भी यह ताकत प्राप्त की है. जैसे कि ब्रह्मांड की प्रकृति हर चीज को जो कि रास्ते में होती है और विरोध करती है उसे बदलती है और स्थापित करती है पूर्व निर्धारित स्थान पर और बनाती है खुद का हिस्सा, उसी तरह से तार्किक प्राणी अपनी सभी रुकावटों को अपना बनाता है, और उसे उस उद्देश्य के प्रयोग करता है जिसके लिए उसे बनाया गया है.

तुम अपने को पूरे जीवन को बारे में सोच कर परेशान न करो. यह सोच तत्काल तुम्हारा आलिंगन उन परेशानियों से न करा दे जिन्हें तुम सोचते हो की तुम्हारे सामने आएंगी: बल्कि हर अवसर पर खुद से पूछें, इसमें क्या है जो कि असहनीय है और पहले का असर है? जिसको स्वीकार करने में तुम्हें शर्म लग रही है. आगे यह ध्यान रखो कि न तो भविष्य और न ही भूत तुम्हें दर्द दे, बल्कि केवल वर्तमान ही. बल्कि यह थोड़े से में ही बदल जाएगा, यदि तुम इस नियंत्रण में रखो, और यह बच्चे की बुद्धि है, यदि यह इसे बनाए नहीं रखती है.

क्या पैंथिया या प्रगिमिस अब विरस में दफन हैं? क्या चौंरियस या डायोटिमस हैंडिया में दफन हैं? यह हास्यास्पद है. तब माना की वे वहां पर दफन हैं, क्या मृतक इससे सचेत हैं? और यदि मृतक इससे सचेत हैं, क्या वह इससे खुश हैं? और यदि वह इससे खुश हैं, क्या वह उन्हें अमर बना रहा है? क्या यह परंपरा का क्रम है की यह व्यक्ति पहले वृद्ध औरत और वृद्ध आदमी बनें और फिर मरें? तब वह क्या करें जब वह मर जाएं? यह सभी कुछ अब गंदी बदबू और खून हैं?

यदि तुम तीक्ष्णता से नहीं देख सकते हो, तब समझदारी से देखें और निर्णय लें, दार्शनिक यह कहते हैं.

तार्किक प्राणी के संविधान में कोई भी नियति ऐसी नहीं देखता हूं जो कि न्याय के विपरीत हो; बल्कि मैं उस नियति को देखता हूं जो कि कामुकता से प्यार करने के विरोध में होती है, और वह संयम है.

यदि तुम उस राय को बदल सकते हो जो तुम्हें दर्द देती है, तब तुम पूर्णतः सुरक्षित हो. यह क्या है? एक कारण. परंतु मैं एक कारण नहीं हूं. ऐसा ही है. तब खुद के कारण खुद को परेशान न

www.PDFshala.com

करें. बल्कि यदि तुम्हारा कोई हिस्सा पीड़ित है, उसकी खुद से उसके बारे में राय हो.

संवेदनाओं में रुकावट की अनुभूति कामुक स्वभाव के लिए बुरी है. चाहना में रुकावट भी उसी तरह से कामुक स्वभाव के लिए बुरी है. और कुछ और चीज भी योजनाओं के निर्माण के लिए रुकावट और बुराई हैं. इसलिए वह जो बुद्धि के लिए रुकावट है वह बुद्धिमान स्वभाव के लिए भी रुकावट है. इन सभी चीजों को अपने ऊपर लागू करें. क्या दर्द या संवेदनाओं का आनंद तुमको प्रभावित करता हैं? संवेदना उस तरफ देखती हैं- क्या कोई रूकावट तुम्हारे प्रयासों का विरोध करती है? दरअसल यदि तुम इस प्रयास को पूरी तरह (बिना शर्त और पूरे मन से)कर रहे हो, निश्चित ही यह रुकावट तुम्हारे लिए बुराई है तर्क संगत प्राणी के रुप में. परंतु यदि तुम सामान्य चीजों को विचार में लाओगे, तब तुम न तो चोट खाओगे और न ही अवरूद्ध होगे. चीजें जो कि समझने के लिए उचित हैं कोई आदमी बाधा नहीं बनेगा, और न ही आग, और न ही लोहा, और न ही निरंकुशता, और न ही दुरुपयोग, उसे किसी तरह से छूएगा. जब वह पूर्ण बन जाती है, वह पूर्ण बनी रहती हैं.

यह मेरे लिए उचित नहीं है की मैं खुद अपने को दर्द दूं, साथ ही मैं किसी दूसरे को जान बूझ कर कभी दर्द दूं.

विभिन्न चीजें विभिन्न लोगों को खुश करती हैं. परंतु यह मेरी खुशी है की मैं अपने पर शासन करने वाली चीजों पर नियंत्रण रखूं की वह मुझे किसी आदमी या किसी चीज से जो आदमियों के साथ होती है से दूर न रखे, बल्कि उनकी तरफ देखे और ग्रहण करे सभी कुछ जो आँख देखती हैं और प्रयोग करूं सभी चीजें उनके मूल्यों के अनुसार.

देखे इस वर्तमान समय में तुम कितने सुरक्षित हो; क्योंकि जो मरने के बाद भी ख्याति को चाहते हैं विचार करें इस समय के बाद भी आदमी ठीक उसी तरह का होता है जिसे वह अभी सहन नहीं कर सकते हैं; और दोनों मरणशील हैं. और उन्हें फिर भी क्या है यदि यह आदमी इस और उस समय के बाद आवाज को बदल दें, या यह या वह राय रखें उनके बारे में?

मुझे लेकर जाओ और स्थापित करो जहां तुम चाहो; वहां के लिए में अपने देवीय हिस्से को शांत रखूंगा, यदि वह उन चीज को महसूस कर सकें और उसके अनुसार आराम से व्यवहार कर सकें. क्या स्थिति में बदलाव उचित कारण है की क्यों मेरी आत्म नाखुश हो और उससे बदतर जैसी वह थी, असंतुष्ट, विस्तरित, संकोची, ऊधमी? और कौन उस कारण को खोज सकता है जो कि इसके लिए उचित कारण हैं?

कुछ भी किसी आदमी को नहीं हो सकता जो मानवीय दुर्घटना नहीं है, और न ही बैल को जो कि बैल की प्रकृति के अनुरूप नहीं है, और न ही बेल को जो बेल की प्रकृति के अनुकूल नहीं है, और न ही पत्थर को जो कि पत्थर के अनुकूल नहीं है. फिर जो सभी चीजों के साथ होता है वह व्यवहारिक और स्वाभाविक हैं, तब तुम शिकायत क्यों करते हो? क्योंकि आम स्वभाव कुछ भी

www.PDFshala.com

ऐसा नहीं लाता जिसे कि वह धारण न कर सके.

जब तुम किसी बाहरी चीज से दर्द को पाते हो, वह तब वह चीज नहीं होती है जो तुम्हें परेशान करे, बल्कि तुम्हारा खुद का उस चीज के लिए निर्णय. और यह तुम्हारे अधिकार में है की इस निर्णय को पोंछ डालो. परंतु यदि कोई अन्य चीज तुम्हारे खुद के अधिकार में तुम्हें दर्द देती है, तब क्या चीज तुम्हें इस निर्णय को लेने से रोकती है? और यदि तुम्हारा खुद भी दर्द देता है क्योंकि तुम उस विशेष चीज को नहीं कर रहे हो जो सही है, तब तुम कृत्यों को क्यों नहीं करते दोष देने की जगह? बल्कि यदि कोई न जीते जा सकने वाली रुकावट इसमें है? तब शोक न करें, उस कारण के लिए जो आप पर निर्भर नहीं है, क्योंकि यह तुम्हारे अधिकार में नहीं है. बल्कि यदि तुमको दर्द होता है क्योंकि तुम कुछ विशेष चीज को नहीं कर पा रहे हो जो तुम्हें सही दिख रही हैं, तब तुम उसे क्यों नहीं करते शिकायत करने की जगह? परंतु यदि कुछ न हटाए जा सकने वाली रुकावट हैं?- तब तुम शोक न करो, उस कारण के लिए जिसे नहीं किया गया जो उस पर निर्भर नहीं है. – अब बने रहने का कोई कारण नहीं है यदि यह नहीं होता है. -तब इस चीज को जीवन से संतोषपूर्वक निकाल दें, जैसे कि जब कोई मार जाता है जो पूरी तरह से सक्रिय होता है, और उन चीजों से मोहित होता है जो रुकावट हैं.

याद रखें शासन करने वाली ताकत अजेय है, यदि आत्म नियंत्रण खुद से संतुष्ट है, यदि वह ऐसा कुछ नहीं करता है जिसे उसने नहीं चुना है, तब भी जब हठ उसका विरोध कर रही हो. तब क्या होगा जब वह किसी चीज को बारे में उस निर्णय पर पहुंचती है जिसे कारण और इरादे का समर्थन हो? इसलिए जो बुद्धि सनक से आजाद है, उस आदमी के लिए उससे ज्यादा कुछ भी सुरक्षित नहीं है जो कि हट जाए या मना कर दे और भविष्य में अजेय है. वह जो इसे नहीं देखता है वह अंजान आदमी है; बल्कि जो इसे देखता है परंतु हटने से इनकार कर देता है वह दुःखी है.

उससे अधिक अपने से कुछ न कहें जो पहला प्रस्तुतिकरण संकेत देता है. माना कि तुम को कोई बताता है की कोई विशेष व्यक्ति तुम्हारे बारे में गलत कह रहा है. यह बताया जाता है; परंतु तुम्हें चोट लगी है, इसके बारे में नहीं बताया जाता है. देखें मेरा बेटा बीमार है. मैं यह देखता हूं; परंतु वह खतरे में है, यह मैं नहीं देखता हूं. अतः तब पहले प्रस्तुतिकरण पर रुको, और खुद से कुछ न जोड़ो, तब तुम्हें कुछ नहीं होगा. या कुछ जोड़े, उस आदमी की तरह से जो सभी कुछ जानता है जो कि संसार में होता है.

खीरा कड़वा है- उसे फैंक दो- सड़क पर झाड़ी है- उससे बच के निकल जाओ.- यह काफी है. कुछ न जोड़ो, और क्यों ऐसी चीजें संसार में बनी हैं? तुम उस आदमी का उपहास बनाते हो जिसके स्वभाव से तुम परिचित हो, जैसे तुम उपहास बनाते हो उस बढ़ई का या जूते बनाने वाले का यदि तुम दोष देखते हो क्योंकि तुमने कार्यशाला में देखा चीजों का कतरन को उन चीजों की जिन्हें वह बनाते हैं. और उनके पास स्थान होते हैं जहां वह इन कतरनों को फैंकते हैं, और प्रकृति में भी कोई बाहरी जगह नहीं है; बल्कि प्रकृति का आश्चर्यजनक हिस्सा है की वह इन्हीं चीजों से खुद को तैयार करती है, उसके अंदर जो भी चीज खराब होती है, या पुरानी होती है या बेकार होती है खुद से बदलती है, और दूसरी नई चीज में बदल जाती है, जिसके लिए उसे कुछ भी

www.PDFshala.com

बाहरी नहीं चाहिए होता है और न ही कई जगह जहां पर वह खराब चीजों को रख सके. वह अपने में खुद के लिए जगह, और अपनी सामग्री और कला को रखती है.

न तो तुम्हारे कृत्य सुस्त हों और न ही अनुचित विधि के हो, और न ही उनके विचारों में भटकाव हो, और न ही आत्मा में अंतरिक विवाद और न ही बाहरी प्रवाह, और न ही जीवन इतना व्यस्त हो की उसके लिए आराम का समय ही न हो.

माना की आदमी अपने को मारता है, कटता है और नष्ट करता है. तब क्या यह चीजें मन को शुद्ध कर सकती हैं, बुद्धिमान, शांत, न्यायोचित बना रहने के लिए? उदाहरण के लिए, यदि आदमी पारदर्शक शुद्ध झरने में खड़ा हो, और उसे नष्ट करे, तब भी झरना कभी शुद्ध पीने के पानी तो नहीं रोकता है; और यदि वह उसमें मिट्टी डालता है या उसमें गंदगी करता है, वह तेजी से उसे खत्म कर देगा और उसे बहा देगा, और वह उसे बिल्कुल भी प्रदूषित नहीं रहने देगा. तब क्यों न तुम हमेशा बहने वाले झरने बनो और केवल कुंआ नहीं? खुद को हर पल स्वतंत्र बनाए रखते हुए संतोष, सादगी और शीलता से जोड़ते हुए.

वह जो यह नहीं जानता की संसार क्या है, वह नहीं जानता की वह कहाँ है. और वह जो नहीं जानता की किस उद्देश्य के लिए संसार का अस्तित्व है, वह नहीं जानता की वह कौन है, और न ही की संसार क्या है. बल्कि वह जो यह बताने में असफल है कि किस उद्देश्य से खुद उसका अस्तित्व है. क्या तब वह सोचता है अपने बारे में जो स्तुति से बचता है या चाहता है, उन लोगों से जो नहीं जानते कहाँ वह हैं या कौन वह हैं?

क्या वह उस आदमी से स्तुति पाना चाहेंगे जो खुद को हर घंटे तीन बार श्राप देता है? क्या वह उस व्यक्ति को संतुष्ट करना चाहेंगे जो खुद को संतुष्ट नहीं कर सकता है? क्या आदमी अपने को संतुष्ट कर सकता है जो अपनी उस हर चीज पर पश्चाताप करता है जिसे वह करता है?

बहुत अधिक समय तब तुम्हारी सांसें उस हवा से न जुड़ी रहें जो चारों तरफ हैं, बल्कि बुद्धि भी अब सम स्वर में बुद्धि के साथ रहे जो कि सभी चीजों को गले लगाती है. क्योंकि बुद्धिमान शक्ति बहुत अधिक सभी चीजों में फैली हुई नहीं होती है और सभी चीजों में व्याप्त नहीं होती है जो कि उसे अपनी तरफ खींचना चाहती है उस हवाई ताकत की तरह जो उसे सांस देती हैं.

आमतौर पर दुष्टता ब्रह्मांड को बिलकुल भी हानि नहीं पहुंचाती है; और विशेषतः एक आदमी की दुष्टता दूसरे की हानि नहीं करती है. वह केवल उसे हानिकारक होती है जो अपनी ताकत को उसके अधिकार में दे देता है, जिससे की वह उसको चुन सके.

मेरी स्वतंत्र इच्छा से मेरे पड़ोसी की स्वतंत्र इच्छा उसी तरह से अलग है जैसेकि उसकी सांस और मांस. जबकि हम विशेषतः एक दूसरे की खातिर बने हैं, फिर भी हम पर शासन करने वाली ताकत का अपना खुद का अधिकार है, नहीं तो मेरे पड़ोसी की दुष्टता मेरा नुकसान होती, जिसे

www.PDFshala.com

ईश्वर ने इस क्रम में नहीं चाह है की मेरी अप्रसन्नता दूसरे पर निर्भर करे.

सूर्य ढलता हुआ प्रकट होता है, और सभी दिशाओं में निश्चित ही फैलता हुआ, फिर भी वह ढलता नहीं है. यह फैलना विस्तार है: उसी तरह उसकी किरणों को रश्मि कहा जाता है क्योंकि वह विस्तरित होती हैं. कोई भी परख सकता है कि किस तरह की यह किरण होती हैं, यदि कोई देखता है कि सूर्य की किरण अंधेरे कमरे में किसी छेद से गुजर रही है, तब वह सीधी रेखा में गुजर रही होती है, और विभाजित हो जाती है जब वह किसी ठोस से मिलती है जो रास्ते में पड़ता है और अवरोध पैदा करता है. परंतु वहां भी प्रकाश स्थिर रहता है फिसलता या गिरता नहीं है. उसी तरह से समझ का प्रसार होना चाहिए, और किसी भी तरह से उसे फिसलना नहीं चाहिए, बल्कि विस्तार होना चाहिए, और वह कोई हिंसक या साहसी टकराव रुकावट से न करे जो उसे मिलती है. क्योंकि रुकावट को खुद प्रकाशित होने से वंचित कर रही है, यदि वह स्वीकार नहीं करती है.

वह जो मृत्यु से डरता है चाहे तो संवेदना के खोने से डरता है या दूसरी तरह की संवेदना से. लेकिन यदि तुम में कोई संवेदना नहीं है तो तुम किसी हानि से न डरो; और यदि तुम चाहते हो दूसरी तरह की संवेदना, तो तुम दूसरी तरह के जीवित प्राणी होगे और तुम जीने के लिए संघर्ष नहीं करोगे.

आदमी का अस्तित्व दूसरे की खातिर है. उन्हें तब सिखाओ या उनके साथ सहन करो.

एक तरीके से तीर चलता है, दो तरह से दिमाग. दिमाग निश्चित ही, दो तरह से जब वह सावधान रहता है और जब वह जांच करता है, आगे बढ़ता है अपने लक्ष्य की तरफ.

हर आदमी के शासन करने वाले विषय में प्रवेश करो; और दूसरा तुम्हारे में कर सके.

www.PDFshala.com

अध्याय- 9

वह जो अन्याय करता है वह अन्यायी है. क्योंकि संसार की प्रकृति ने विचारशील प्राणी को एक दूसरे की मदद के लिए अपनी योग्यता के अनुसार बनाया है, परंतु किसी भी तरह से दूसरे को नुकसान पहुंचाने को नहीं, जो अपनी आत्मा का अनादर करता है, वह निश्चित ही महानतम देवताओं के प्रति असम्मान दिखाता है. और वह उनसे झूठ बोलता है; क्योंकि सभी चीजें अपनी प्रकृति के अनुसार व्यवहार करती हैं; और जो चीजें हैं उसका संबंध सभी चीजों से है जो अस्तित्व में हैं. और आगे, इस संसार की प्रकृति को सत्य नाम दिया गया है, और यह उन सभी चीजों के होने का मुख्य कारण है जो सत्य हैं. वह जो जान-बूझकर झूठ बोलता है वह दोषी है उन कृत्यों के लिए जिन्हें वह अन्याय से जान-बूझकर करता है; और वह जो अनजाने में झूठ बोलता है, वह ब्रह्मांड की प्रकृति का त्याग करता है, और वह संसार की प्रकृति के विरूद्ध लड़कर व्यवस्था को खराब करता है; वह उसके खिलाफ लड़ता है, जो कि सत्य के विपरीत खुद की तरफ मुड़ती हैं, क्योंकि उसने स्वभाव से उन शक्तियों को पा लिया है जिनको नकार कर वह इस काबिल नहीं रहा है की वह सत्य में से असत्य का भेद कर सके. और निश्चित ही जो आनंद को अच्छा समझकर चाहता है, और दर्द को बुरा समझकर बचना चाहता है, वह नास्तिक है. ऐसा व्यक्ति निश्चित ही ब्रह्मांड की प्रकृति में दोष पाता है, आरोप लगाते हुए की वह बुरे लोगों को चीजें सौंपता है और इसके विपरीत बुरे इससे वंचित रहते हैं, क्योंकि बुरे अकसर सुख का आनंद उठाते हैं और उन चीजों को अधिकार में रखते हैं जो सुख देती है, जबकि अच्छों के हिस्से में दर्द आता है और वह चीजें जो दर्द देती हैं. और वह जो दर्द से डरता है वह उन कुछ चीजों से भी डरता है जो कि संसार में होती है, और चाहे वह पाप ही क्यों न हो. और वह जो आनंद की तरफ दौड़ता है, वह अन्याय से नहीं बच सकता है, और यह पाप है. अब उन चीजों के संदर्भ में जिनसे ब्रह्मांड की प्रकृति समान रूप से प्रभावित है- इसने दोनों को नहीं बनाया है, जब तक वह दोनों के लिए समान रूप से प्रभावित नहीं होती है- इसके लिए वह जो प्रकृति का अनुसरण करते हैं वह उसी के अनुसार बनें, और समान रूप से प्रभावित हों. दर्द के संदर्भ में, और फिर आनंद, या मृत्यु और जीवन, या सम्मान और तिरस्कार, जिसे ब्रह्मांड की प्रकृति समान रूप से लागू करती है, वह जो कोई भी समान रूप से प्रभावित नहीं होता है जानबूझकर अश्रद्धा का कर्म कर रहा है. और मैं कहता हूं ब्रह्मांड की प्रकृति दोनों को समान रुप से देती है, इसकी जगह कहना की यह उन सभी को समान रूप से होता है जो कि एक तरह के हैं और उनको जो उसके बाद विधि के विशेष पुण्य से आए हैं, जिसके अनुसार वह निश्चित शुरूआत करते हैं चीजों के इस अनुक्रम का, कल्पना करते हुए चीजों के विशेष सिद्धांत की जिसे होना चाहिए, और किसी चीज के होने और बदलाव की ताकत को निर्धारित करते हुए और ऐसा ही होते रहने की.

www.PDFshala.com

आदमी के लिए सबसे खुशी की बात होगी की वह मानवता से बिना झूठ बोले, पाखंड, और विलासिता और गर्व किए विदा ले सके. फिर भी सांसो को छोड़ना जब आदमी के पास काफी यह चीजें हो वह सबसे अच्छी अगली यात्रा है, जैसी कि कहावत है. इसलिए तुम्हें इन बुराइयों बचना चाहिए, और इस महामारी से बच निकलना चाहिए? इस महामारी को न समझने से, संभावना है की कोई ऐसे भ्रष्टाचार या वातावरण में बदलाव तुम्हें घेर ले. क्योंकि यह महामारी जानवरों में भी है जब तक वह जानवर हैं; परंतु कुछ आदमियों में इस महामारी से बचे रहते हैं आदमी होकर भी.

मृत्यु से डरो नहीं, बल्कि उसे अच्छी तरह से समझो, क्योंकि वह उन चीजों में से है जो प्रकृति की इच्छा से है. उसी तरह से जैसे हम युवा होते हैं और फिर वृद्ध होते हैं, बड़े होते हैं और युवावस्था को पाते हैं, और फिर दाँत, दाढ़ी और सफेद बाल, और फिर जन्म देते है, और अन्य प्राकृतिक काम जो जीवन के मौसम लेकर आते हैं, वह भी विघटन है. यह, तब, आदमी के चरित्र को दर्शाती है, की न तो लापरवाह, और न ही अधीर, और न ही घृणा युक्त बनो मृत्यु के प्रति, बल्कि इसका इंतजार करो जैसे यह प्रकृति का एक काम है. जैसे तुम उस समय का इंतजार करते हो जब बच्चा मां के गर्भ से बाहर आता है, उसी तरह से तैयार रहो उस समय के लिए जब तुम्हारी आत्मा इस आवरण को छोड़ दें. बल्कि यदि तुम अश्लील तरह का आराम भी चाहते हो जो तुम्हारे हृदय में पहुंच सके, तब तुम मृत्यु को सबसे अच्छी तरह से राज़ी करते हो उन तथ्यों को देखते हुए जिससे तुम दूर होने जा रहे हो, और उन लोगों की नैतिकता जिनसे तुम घुल मिल नहीं सकते हो. क्योंकि यह सही तरीका नहीं है आदमियों से आहत होने का, बल्कि यह तुम्हारा कर्तव्य है की उनकी चिन्ता करो और उनसे सज्जनता से व्यवहार करो; और फिर भी याद रखो तुम्हारा प्रस्थान उन लोगों के साथ नहीं होगा जिनके तुम्हारे समान सिद्धांत हैं. क्योंकि यह अकेली चीज है, यदि कोई वहां है, जो हमारे लिए विपरीत रास्ते बनाती है, और जीवन से जोड़ती है, उन लोगों के साथ रहने की अनुमति देती है जिनके हमारे जैसे समान सिद्धांत हैं. बल्कि अब खुद देखो की कितनी परेशानी उत्पन्न होती है उन लोगों के मतभेद से जो साथ-साथ रहते हैं, जिसके लिए तुम कह सकते हो, जल्दी आओ हे मृत्यु, ऐसा नहीं हो सकता, की मैं अपने को भूल जाऊं.

वह जो गलत करता है खुद के खिलाफ गलत करता है. वह जो अन्याय करता है, वह खुद से अन्याय करता है, क्योंकि वह खुद को बुरा बनाता है.

वह अकसर अन्याय करता है जो निश्चित चीजें नहीं करता है; बल्कि वह नहीं जो निश्चित चीजें करता है.

उसकी वर्तमान राय समझ पर आधारित होती है, और उसका वर्तमान व्यवहार सामाजिक हित के लिए निर्देशित होता है, और उसके वर्तमान स्वभाव में संतोष हर उस चीज के लिए जो होता है- काफी होता है.

कल्पना को पोंछ दो: चाहना की जांच करो: भूख को बुझाओ: शासन करने वाले ताकत को अपने नियंत्रण में रखो.

www.PDFshala.com

उन जानवरों के लिए जिनके पास कुछ उद्देश्य नहीं है एक जीवन दिया गया; लेकिन उचित जानवर के लिए एक बुद्धिमान आत्मा; जैसेकि सभी चीजों के लिए एक पृथ्वी है जो मिट्टी की प्रकृति के हैं, और हम एक रोशनी से देखते हैं, और एक हवा से सांस लेते हैं, हम सभी लोग जिनके पास देखने की सुविधा है और सभी जिनके पास जीवन है.

सभी चीजें जो कि किसी चीज में हिस्सा लेती हैं जो कि सभी के हित में हो, सभी उस दिशा में जाती हैं जो उनके हित में हो. हर चीज जो धरती के समान है वह धरती में मिलना चाहती है, हर चीज जो द्रव्य है वह द्रव्य के समान बहना चाहती है, और हर चीज जो दूसरे ब्रह की है उसी तरह से व्यवहार करती हैं, जिससे की कुछ चीज उन्हें बाँध कर रख सके. आग ऊपर की तरफ उठती है, परंतु हर उस आग से जुड़ना चाहती है जो वहां पर है, जिससे की जो भी पदार्थ जो सुखा हो, वह जल सके, क्योंकि उससे जुड़ने पर जो जलता नहीं है उसके रास्ते में रुकावट बन सकता है. उसी तरह हर चीज उसमें हिस्सा लेती है जिससे सामान उद्देश्य सफल हों, और आगे बढ़ सकें. जितनी ज्यादा वह दूसरी चीजों की तुलना में बेहतर होती है, उतनी ज्यादा लगातार दूसरों के जैसी बनने को तैयार रहती हैं और उनके समान होना चाहती हैं. इसी तरह से अनेक प्राणियों में हम इसे पाते हैं, मधुमक्खी का झुंड, जानवरों का झुंड, और पक्षियों का स्वभाव, और उसी के समान प्रेमियों का; क्योंकि जानवरों में भी आत्मा होती है, और जो ताकत उन्हें पास-पास लेकर आती है वह खुद से महान अंश में दिखती है, और उस तरह से की वह कभी पेड़ों में और न ही पत्थरों में और न ही पौधों में दिखती है. परंतु तर्कसंगत प्राणी में वहां राजनीतिक समुदाय और दोस्ती होती है, और परिवार और लोगों की बैठकें; और युद्ध में, संधि में और विद्रोह में भी. बल्कि उन चीजों में भी जो अभी भी बेहतर हैं, जबकि वह एक दूसरे से अलग हैं, उनके काम करने के तरीकों में एकता दिखती है, जैसेकि तारों में. अतः वह चीजें जो कि अलग-अलग होती है वह भी एक समान दिखने में सहानुभूति रखती हैं. देखें तब अब क्या स्थान लेगा. केवल तर्कसंगत प्राणी अब निजी चाहना और रुझान को भूल चुका है, और अकेले उसमें साथ-साथ चलने की वृति नहीं दिखती है. जबकि आदमी इस तरह के संगठनों से बचना चाहता है, वह उनमें फंसता है, क्योंकि उनकी प्रकृति उसके लिए काफी मजबूत हैं; और तुम देख सकते हो, जिसे मैं कहता हूं, यदि तुम केवल अवलोकन करो. जल्द ही, तब, तुम देखोगे की संसार की कोई भी चीज सांसारिक चीज के संपर्क में उतनी तेजी से नहीं आती है, जितना की आदमी जो दूसरे आदमी से कितना भी अलग क्यों न हो.

आदमी और ईश्वर दोनों और ब्रह्मांड फल उत्पन्न करते हैं. उचित मौसम में हर कोई उसे उत्पन्न करता है. परंतु यदि उपयोग ने खुद से इन्हें उत्पन्न किया है, तब यह कुछ नहीं हैं. कारण सभी के लिए और खुद के लिए परिणाम देता है, और उससे अन्य चीजों के लिए समान कारणों से खुद से यहां उत्पाद हैं.

यदि तुम सक्षम हो, तब उन लोगों को अपनी शिक्षा से सही करने की कोशिश करो जो गलत हैं; परंतु यदि तुम यह नहीं कर पा रहे हो, याद रखो उनको यह आसक्ति किसी कारण से दी गई है. और देवता भी ऐसे लोगों के लिए आसक्त हैं; और कुछ कारण से वह उनकी स्वास्थ्य, प्रतिष्ठा,

www.PDFshala.com

दौलत देने में मदद करते हैं; कितने दयालु वह हैं. और यह भी उनके अधिकार में है; या कहें, कौन उन्हें रोकता है?

मनहूस की तरह से मेहनत न करो, और न ही उसकी तरह जिस पर दया आए या सराहना पाए: बल्कि अपने दिल को एक चीज के लिए निर्देशित करें, अपने को गतिमान रखें और खुद से जांच करें, जैसी सामाजिक कारण को जरूरत हो.

आज में परेशानी से निकल गया, या मैंने सभी परेशानी पैदा की, यह बाहर से नहीं, बल्कि अंदर से और मेरे दृष्टिकोण में है.

सभी चीजें समान हैं, अनुभव में परिचित, और समय में अल्पकालिक, और मसले में बेकर. सभी कुछ अभी वैसा ही है जैसा वह तब था जब हम परेशान थे.

चीजें हमारे से खड़ी होती है, खुद व खुद, न तो खुद को जानते हुए, और न ही किसी निर्णय को प्रकट करते हुए. यह क्या है, तब, जो उनको परखता है? सत्तारूढ़ संकाय.

न की सहनशीलता में, बल्कि तर्कसंगत सामाजिक जानवर की गतिविधि में बुराई या अच्छाई होती है. उसका पुण्य और उसका पाप उसकी सहनशीलता में नहीं बल्कि उसकी गतिविधि में होता है.

वह पत्थर जिसे ऊपर फेंका गया है उसमें कोई बुराई नहीं की वह नीचे आए, और न ही कुछ अच्छा की उसे ऊपर फेंका जाए.

आदमी को नेतृत्व देने वाले सिद्धांत के अंदर समा जाओ, और तुम देखोगे किस चीज से वह डरते हैं और किस तरह से वह अपने को देखते हैं.

सभी चीजें बदल रही हैं: और तुम खुद सतत बिखराव और निरंतर विखंडन की तरफ हो, और सारा ब्रह्मांड भी.

यह तुम्हारा कर्तव्य है की तुम दूसरे आदमी के गलत कृत्य को वहीं छोड़ दो जहाँ पर वह है.

किसी गतिविधि को बंद करना, आंदोलन और राय को रोकना, और एक तरह से अपनी मृत्यु को, कोई बुराई नहीं है. अब अपने विचारों को अपने जीवन की तरफ ध्यान से लगाओ, तुम्हारा जीवन बच्चे की तरह से, युवक की तरह से, पुरुष होने पर, वृद्ध होने पर, इन सभी बदलावों का अंत हुआ. क्या कोई चीज तब डरने की है? अपने विचार को अब घुमाओ जीवन दादा के आश्रय में, फिर माता के आश्रय में, फिर पिता के आश्रय में; और तब तुम खुद से अनेक अंतर और बदलाव और अंत को खोज सकोगे, अपने से पूछो, क्या कोई चीज तब डरने की है? इसी तरह से, तब, न

www.PDFshala.com

तो रोकना और बंद करना या बदलाव क्या तुम्हारे पूरे जीवन को डरने की चीज है.

झिझकते हो अपने खुद के और ब्रह्मांड के और पड़ोसी पर शासन करने वाली ताकत के परीक्षण से: तब तुम्हारा खुद इसे न्याय संगत बनाएगा: और वह जो ब्रह्मांड का है, वह याद दिलाएगा जिसका तुम हिस्सा हो; और वह जो पड़ोसी का है, तब तुम यह जानो कि उसने यह अनजाने में या जान बुझ कर किया है, और तुम इस पर विचार करो उसपर शासन करने वाली ताकत उससे जुड़ी हुई है.

तुम्हारा व्यवहार सामाजिक व्यवस्था का अवयव है, इस लिए तुम्हारा हर कृत्य सामाजिक जीवन का एक अवयव हो. जो भी कृत्य तुम करते हो वह सामाजिकता के तत्काल या दूरगामी अंत का संदर्भ न हो, जिसके आंसू जीवन भर कोसें, और ऐसा करने की अनुमति भी न दो, और यह विद्रोह की प्रकृति है, जब आदमियों की भीड़ में आदमी अपने को आम सहमति से अलग करने की कोशिश करता है.

छोटे बच्चों के झगड़े और उनके खेल, और मृत शरीर के आगे रोना, क्या सभी कुछ है; और क्या यह उत्तेजना हमारी आंखों को स्पष्ट देखने देती है.

किसी वस्तु की विशेषताओं को देखो, और उसे उसके पदार्थ वाले हिस्से से अलग कर दो, और फिर उस पर मनन करो; तब उस समय को जानने की कोशिश करो कब तक यह चीज उस स्वभाव की स्वीकार करने योग्य बनी रहेगी.

तुम अनंत परेशानियों को पाते हो यदि तुम शासन करने वाली ताकतों से संतुष्ट नहीं हो, जब वह चीजें करती है जिसे प्रकृति में उसे करने के लिए तैयार किया है. बल्कि इससे ज्यादा.

जब कोई दूसरा तुम्हें दोष देता है या घृणा करता है, या जब कोई आदमी तुम्हारे लिए कुछ गलत कहता है, तब उसकी आत्मा को जानने का प्रयास करें, उसके अंदर झांकें, और देखें किस तरह का आदमी वह है. तब तुम खोज पाओगे की इसका कोई कारण नहीं है की परेशान हुआ जाए कि वह आदमी ऐसा है या उसकी इसके बारे में यह राय है. बल्कि तुम्हें उससे सही व्यवहार करना चाहिए, क्योंकि स्वभाव से वह मित्र हैं. और देवता उनकी हर तरह से मदद करते हैं, सपनों से, संकेतों से, उन चीजों के पाने से जिसके लिए उन्होंने लक्ष्य निर्धारित किया है.

ब्रह्मांड की आवर्ती गति पीढ़ियों से एक जैसी है. और या तो ब्रह्मांड की प्रज्ञा खुद से अपने को हर प्रभाव के लिए गतिमान करती है, और यदि ऐसा है, तब अपने को उससे सहमत करो जो कि इस गतिविधि का परिणाम है; या एक बार गतिमान होती है, और चीजें उसके परिणाम स्वरूप श्रृंखला बद्ध होकर होती हैं; या प्रत्येक तत्व सभी चीजों श्रोत है. दूसरे शब्दों में, यदि वहां ईश्वर है, सभी कुछ अच्छा है; और यदि अवसर शासन करता है, तब तुम भी उससे शासन क्यों नहीं करते हो.

www.PDFshala.com

जल्द ही धरती हम सभी को ढक लेगी: और फिर धरती खुद भी, बदल जाएगी, और चीजें जो बदलाव के परिणाम स्वरूप बनी थी वह भी हमेशा बदलती रहेंगी. यदि आदमी बदलाव और रूपांतरण का चिंतन करता है जो कि एक लहर के बाद दूसरी लहर की तरह से आते रहते हैं, वह हर उस चीज से घृणा करता है जो कि नश्वर है.

ब्रह्मांड के कारण शीतकाल के तूफान की तरह से हैं: वह अपने साथ सभी कुछ लेकर चला जाता है. परंतु यह गरीब लोग कितने व्यर्थ के हैं जो पदार्थों की राजनीति में व्यस्त रहते हैं, और सोचते हैं की वह दार्शनिकों का व्यवहार कर रहे हैं, सभी मूर्ख. बहुत अच्छा, आदमी वह करे जो प्रकृति चाहती है. अपने को गतिमान रखें, यदि यह आपके अधिकार में हो, और उनकी तरफ न देखें की कोई उनको निहार रहा है: और न ही प्लेटों की कृति दी रिपब्लिक से कुछ अपेक्षा करें: बल्कि संतुष्ट रहें यदि थोड़ा सा भी कुछ अच्छा हो, और उसका कम आकलन न करें. वह जो आदमी की राय को बदल सकता है? और बिना राय को बदले क्या वहां है आदमी की गुलामी के अतिरिक्त जिनकी आज्ञा का पालन करने को तुम तैयार हो? अभी आओ और मुझे सिकंदर और प्लेरम के फिलिप और डेमेट्रस के बारे में बताओ. वह खुद से परख सकते हैं की क्या उन्होंने खोजा की क्या आम प्रकृति चाहती है, और अपने को उसके अनुसार तैयार किया. परंतु यदि उन्होंने दुखांत नायक की तरह से व्यवहार किया होता, कोई मेरा खंडन नहीं करता उनको बताने के लिए. सहजता और नम्रता दार्शनिक का काम है. मुझे गर्व और आलस से दूर रखो.

ऊपर से अनंत लोगों की भीड़ को देखें और उनकी अनंत धार्मिक गतिविधियों को, और अनंत समुद्री यात्रियों को तूफान में और स्थिरता में, और उनमें अंतर को जो पैदा हुए हैं, जो साथ-साथ रहते हैं, और मरते हैं. और विचार करो, इसपर भी, जीवन जो दूसरों के द्वारा वृद्धावस्था में जीया गया, और उनका जीवन भी जो इसके बाद भी जीए, और उनका जीवन भी जो जंगलियों के बीच रहे, और अनेक जो अपना नाम भी नहीं जानते, और अनेक उसे जल्दी ही भूल जाएंगे, और कैसे जिनकी अभी स्तुति होती है जल्दी ही उनको आरोपित किया जाएगा, और न ही मृत्यु के बाद के नाम की कोई कीमत है, और न ही प्रतिष्ठा, और न ही किसी अन्य चीज की.

उस घबराहट से आजादी हो जो कि किसी बाहरी कारण के परिणामस्वरूप चीजों से आती है; और उन चीजों के लिए न्याय हो जो आंतरिक कारणों के सदगुण से होती है, यह कि, गतिविधि और कृत्य उससे जुड़े हों, वह प्रकृति के अनुसार हो.

तुम उस सभी बेकार की चीजों को रास्ते से हटा दो जो कि तुम्हें परेशान करती हैं, क्योंकि यह पूरी तरह से तुम्हारी राय पर निर्भर करती हैं; और इस तरह से खुद के लिए काफी सारी खाली जगह को पा सकोगे, ब्रह्मांड को अपनी बुद्धि में समाहित करके, और समय की नित्यता पर विचार करके, और तेजी से हो रहे बदलावों का हर चीज में अवलोकन करके, कितना कम समय है जन्म से मृत्यु तक का, और अनंत समय जन्म से पहले का और मृत्यु के बाद का असीमित समय.

www.PDFshala.com

वह जो कुछ भी दिखता है, शीघ्र नष्ट हो जाएगा, और वह जो दर्शक थे इस विघटन के वह भी शीघ्र नष्ट हो जाएंगे. और वह जो अत्यंत वृद्ध अवस्था में मरते है उन्हें भी वहीं लेकर जाया जाएगा जहाँ उन्हें लेकर जाते हैं जो समय से पहले मरते हैं.

क्या आदमी के अग्रणी सिद्धांत हैं, और किस तरह की चीजों को लेकर वह व्यस्त हैं, किस तरह के कारणों से वह प्यार करते हैं और सम्मान पाते हैं? कल्पना करो की वह अपनी गरीब आत्मा को नंगा देखें. जब वह सोचें की वे नुकसान करें अपने दोषारोपण से या अच्छा अपनी स्तुति से, क्या विचार है!

नुकसान बदलाव के अतिरिक्त कुछ भी नहीं. बल्कि ब्रह्मांड की प्रकृति बदलाव के साथ संतुष्ट होती है, और उसका अनुसरण करते हुए अभी भी सभी चीजें सही करती हैं, और अनंत काल से वह इसी तरह से करती आ रही हैं, और वह आगे भी बिना किसी अंत के ऐसा करती रहेंगी. तब, तुम, क्या कहोगे? सभी चीजें हैं और सभी चीजें बुरी होगी, और इन सभी देवताओं में कोई ताकत नहीं की वह इन चीजों को सुधार सकें, परंतु संसार ने निंदा की है कभी भी बुराई का साथ न देने के लिए?

पदार्थ का जीर्ण होना सभी चीजों का आधार है! पानी, धूल, हड्डी, गंदगी: और फिर संगमरमर पत्थर, धरती की गहराई में; और सोना और चाँदी, तल छट; और वस्त्र, केवल रेशे के टुकड़े; और बैंगनी रंग, खून; और सभी कुछ उसी तरह का. और वह भी जो प्रकृति में सांस लेते हैं उसी तरह से हैं, एक से दूसरे में बदलते हुए.

बहुत हो चुका इस चालबाज जीवन और उठा पटक और अस्थिर चालों से. यह इतनी परेशान क्यों करती है? इसमें क्या नया है? क्या उसे अस्थिर करती हैं? क्या यह किसी चीज का आकार है? इसकी तरफ देखें. या क्या यह पदार्थ है? इसकी तरफ देखें. बल्कि इनके परे कुछ भी नहीं है. देवताओं की तरफ झुकते हुए, तब, सहज और बेहतर बनो. वह उसी तरह बनी रहेंगी यदि हम उनका परीक्षण अभी करें या सैकड़ों सालों के बाद.

यदि कोई आदमी गलत करता है तब नुकसान खुद का होता है. परंतु शायद उसने गलत नहीं किया हो.

चाहे सभी चीजें एक बुद्धिमान स्रोत से आगे बढ़ें और एक शरीर का आकार लें, और कोई हिस्सा उसमें बुराई न देखें जो सभी के हितों को देखते हुए किया गया है; या वहां केवल अणु हों, और कुछ भी नहीं केवल मिश्रण और फैलाव के सिवाय. तब फिर क्यों तुम परेशान हो? अपने पर शासन करने वाली ताकत से कहो, तुम मारी जाओगी, तुम भ्रष्ट हो चुकी हो, तुम चालबाजी चल रही हो, तुम जानवर बन रही हो, तुम भीड़ के साथ रहकर उसकी तरह से बनना चाहती हो?

या तो देवताओं के पास ताकत नहीं है या उसके पास ताकत है. यदि, उनके पास ताकत नहीं है,

www.PDFshala.com

तब, तुम उनकी क्यों पूजा कर रहे हो? यदि उनके पास ताकत है, तो तुम उनसे यह प्रार्थना क्यों नहीं करते हो की वह आपको किसी भी चीज के भय से मुक्त करें जो तुम्हें भयभीत करती है, या उस किसी भी चीज की चाहना न होना जिसकी तुम चाहना करते हो, या किसी भी चीज के रंग में न रंग जाना, बल्कि प्रार्थना करें इनमें से कोई चीज हो या न हो? निश्चित ही वह आदमी के साथ इन चीजों को लेकर सहयोग कर सकें. जिससे की तुम कह सको कि देवताओं ने तुम्हें अपनी ताकत के साथ भेजा है. बहुत अच्छा, तब, क्या यह बेहतर नहीं है की उसका उपयोग करें जो कि स्वतंत्र व्यक्ति के अधिकार में है न कि गुलाम बनकर चाहना की पूर्ति और अधर्म करना जो अधिकार में नहीं हैं? और जो यह कहते हैं की देवता हमारी उसमें भी मदद नहीं करते हैं जो हमारे अधिकार में है? तब, ऐसी चीजों के लिए प्रार्थना करें और तुम देखोगे. एक प्रार्थना करता है: कैसे मैं उस औरत के साथ सो सकता हूं? दूसरा प्रार्थना करता है: कैसे मैं उससे झूठ न बोलने की चाहना करूं? अन्य प्रार्थना करता है: कैसे मैं उससे अपने को आजाद करूं? अन्य प्रार्थना करता है: कैसे मैं अपने पुत्र को न खोऊं? इसी तरह से: कैसे मैं उसे खोने से डरूँ नहीं? बहुत अच्छा, उनकी प्रार्थनाओं को इस तरफ करो, और देखो क्या परिणाम आता है.

ऐपाक्युरस कहते हैं, अपनी बीमारी में मेरी मंत्रणा मेरे शरीर की पीड़ा को लेकर नहीं होती है, और न ही, वह कहते हैं, उनके विषय में जो मेरे पास आते हैं: बल्कि मैं चीजों पर चर्चा पहले की तरह से करता हूँ, इस मुख्य बिंदु को ध्यान में रखकर, कैसे दिमाग, ऐसे पलों में जब शरीर कष्ट में हो, वह गड़बड़ियों से बचा रहे और बेहतर संतुलन को बनाए रखे. और न ही मैं, वह कहते हैं, की मैं चिकित्सक को गंभीरता दिखाने का अवसर देता हूँ, जैसे कि वह कुछ महान कर रहे हों, बल्कि मेरा जीवन खुशी से और अच्छा चलता रहे. तब उसी तरह से करो जैसा वह बीमार होने पर करते हैं, जब भी तुम बीमार हो या किसी भी परिस्थिति में; कभी भी किसी भी परिस्थिति में दर्शन से विचलित न हो, और न ही चुभने वाली बातों को बनाए रखो या वह जो अपरिचित हो स्वभाव से, सभी दर्शन के विद्यालयों का सिद्धांत है; बल्कि केवल उस पर जोर दो जो तुम अभी कर रहे हो और उस औजार पर जिससे तुम उसे करते हो.

जब तुम किसी आदमी के शर्मिंदा करने वाले व्यवहार से चोट खाते हो, तत्काल खुद से पूछो, क्या यह संभव है, की यह बेशर्म आदमी इस संसार में नहीं होता? यह संभव नहीं है. तब उसके बारे में न चाहो जो संभव नहीं है. उस बेशर्म आदमी के साथ ही वह बेशर्म आदमी भी होंगे जो संसार की जरूरत होंगे. यही विचार धूर्त, और विश्वासघाती आदमी, और हर उस आदमी के लिए होना चाहिए जो किसी भी तरह से गलत करता है. क्योंकि उसी समय तुम्हें खुद को यह याद दिलाना चाहिए की यह असंभव है की इस तरह के आदमी अस्तित्व में न हों, तब तुम विनम्रता से व्यक्तिगत रुप से प्रत्येक के लिए आदी हो जाओगे. इसे बनाए रखना उपयोगी भी है, तत्काल जब ऐसा अवसर आए, भला स्वभाव आदमी का हर गलत कृत्य की निंदा करें. क्योंकि उसने बेवकूफ आदमी से बचाव के लिए कोमलता को प्रतिरोधक के रुप में लिया है और दूसरी तरह के आदमी के लिए दूसरी ताकत को. दूसरे मसलों में यह तुम्हारे लिए संभव है की तुम आदमी को अपनी शिक्षा से सुधार सको जो गुमराह है; हर आदमी जो लक्ष्य से भटक चुका है और गुमराह है. इसकी तुलना में की तुम्हें चोट पहुंची है? तुम यह पाओगे की कोई इसके अतिरिक्त तुम्हें क्या

www.PDFshala.com

नुकसान कर सकता हैं? तुम खुद पाते हो उनमें से कोई भी नहीं जिनसे तुम खुद चिढ़ रहे हो ने कुछ किया है जिससे तुम्हारा दिमाग परेशान है; परंतु जो उसमें बुराई है और नुकसानदायक है उसका आधार केवल मन में है. और क्या नुकसान किया गया या क्या वहां अनजाना हैं, जब आदमी जिसने कुछ सीखा नहीं है वह बिना सीखे हुए आदमी के कृत्यों को करता हैं? ध्यान दें की तुम खुद को दोष नहीं दोगे, क्योंकि तुमने कभी यह नहीं सोचा था की वह आदमी इस तरह से गलती करेगा. तुम्हारे लिए इसका मतलब था की किसी कारण यह सोचना की यह संभव है की वह यह गलती करेगा, और तुम भूल गए और अब आश्चर्य करते हो की उसने गलती की. उससे ज्यादा जब तुम आदमी को बेवफा या कृतघ्न होने का दोष देते हो, खुद की तरफ देखो. क्योंकि यह गलती खुद से हुई है, चाहे तो तुमने उस आदमी पर विश्वास किया जिसका ऐसा स्वभाव है वह अपने वादे को बनाए रखेगा, या जब तुम उसकी बातों पर विश्वास कर रहे थे तब तुमने उसे पूरी तरह से सुनिश्चित नहीं किया, और न ही इस तरह से उसका इसे करके पूरा फायदा उठाया.

क्या तुम चाहते हो जब तुम आदमी की सेवा करते हो? तुमने कुछ ऐसा नहीं कर है जो तुम्हारे स्वभाव के अनुकूल न हो, और जिसके लिए तुम भुगतान चाहते हो? उसी तरह से जैसे आँख देखे के लिए भुगतान चाहे, या पैर चलने के लिए. क्योंकि यह सभी किसी विशेष उद्देश्य के लिए बने हैं, और अपने स्वभाव के अनुसार वह करते हैं जो उनके पास खुद करने को होता है; उसी तरह से आदमी भला करने के लिए बना है, जब वह कुछ भला करता है, या दूसरी तरह से आम हित में सहमत होता है, वह अपने स्वभाव के अनुकूल होता है, और वह पाता है जो उसका होता है.

www.PDFshala.com

अध्याय- 10

तब तुम, मेरे मन, कभी भी अच्छे और सरल और एक और नग्न, उस शरीर से ज्यादा प्रत्यक्ष न हो जो तुम्हें घेरे रहता है? उसके साथ तुम स्नेही और संतुष्ट स्वभाव का आनंद नहीं लोगे? उसके साथ कभी भी तुम भरे हुए नहीं होगे और कभी भी किसी चीज की इच्छा नहीं, ज्यादा चाहत नहीं, चाहे चेतन या अचेतन, आनंद की अनुभूति के लिए? और न ज्यादा चाहना की तुम्हारे पास लंबा मनोरंजन, या बेहतर स्थान, या आनंददायक मौसम, या लोगों का साथ हो जिनके साथ तुम समभाव से रह सको? बल्कि तुम वर्तमान स्थिति से संतुष्ट हो, और संतुष्ट हो उस सबसे जो होने जा रहा है, और तुम खुद को मनाओगे की तुम्हारे पास सब कुछ है और यह देवताओं के पास से आ रहा है, सभी कुछ तुम्हारे लिए अच्छा है, और उनके लिए भी अच्छा है जो कुछ भी उन्हें संतुष्ट करता है, और जो कुछ भी वह निर्दोष जीवित प्राणियों के संरक्षण के लिए देते हैं, अच्छा और न्यायोचित और सुंदर, जो सृजन करता है और बनाए रखता है सभी चीजों को, और गले लगाता है सभी चीजों को जो भंग होती है सृजन करने के लिए अन्य वैसी चीजों के लिए? तुम कभी भी उस तरह के न हो जो देवताओं और आदमी के साथ रह कर भी उनमें दोष देखते हों, और न ही उनके द्वारा निंदा के पात्र बनते हों?

अवलोकन करो क्या प्रकृति को जरूरत है, जब तक तुम प्रकृति द्वारा शासित हो: तब इसे करो और स्वीकार करो, यदि तुम्हारी प्रकृति है, जब तक तुम इसके साथ सही तरह से रह रहे हो, उसके साथ खराब न हो.

और फिर अवलोकन करो क्या तुम्हारी प्रकृति चाहती है जिससे तुम बेहतर तरह से रह सको. और इसकी अपने को अनुमति दो, यदि यह तुम्हारी प्रकृति है, जब तक तुम तार्किक प्राणी हो, उससे खराब न बनो. बल्कि तार्किक प्राणी परिणाम स्वरूप राजनीतिक (सामाजिक) प्राणी भी है. इन नियमों का पालन करें, तब, और किसी चीज को लेकर परेशान नहीं हों.

सभी कुछ जो होता है वह या तो इतनी समझदारी से होता है की तुम्हारी प्रकृति उसे वहन कर सके. यदि, तब, यह तुम्हारे साथ होता है की तुम उसे वहन कर सकते हो तो शिकायत न करें, बल्कि उसे वहन करो उस प्रकृति से जो वहन कर सकती है. बल्कि यदि यह इस समझदारी से होता है की तुम्हारी उसे वहन नहीं कर सके, शिकायत न करो, वह नष्ट हो जाएगी जब वह तुम्हें खपा लेगी. याद रखें, फिर भी, तुमको प्रकृति द्वारा इस तरह का बनाया गया है की तुम सभी कुछ सहन कर सको, इस संदर्भ के साथ की यह निर्भर करता है तुम्हारी राय पर की उसे तुम सराहनीय और सहन करने योग्य बनो, यह सोचते हुए यह तुम्हारे हित में है या तुम्हारा कर्तव्य है

www.PDFshala.com

की तुम उसे करो.

यदि आदमी गलती करता है, उसे विनम्रता से समझाओ और उसकी गलती को बताओ. परंतु यदि वह इस काबिल नहीं है, उसे दोष दो या उसे दोष न दो.

जो कुछ भी तुम्हारे साथ होता है, यह तुम्हारे लिए नित्य था; और कारण के होने का आशय नियति के तारों द्वार तारों को खींचना है, और जो कुछ उससे जुड़ा है.

चाहे तो प्रकृति अणुओं से बनी हो, या प्रकृति कोई तंत्र हो, इसे पहले स्थापित कर लें की मैं इस संपूर्ण का हिस्सा हूं, जो कि प्रकृति से शासित होता है. आगे, मैं उन हिस्सों से संबंधित हूं जो मेरे जैसे हैं. इसे याद रखने के लिए, कि मैं इसका हिस्सा हूं, मैं किसी भी चीज से असहमत नहीं हूं जो कि मुझे संपूर्ण में से सौंपी गई हैं; क्योंकि कुछ भी हानिकारक नहीं है मेरे लिए, यदि वह सभी के हित में है.

संपूर्ण चीजों में कुछ भी ऐसा नहीं है जो उनके हित में न हो; और सभी प्रकृति में निश्चित ही यह समान सिद्धांत होता है, ब्रह्मांड की प्रकृति में इसके अतिरिक्त यह भी है की वह बाहरी कारणों से भी विवश नहीं होती है खुद से कुछ भी हानिकारक करने के लिए. यह याद रखते हुए तब की मैं संपूर्ण का हिस्सा हूं, मैं उस सभी से सहमत हूं जो होता है. और जितना ज्यादा मैं जुड़ा हुआ हूं उस हिस्से से जो मेरे समान है, मैं कुछ भी असामाजिक नहीं करूंगा, बल्कि मैं अपने को निर्देशित करूंगा उन चीजों की तरफ जो मेरे समान हैं, और मैं अपने प्रयासों को समान हितों की तरफ मोड़ दूंगा और उन्हें विवादों से दूर कर लूंगा. अब यदि यह चीजें ऐसी की जा सकती हैं, जीवन खुशी से बीतेगा, जो कि निरंतर उन कामों को करता रहेगा जो कि साथी- नागरिकों के हित में हैं, और उससे सहमत है जो भी राज्य उन्हें जिम्मेदारी देता है.

संपूर्ण के हिस्से, सभी चीजें, मेरा मतलब, जो कि स्वाभाविक रूप से ब्रह्मांड में समाहित हैं, वह निश्चित रुप से नष्ट होंगे; परंतु इसे इस मतलब से समझ लेना चाहिए, की वह बदलाव से गुजरेंगे. परंतु यदि वह स्वाभाविक रूप से बुरे और आवश्यक हिस्से हैं, तब संपूर्ण निश्चित ही अच्छी स्थिति में अस्तित्व में नहीं रहेगा, हिस्सों का बदलना जरूरी है और उस तरह से तैयार होना की वह बदल सकें भिन्न तरीकों से. क्योंकि हो सकता है की प्रकृति खुद से उन चीजों का बुरा करने के लिए तैयार की गई हो जो खुद उसका हिस्सा हैं या परिणाम बिना उसकी जानकारी के हों? दोनों अनुमान निश्चित ही कल्पना से परे हैं. परंतु यदि शब्द प्रकृति (प्रभावी ताकत के रुप में) छोड़ दे, और इन चीजों को स्वाभाविक जानकर बोले, तब भी यह स्वीकार करने को हास्यास्पद ही है एक ही समय में संपूर्ण के हिस्से बदलाव के स्वाभाविक विषय हैं, और उसी समय हैरान या बेचैन है जैसे कुछ चीज स्वभाव के विपरीत हो रही है, विशेष रूप से चीजों का विघटन उन चीजों में है जिनसे प्रत्येक चीज बनी है. क्योंकि वहां या तो तत्वों का फैलाव है उस चीजों से जिनसे सभी चीजें बनी हैं या एक का दूसरे में बदलाव है, जिससे की इस हिस्सों को वापस लिया जा सके ब्रह्मांड के कारणों से, चाहे वह निश्चित समय के बाद आग में खप जाएं या सनातन बदलाव से नए तैयार हो. और यह कल्पना न करें की ठोस और क्षुद्र हिस्से यहां पीढ़ियों से हैं. बल्कि वह जो

www.PDFshala.com

अस्तित्व में हैं वह केवल कल या कल से पहले के हैं, जैसा कोई कहता है, उस भोजन और हवा से जो कि प्रेरित थी. यह, तब, जिसने अभिवृद्धि को ग्रहण किया है, बदलता है, वह नहीं जिसे मां आगे लेकर आती है. बल्कि कल्पना करो की वह जो मां लेकर आती है, वह उसका हिस्सा है, जिसमें बदलने की अजीब विशेषता है.

जब तुमने इन नामों को ग्रहण कर लिया है, अच्छा, सरल, सच्चा, तार्किक, धैर्य धारण करने वाला, और उदार, इस बात में सावधान रहो की तुम इन नामों को बदलोगे नहीं; और यदि तुम इनको खो देते हो, शीघ्र ही इन पर वापस लोटकर आओ. और याद रहे शब्द उस चीज के प्रति भेदभाव पर ध्यान देना और लापरवाही से आजादी तर्कसंगत दर्शाता है; और यह कि धैर्य स्वैच्छिक रूप से चीजों को स्वीकार करना है जो कि तुम को प्रकृति द्वारा नियत की गई हैं; और उदारता, आनंद और दर्द देने वाली संवेदनाओं से ऊपर उठने के लिए अपनी बुद्धि को विकसित करती है, और उससे ऊपर वह चीजें जिन्हें प्रसिद्धि, और मृत्यु और ऐसा ही कुछ कहा जाता है. फिर यदि तुम अपने को बनाए रखते हो इस नामों का अधिकारी, बिना इच्छा के दूसरे तुम्हें इस नाम से बुलाएं, तब तुम दूसरे आदमी बन जाओगे और दूसरे जीवन में प्रवेश कर जाओगे. उसी तरह से बने रहना जैसे अब तक हो, और टुकड़ों में बट जाना और इस जीवन में भ्रष्ट बनना, बहुत ही मूर्ख व्यक्ति का चरित्र है उसकी तरह से जिसे जंगली जानवर ने काट लिया, अब जिसने अपने घावों को ढक लिया है, और उस दिन को बनाए रखाना चाहता है जब की कुछ घाव खुल जाते हैं. इस लिए खुद को इन कुछ नामों के कब्जे में ही रखते हैं: और यदि खुद को इसके लिए स्वीकार करते हैं, स्वीकार करें की उन्होंने खुश रहने के कुछ मौकों को खो दिया है. बल्कि वह समझते हैं की क्या उनसे बाहर आ रहा है और उसे बनाए नहीं रखते हैं जो उनका अपना है, निडर होकर किसी कठिनाई में डालते हैं जहां वह अपने को स्थापित कर सकें, भावावेश से नहीं, बल्कि सहजता और स्वतंत्रता और नम्रता से, ऐसी स्तुति करने वाली चीज को कम से कम अपने जीवन में करके, वह इससे विचरण कर जाते हैं. इस क्रम में, तथापि, इन नामों को याद रखने में, यह तुमको बहुत मदद देगा, यदि तुम देवताओं को याद रखते हो, और यदि वह चापलूसी नहीं चाहते हैं, बल्कि चाहते हैं की सभी उचित चीजें उनकी तरह से बनें; और यदि तुम याद रखते हो की जो अंजीर के पेड़ का काम करता है वह अंजीर का पेड़ है, और वह जो कुत्ते का काम करता है वह कुत्ता है, और जो मधुमक्खी का काम करता है वह मधुमक्खी है, और जो आदमी का काम करता है वह आदमी है.

युद्ध, आश्चर्य चकित करने वाली घटनाएं, सुस्ती, गुलामी रोज तुम्हारे पवित्र सिद्धांतों को धो डालने की कोशिश करती है. कितनी चीजों की बिना प्रकृति को जाने तुम कल्पना कर सकते हो, और कितनी चीजों को तुम अनदेखा कर सकते हो? बल्कि यह तुम्हारा कर्तव्य है की तुम देखो और करो हर चीज को, उसी समय परिस्थितियों के अनुसार काम को करने की प्राथमिकता दो, और विचार करो, और जो आत्मविश्वास अभ्यास से आता है अनेक चीजों को करने से उसे बनाए रखा जाए बिना उसे दिखाए, परंतु उसे दबाते हुए नहीं. फिर तब जब तुम सहजता को अपनाते हो, जब गहराई और जब ज्ञान अनेक चीजों का, दोनों क्या पदार्थ में है, क्या उसका स्थान ब्रह्मांड में है, और कितने समय तक यह अस्तित्व में रहेगा और किन चीजों से यह मिलकर

www.PDFshala.com

बना है, और किसको यह प्राप्त होगा, और कौन इसे देने और लेने के काबिल है?

मकड़ी गर्व करती है जब वह मक्खी को पकड़ लेती है, और दूसरा जब गरीब खरगोश को, और अन्य जब छोटी मछली को जाल में पकड़ लेता है, और अन्य जो जंगली सुअर को, और अन्य जो सरमेशन को पकड़ लेते हैं. क्या यह चोर नहीं है, यदि है तब इनके दृष्टिकोण का परीक्षण करो?

एक विचार शील तरीका अपनाएं कैसे एक चीज दूसरी चीज में बदलती रहती है, और निरंतर इसके लिए प्रयास करती रहती है, और खुद से दर्शन के इस हिस्से का अभ्यास करो. इससे ज्यादा कोई भी चीज स्वीकार करने पर उदारता नहीं दे सकती है. ऐसा आदमी शरीर को आगे रख कर देखता है कैसे वह नहीं जानता कितनी जल्दी वह आदमी नहीं रहेगा और सभी कुछ यहीं पर छोड़ देगा, वह अपना सभी कुछ अपने कर्म को समर्पित कर देता है, और जो कुछ भी होता है उसे वह ब्रह्मांड की प्रकृति से पाया हुआ स्वीकार करता है. परंतु जैसाकि कोई आदमी कहता है या सोचता है उसके बारे में या उसके खिलाफ करता है, वह उसके बारे में नहीं सोचता है, और अपने को दो चीजों पर केंद्रित करता है, वह जो कर्म करता है उन्हें सही तरह से करना और जो कुछ भी प्राप्त होता है उससे संतुष्ट रहना; और वह सभी परेशान करने वाली और व्यस्त रखने वाली चीजों एक तरफ रख देता है और इससे ज्यादा की चाहना नहीं करता है जिसे वह नियमानुसार पा सके, और उस सीधे रास्ते पर लेकर चलता है जो उसे ईश्वर के पास लेकर जाता है.

क्या संदिग्ध डर की जरूरत है, क्योंकि यह तुम्हारे अधिकार में है की तुम पूछताछ करो की क्या किया जाना चाहिए? और यदि तुम स्पष्ट देखते हो, उस रास्ते पर चलते चलो बिना मुड़े: परंतु यदि तुम स्पष्ट नहीं देख सको, रुको और सबसे अच्छी राय को लो. बल्कि यदि कोई अन्य चीज विरोध करती है, तो पूरी तरह से विचार करते हुए, उसे बनाए रखते हुए जो सही दिखता है आगे बढ़ें. क्योंकि यह उचित है की इस लक्ष्य पर पहुंचें, और यदि तुम असफल होते हो, तो असफल हो उसका प्रयास करके. वह जो सभी चीजों में कारण को खोजते हैं वह शांत, और सक्रिय एक ही समय में होते हैं, और उल्लसित और उत्तेजना रहित.

जैसे ही आप निंद से उठो, अपने से पूछें क्या इसको करने से आपमें कोई फर्क दिखेगा, यदि दूसरा करता है वह उचित और सही है. तो उसको करने से कोई फर्क नहीं है.

तुम्हें यह नहीं भूलना चाहिए, मैं मानता हूं, की जो मान लेते हैं की अभिमानी बातें उनकी स्तुति करा सकती हैं या दूसरों पर दोषारोपण कर सकती हैं, क्या वह वैसे हैं जब वह बिस्तर पर या दरबार में होते हैं, और तुम्हें यह नहीं भूलना चाहिए क्या वह करते हैं, और किससे वह बचते हैं और किसकी वह स्तुति करते हैं, और कैसे वह चोरी करते हैं, और कैसे वह लूटते हैं, हाथ और पैर से नहीं, बल्कि अपने सबसे कीमती हिस्से से, जिसके कारण से उन्हें उत्पन्न किया गया है, जब आदमी चयन करता है, सत्यनिष्ठा, शील, सत्य, न्याय, अच्छा प्रेत (खुशियां)?

www.PDFshala.com

वह जो प्रकृति से सभी कुछ लेता है और उसे वापस करता है, आदमी जो निर्देशित और विनम्र है कहता है, उसे दो जो तुम्हारे पास है; उसे वापस लो जो नहीं है. और इसे वह गर्व से नहीं कहता है, बल्कि विनम्रता से कहता है.

वह थोड़ा ही है जो कि जीवन में बना रहता है. रहें जैसे पहाड़ पर रहना हो. इससे कोई फर्क नहीं पड़ाता की आप यहाँ या वहाँ रहें, यदि आप रह सकते हो कहीं भी दुनिया में जैसेकि राजनीतिक समाज में. आदमी को देखने दो, उसे जानने दो वास्तविक व्यक्ति को जो प्रकृति के अनुकूल रहता है. यदि वह इसे स्वीकार नहीं कर सकता है, उसे अपने को मार देने दो. क्योंकि यह जीने से अच्छा है जैसा आदमी करता है.

ज्यादा बात न करो किस तरह का अच्छा आदमी होना चाहिए, वैसे बनो.

हर समय और सभी पदार्थों में निरंतर मनन करते रहो, और विचार करते रहो की पृथक चीजें पदार्थ के लिए अंजीर के दाने के जैसे हैं, उसी तरह से समय के लिए, दृश्य का बदलना.

हर उस चीज की तरफ देखो जिसका अस्तित्व है, और निहारो जो पहले से विघटन और बदलाव में है, और क्या वह नष्ट हो रही हैं या फैल रही हैं, या हर चीज इस तरह गठित की गई है जैसेकि उसे मरना है.

विचार करें आदमी क्या है जब वह खाता है, सोता है, पैदा करता है, खुद से सहज है और इसी तरह. और फिर किस तरह का आदमी है जब वह दंभी और घमंडी, या गुस्से में और डांट रहा हो अपनी नियुक्त के स्थान से. थोड़े समय पहले कितनों के यह गुलाम थे और किस चीज के लिए; और कुछ देर के बाद विचार करें की किस अवस्था में वह हैं.

हर वह चीज अच्छी है जो प्रकृति हमारे लिए लेकर आती है. और यह समय के लिए भी अच्छा है जब प्रकृति उसे लेकर आती है.

धरती को बरसात से प्यार है; और प्रेमी को प्यार से: ब्रह्मांड को उसे बनाने में प्यार है जिसके लिए वह है. तब मैं ब्रह्मांड से कहता हूं, उतना प्यार करो जितना तुम कर सकते हो. और यह नहीं कहना चाहिए, की प्यार को पैदा किया जाए?

चाहे तो तुम यहां रहो और तुमने खुद को यहां के अनुसार ढाल लिया हो, या तुम जा रहे हो, और यह तुम्हारी खुद की इच्छा है; या तुम मर रहे हो या अपने कर्तव्यों को निभा रहे हो. परंतु इसके परे कुछ भी नहीं है. तब तुम खुश होकर रहो.

यह तुम्हें हमेशा स्पष्ट रहे, जमीन का यह टुकड़ा दूसरे की तरह का है; और सभी चीजें यहाँ पर समान हैं जो पहाड़ के ऊपर या समुद्र तट पर, या जो कुछ भी तुम चयन करते हो पर हैं. तब तुम

www.PDFshala.com

ठीक वही पाओगे जैसा की प्लेटों ने कहा था, किले की बंद दीवारों के बीच में रहना वैसा ही है जैसा चरवाहा पहाड़ की गुफा में अपने को बंद कर लेता है.

मेरे पर शासन करने वाला संकाय अभी कैसा हैं? और किस स्वभाव का मैं इसे अभी बना रहा हूँ? और किस उद्देश्य के लिए मैं अभी इसका इस्तेमाल कर रहा हूँ? क्या यह समझ में शून्यता है? क्या यह सामाजिक जीवन से पृथक और अनियंत्रित हो गया है? क्या गरीब मांस में पिघल कर मिल गया है जिससे की इसके अनुसार चल सके?

वह जो अपने मालिक से दूर जाता है भगोड़ा है; क्योंकि विधि मालिक है, और वह जो विधि का अनुसरण नहीं करता है वह भगोड़ा है. और वह भी जो लालची, क्रोधी या डरपोक है, वह असंतुष्ट है क्योंकि कुछ चीज हो सकती हैं, या हैं, या होंगी जिसे की उसने नियुक्त किया है जो सभी चीजों पर शासन करती है, और वह विधि है, और हर आदमी को वह करने को कहती है जो उसे सही लगे. वह तब जो डरता है, या शोक करता है, या क्रोध करता है भगोड़ा है.

आदमी गर्भ में बीज डालता है, और चला जाता है, तब अन्य कारण उसे अधिकार में लेता है, और उस पर काम करते हैं, और बच्चे को पैदा करते हैं. आगे बच्चा आपने मुंह से भोजन करता है, और अन्य कारण उसे अधिकार में लेता है और प्रत्यक्ष ज्ञान और गति, और बेहतर जीवन, और ताकत और दूसरी चीजें देता है; कितनी बार और अनोखे तरीके से मैं तब अवलोकन करता हूं उन चीजों का जो इतने छुपे तरीके से उत्पन्न होती हैं, और देखता हूँ ताकत को जो चीजों को ऊपर या नीचे ले जाती हैं, न केवल आंखों से, बल्कि स्थिर होकर सहजता से.

निरंतर विचार करो कैसे सभी चीजें वर्तमान में हैं और भूत में थी; और विचार करो की वह वैसी फिर से होंगी. और आँखों के सामने पूरे घटनाक्रम को नाटक की तरह से मंच पर समान रूप से रखो, जो कुछ भी तुमने अनुभव से सीखा है या पुराने इतिहास से; उदाहरण के लिए, हैंडिया की पूरी अदालत, और ऐनटोनियस की पूरी अदालत, और फिलिप की पूरी अदालत, सिकंदर, क्रिसस; वह सभी नाटक थे, केवल पात्र बदल गए थे.

कल्पना करो हर उस आदमी की जो दुःखी है किसी चीज पर या असंतुष्ट है सुअर की तरह जिसकी बलि दी जाती है चिल्लाता है और लाते मारता है. सुअर की तरह कैसे वह शांत होकर अफसोस जताता है उन बंधनों से जो हमें बांधे हैं. और विचार करो तर्कसंगत प्राणी को ही स्वेच्छा से उसे पालन करने का अधिकार दिया गया है जो होता है; परंतु केवल पालन करना प्रतिबंध है अन्य सभी पर.

अकसर हर चीज के करने पर, रुकें और अपने से पूछें, क्या मृत्यु भयानक चीज है क्योंकि यह तुमको इससे वंचित करती है.

जब आप किसी दूसरे व्यक्ति की गलती पर शर्मिंदा होते हो, तब तुम खुद की तरफ मुड़ते हो और

www.PDFshala.com

उस तरह से प्रदर्शन करते हो की यह तुम्हारा दोष है; उदाहरण के लिए, यह सोचना की पैसा अच्छी चीज है, या आनंद, या थोड़ी सी प्रतिष्ठा, और उसी के समान. इसकी तरफ ध्यान देकर तुम जल्दी ही गुस्से को भूल जाओगे, यदि यह विचार जोड़ लिया जाए, की आदमी मजबूर है; और वह क्या कर सकता है? या, तुम सक्षम हो, तो उससे मजबूरी को ले लो.

जब तुम सुकरात के व्यंग को देखते है, तब इयुटीस्च या हैमेन के बारे में सोचो, और जब तुम इयुपिरेट को देखो, तब इयुथिकोन या सिलवानुस के बारे में सोचो, और जब तुम ऐल्लीपोन को देखो, तब ट्रपोपोपस के बारे में और जब तुम जेनोफोन को देखो तब रितो या सेवरस के बारे में सोचो और जब तुम खुद की तरफ देखो, सीज़र के बारे में सोचो, और हर किसी के मसले में इसी तरह से करो. तब यह विचार तुम्हारे दिमाग में रहे, कहां वह आदमी हैं? कहीं नहीं, या कोई नहीं जानता कहां. इस तरह लगातार ध्यान से देखो की मानवीय चीजें धुएं की तरह से हैं और कुछ नहीं; विशेषतः यदि तुम प्रतिबिंबित करो कि जो कुछ बदल चुका है वह अनंत काल तक दुबारा अस्तित्व में नहीं आ सकता है. बल्कि तुम खुद कितने कम समय के लिए अस्तित्व में हो? और क्यों तुम इस अल्प समय को संयमित तरह से नहीं काटते हो? किन कामों को और किन अवसरों को तुम टाल रहे हो? किन के लिए यह सभी चीजें हैं, केवल कारण के करने के अतिरिक्त, जब उन्हें सावधानी से देखते हैं और चीजों के उस स्वभाव का परीक्षण जो जीवन में घटता है? उनको संरक्षित रखें जबतक इन चीजों को तुम अपना न बना लो, जैसे पेट जो मजबूत होता है चीजों को अपने में ग्रहण करके, जैसे जलती हुई आग में लपट पैदा होती है और हर उस चीज को अपने में समा लेती है जो उसमें डाली जाती है.

किसी के अधिकार में यह नहीं होना चाहिए की वह कह सके की तुममें सहजता नहीं है या तुम अच्छे नहीं हो; बल्कि वह झूठा है जो तुम्हारे बारे में ऐसा सोचता है; और यह पूरी तरह से तुम्हारे अधिकार में है. कौन तुम्हें अच्छा और सहज बनने से रोक सकता है? कोई ऐसा नहीं कर सकता है जब तक कि तुम खुद से न चाहो. क्योंकि कोई भी कारण ऐसा नहीं है जो तुम्हें सहज जीवन जीने से रोक सके.

क्या और किस तरह से अपने जीवन के बारे में कहा या किया जा सकता है. चाहे कुछ भी यह हो, यह तुम्हारे अधिकार में है की तुम कर सको और कह सको, और छुपने का कोई बहाना नहीं हो. क्या वह है जो इस जीवन के बारे में करा जा सके या कहा जा सके जो कि कारण से सहमत हो. चाहे जो कुछ भी हो यह तुम्हारे अधिकार में है की उसे करें या उसे कहें, और बहानों को न बनाएं जो रुकावट डालते हैं. तुम विलाप नहीं करोगे तबतक जबतक मन उस स्थिति में है, उन लोगों को क्या विलासिता है जो आनंद को भोगते हैं, वैसी ही तुम्हारे पास हो, उस मसलो में जो कि विषय है और तुम्हें प्रस्तुत किए गए है, उन चीजों को करना जो आदमी के स्वभाव के अनुकूल हैं; आदमी को हर उस चीज का आनंद लेने का विचार करना चाहिए, जो उसके स्वभाव के अनुरूप उसके अधिकार में है. और यह उसके अधिकार में हमेशा है. अब, इसे न तो घूमने के लिए खुद से, और न ही पानी को और न ही आग को, और न ही किसी और चीज को देना चाहिए जो स्वभाव से या तर्कहीन आत्मा से नियंत्रित होती है, क्योंकि अनेक चीजें है जो इसे परखती है और रास्ते में

www.PDFshala.com

खड़ी हैं. परंतु और बुद्धिमानी और कारण जा सकते हैं हर चीज के साथ जो कि उनका विरोध करते हैं, और इस मसले में वह तैयार होते हैं स्वभाव से और जैसा वह चयन करते हैं. आंखों के सामने उस सुविधा को रखो जिससे द्वारा कारण चीजों के साथ जाते हैं, जैसे आग ऊपर की तरफ, पत्थर नीचे की तरफ, बेलन नीचे ढालू जगह पर, और किसी चीज की आगे चाहना न करो. अन्य सभी रुकावटों के लिए शरीर को केवल प्रभावित करो जो कि मृतक चीज हैं; या राय से स्वीकार करो और खुद से कारण को खोजो, वह आपसे में लड़े नहीं और न ही किसी तरह की हानि करें; क्योंकि यदि वह करते हैं, तो जो गिरता है वह तुरंत बुरा बनता है. अब, सभी चीजों के मसले में जिनका निश्चित संविधान है, जो कुछ भी नुकसान इनमें से किसी को होता है, वह जो इतना प्रभावित है वह परिणाम स्वरूप खराब बन जाता है; परंतु इसी के समान मसले में, आदमी बेहतर बन जाता है, यदि कोई ऐसा कहता है, और स्तुति का वाहक इन दुर्घटनाओं का सही उपयोग करके. और अंत में याद रखें की कुछ भी उसे नुकसान नहीं पहुंचा सकता है जो कि वास्तव में नागरिक है, जो राज्य को हानि नहीं पहुंचाता है; और न ही कुछ भी राज्य को हानि पहुंचा सकता है, जो कि कानून को हानि नहीं पहुंचाता है; और वह चीजें जो कि दुर्भाग्य कहलाती हैं कोई भी कानून को हानि नहीं पहुंचा सकती है, तब फिर क्या है जो कानून को हानि नहीं करता है हानि नहीं कर सकता है चाहे राज्य की या नागरिक की.

वह जो कि सच्चे सिद्धांतों का पालन करता है उसके लिए थोड़ा-सा उपदेश भी काफी है, और कोई भी आम उपदेश, जो उसे याद दिला सके की उसे डर और शोक से मुक्त रहना है. उदाहरण के लिए- पत्तियां, कुछ को आंधी जमीन पर गिरा देती है- उसी तरह से आदमी की जाति. पत्तियां, भी, क्या वह बच्चा हैं; और पत्तियां, भी, क्या वह भी रोती हैं की वह भी श्रेय के योग्य हैं और उनकी स्तुति हो, या अभिशाप, या दोष या उपहास हो विपरीत कारण से; और पत्तियां, इसी तरह से हैं, उनकी तरह जो आदमी का यश उसके बाद ग्रहण करते हैं या प्रसारित करते हैं. सभी चीजों के लिए जो ऐसी हैं "वह बसंत ऋतु में उत्पन्न होती है," जैसा कवि कहता हैं; जब आंधी उन्हें नीचे गिरा देती है; तब जंगल उनकी जगह नई पत्तियों का सृजन करता है. परंतु संक्षिप्त अस्तित्व सभी चीजों में आम है, और तब तुम उसे नकार सकते हो या स्वीकार कर सकते हो यदि वह सत्त हों. थोड़ा सा समय और तुम अपनी आँख बंद कर लोगे; और वह जो तुम्हें दफनाएंगे वह भी जल्दी मारे जाएंगे.

स्वस्थ आंखें सभी दिखने वाली चीजों को देखना चाहती है और यह न कहें की मैं केवल हरी चीजें देखने की इच्छा रखता हूँ; क्योंकि यह बीमार आंखों के लिए प्रतिबंध है. और स्वस्थ सुनना और देखना तैयार रहता है उसे ग्रहण करने के लिए जिसे सुना और देखा जा सकता है. और स्वस्थ पेट तैयार रहता है उन सभी भोजन के लिए जिन्हें वह पचा सके. और उसी तरह स्वस्थ समझ हर उस चीज के लिए तैयार रहती है जो होती है; बल्कि वह जो कहती है, मेरे प्यारे बच्चे जीओ, और आदमी स्तुति करे उसकी जो मैं कर सकता हूँ, वह आँख हैं जो हरी चीजों को देखना चाहती है, या दाँत जो नर्म चीज खाना चाहते हैं.

कोई भी आदमी इतना सौभाग्यशाली नहीं है की जब वह मर रहा हो कुछ ऐसे हों जो इससे संतुष्ट हों जो हो रहा है. कल्पना करो की वह अच्छा और समझदार आदमी था, क्या वहाँ न हो कम से

www.PDFshala.com

कम कोई जो खुद से कह सके, अंततः खुल कर सांस लो? यह सही है की वह किसी के लिए रूखा नहीं था, परंतु मैं मानता हूं वह मौन रहकर हमारा खंडन करता था. - यह वह है जो अच्छे आदमी के लिए कहा जाता है. बल्कि हमारे मसलों में कितनी दूसरी चीजें वहां हैं जिनके लिए अनेक हैं जो हमसे मुक्ति चाहते हैं. तो तब विचार करो की तुम मर रहे हो, और तुम संतुष्ट होकर मर रहे हो इसे परिलक्षित करते हुए: मैं ऐसे जीवन से जा रहा हूं, जिसमें मेरे संबंधी जिनके होने पर मैंने बहुत कुछ किया, स्तुति की, और चिन्ता की, खुद से चाहते हैं की मैं जाऊं, यह आशा करते हुए की वे इससे कुछ फायदा ले सकेंगे. तब क्यों आदमी लंबे समय तक यहां बना रहना चाहता है? तब इस कारण से इससे बिना विनम्रता के त्याग करे इससे न निपटें, बल्कि दोस्ताना, और उदार और सौम्य, अपने चरित्र को बनाए रखते हुए, और दूसरी तरह इस तरह से नहीं की तुमने इसे छिन्न भिन्न कर दिया है; बल्कि जब आदमी शांत मौत मरता है, तब गरीब आत्मा आसानी से शरीर से अलग हो जाती है, जो कि आदमी से प्रस्थान कर, प्रकृति से जुड़ जाती हैं. परंतु क्या तब वह इसमें घुल जाती हैं? बहुत अच्छा, तब मैं संबंधी होने से पृथक हुआ, बिना किसी विरोध के, बल्कि बिना किसी मजबूरी के; क्योंकि यह भी एक चीज है जो प्रकृति के अनुसार है.

किसी भी अवसर पर जितना संभव हो सके अपने को अभ्यस्त करो की कोई भी व्यक्ति खुद से पूछताछ कर सकता है, किस उद्देश्य को ले वह आदमी इसे कर रहा है? बल्कि खुद से शुरूआत करो, और खुद का सबसे पहले परीक्षण करो.

याद रखें जो तार खींचता है वह चीज है जो हमारे अंदर ही छुपी है: यह अनुनय की ताकत है, यह जीवन है, यह, यदि कोई कहे, आदमी है. खुद पर विचार करते समय कभी उस बाहरी आवरण को सम्मिलित न करो जो तुम्हें ढकते हैं और उन यंत्रों को जो उससे जुड़े हैं. क्योंकि वह कुल्हाड़ी की तरह है, केवल अंतर यह है की वह शरीर के अंदर पैदा होती हैं. निश्चित ही इन हिस्सों का कोई ज्यादा उपयोग नहीं है बिना कारण के जो उन्हें घुमाता है और जांचता है बुनने वाले की ढ़करी में, और लेखक की कलम में और घुड़सवार के कोड़े में.

www.PDFshala.com

अध्याय- 11

तर्क करने वाली आत्मा की यह विशेषताएं हैं: वह खुद को देखती हैं, खुद का विश्लेषण करती है, और अपने को उसी के अनुसार बनाती है जिसे वह चुनती है; जो फल वह धारण करती है उसका वह आनंद लेती है- पेड़ों के फलों और जो जानवरों में हैं जो कि फल से संबंधित है जिसका दूसरे आनंद लेते हैं- वह अपने खुद का अंत पाता है, जहां भी जीवन की सीमा इसे नियत करती है. नृत्य या नाटक जैसी चीजों की तरह से नहीं, जहां पूरा कृत्य अधूरा है, जब कोई चीज सार को कम करती है; बल्कि हर हिस्से में और जहां भी वह रुक जाए, न की नाटक या नृत्य की तरह से, जहां कोई भी कृत्य अधूरा होता है, यदि कोई उसे छोटा करता है; बल्कि हर हिस्से में और जहां भी उसे रोक दिया जाए, वह उस तरह से हो की जो पहले है वह पूर्ण है, जिससे वह कह सके, मेरे पास वह है जो मेरा है. और आगे वह संपूर्ण ब्रह्मांड और उसके चारों और के निर्वात में विचरण करती है, और उसके आकार का निरीक्षण करती है, और अपना अनंत काल के लिए विस्तार करती है, और सभी चीजों के आवर्ती बदलाव को नियंत्रित करती है और समझती है, और सम्मिलित करती है उन्हें जो हमारे बाद आते हैं कुछ नया नहीं देखे, और न ही जो हमसे पहले हैं कुछ भी अधिक नहीं देखें, बल्कि उस तरह से जो चालीस साल का है, यदि उसे कोई समझ है, वह एकरूपता के पुण्य से देखता है उसे जो सभी चीजों को बनाए रखता है जो हैं और जो होंगी. यह भी तार्किक आत्मा की विशेषता है, पड़ोसी से प्यार करना, और सत्य और विनम्रता, और किसी को भी खुद से अधिक मूल्यवान न समझना, जो कि न्याय की विशेषता है. अतः तब उचित कारण किसी भी तरह से न्यायोचित कारण से अलग नहीं हो सकता है.

तुमको मनभावन संगीत, और नृत्य और नाटकों से बचना चाहिए, यदि हो सके संगीत की लय को अनेक स्वरों में वितरित कर दो, और खुद से प्रत्येक के बारे में पूछो, क्या इससे महारत हासिल कर सकते हो; क्या तुम शर्म से बच सकते हो इसे स्वीकार करके: नृत्य के मसले में भी, हर चाल और मनोभाव के साथ यही करो; और उसी तरह से नाटकों के मसलों पर. सभी चीजों में, सदाचार और सदाचार के कृत्यों को छोड़कर, इसे आजमा कर देखो उसके भिन्न हिस्सों में, और इस विभाजन से तुम उनका आकलन कम कर सकोगे: और इस नियम को अपने पूरे जीवन पर भी लागू करो.

क्या आत्म है जो तैयार रहती है, किसी भी पल शरीर से अलग होने को, और तैयार चाहे बुझने को, या अप्रकट होने को, या बाहर जाने को; बल्कि यह तत्परता खुद आदमी के निर्णय से आनी चाहिए, न कि हट के कारण से, बल्कि दूसरों के लिहाज से और गरिमा से और दूसरों को राज़ी करके, बिना दुखद प्रदर्शन के.

www.PDFshala.com

क्या मैंने कुछ काम आम हित का किया हैं? बहुत अच्छा तब यह मेरा पारितोषिक है. यह हमेशा मेरे दिमाग में बना रहना चाहिए, और कभी ऐसी चीजों को करना बंद नहीं करो.

क्या तब कलाकारी हैं? बेहतर बनना. और कैसे इसे प्राप्त किया जा सकता है आम सिद्धांतों के बिना, कुछ ब्रह्मांड की प्रकृति को जान कर, और दूसरा आदमी के उचित संघटन को जानकर?

सबसे पहले मंच पर त्रासदी आदमी को वह चीज याद दिलाने के लिए लाई जाती हैं जो उसके साथ हो सकता है, वह चीजों के स्वभाव के अनुसार होता है, और फिर यदि तुम आनंद लेते हो उससे जो मंच पर दिखाया गया है, तुम्हें उससे परेशान नहीं होना चाहिए जो बड़े मंच पर स्थान लेता है. तुम देखते हो चीजें ऐसे ही होती है, और वह उसे भी सहन करती है जो चिल्लाता है "हे क्रेटेरोन." और निश्चित ही कुछ चीजें नाटक के लेखक द्वारा बहुत अच्छी तरह से कही जाती हैं, जिसमें से कुछ विशेषतः इस तरह से हैं:- मैं और मेरे बच्चे यदि देवता नकारते हैं, इसका भी कोई कारण है. और फिर से-- हम उन चीजों पर न झल्लाएं जो होती है. और जीवन की फसल उसी तरह से पकती है जैसे गेहूँ की बालियाँ और इसी तरह की दूसरी चीजें.

त्रासदी के बाद हास्य को परिचित कराया गया, जिसमें बोलने की शाही स्वतंत्रता थी, और अपने इस बोलने की सरलता में आदमी को यह याद दिलाना काफी होता है की बदतमीजी से सावधान रहे; और इस उद्देश्य के लिए लेखक को संयमित होने के लिए भी कहा जाए.

बल्कि जैसे बीच का हास्य जो बाद में आता है, अवलोकन करो वह क्या है, और फिर, किस उद्देश्य के लिए नए हास्य का परिचय किया गया, जो अंतः नकली चालाकी में लुप्त हो जाता है. कुछ अच्छी चीजें इन लेखकों द्वारा भी कही गई हैं, सभी जानते हैं: परंतु पूरी योजना इस कविता या नाटक की, क्या अंत में वह दिखता है!

कितना सरल यह प्रकट होता है की यहां जीवन के कोई अन्य हालत नहीं जो दर्शन को समझ सकें इसके जैसे जो अभी होने जा रहा है.

शाखा जो साथी शाखा से कट कर अलग हो जाती है वह निश्चित ही पूरे पेड़ से अलग हो जाती है. उसी तरह से आदमी जो दूसरे आदमी से अलग हो जाता है वह संपूर्ण समाज से अलग हो जाता है. अब जबकि शाखा को कोई दूसरा अलग करता है, परंतु आदमी अपने खुद के कृत्यों से अपने को अपने पड़ोसी से अलग करता है जब वह उससे नफरत करता है और उससे मुंह मोड़ लेता है, और उसी समय वह नहीं जानता की वह खुद को संपूर्ण समाज से अलग कर रहा है. तथापि हमारे पास जियुस से यह विशेषाधिकार होता है, कि यह हमारे अधिकार में है की हम उन्हें अपना बना सके जो हमारे नजदीक हैं, और उसका हिस्सा बने जो संपूर्ण बनने में मदद करता है. फिर भी, यह अकसर होता है, इस तरह का अलगाव, कठिनाई उत्पन्न करता है उसके लिए जिसने अपने को साथ रहने से और बहाल करने से पहले की स्थिति से अलग कर लिया. अंततः, शाखा, जो कि पहले पेड़ के साथ बढ़ रही थी, और जिसने अपने जीवन का एक हिस्सा उसके साथ गुजारा,

www.PDFshala.com

उस तरह से नहीं है जो कट जाने के बाद फिर से जुड़ जाए, क्योंकि यह कुछ इस तरह से होगा जिस माली मानता है जब वह कहते हैं की वह शेष पेड़ के साथ बढ़ रहे हैं, परंतु उसका मन उसके साथ नहीं है.

वह जो सही उद्देश्य के साथ खड़े होते हैं, वह उचित कृत्यों को करने से पीछे नहीं हटते, अतः उन्हें उनके कृत्यों से पीछे न हटने दें, बल्कि उनके दोनों उद्देश्य में साथ खड़े हों, न केवल स्थिर निर्णय और कार्यवाही मसलों में, बल्कि उनके लिए जो विनम्रता के चलते हुए उन्हें बाध्य या परेशान करने का प्रयास करते हैं. क्योंकि यह भी कमजोरी है, की उनसे झगड़ा करें, साथ ही खुद के कृत्यों को करने से विचलित हों और डर से रास्ता दें; क्योंकि दोनों समान रूप से अपनी जिम्मेदारी से भागना है, आदमी जो उसे डर से करता है, और आदमी जो स्वभाव से खुद से कटा हुआ है जो रिश्तेदार और मित्र है.

यहां कोई भी प्रकृति ऐसी नहीं है जो कि खुद से अवर है, क्योंकि स्वयं चीजों की प्रकृति का प्रतिनिधित्व करता है. परंतु यदि ऐसा है, प्रकृति जो सबसे ज्यादा परिष्कृत और सबसे ज्यादा पूर्ण है सभी प्रकृति में, वह खुद में कमजोर नहीं हो सकती है. अब सभी स्वयं खुद से अवर बनते हैं दूसरों को वरिष्ठ दिखाने के लिए; इसी तरह से ब्रह्मांड की प्रकृति करती है. और, निश्चित ही, न्याय के मूल में, और न्याय में अन्य गुणों के अपने आधार हैं: यदि न्याय का अवलोकन नहीं किया जाएगा, हम भिन्न चीजों की चिन्ता करेंगे, या आसानी से बहक जाएंगे, या लापरवाह हो जाएंगे या बदल जाएंगे.

यदि चीजें तुम्हारे अनुसार नहीं होती हैं, उनका पीछा करना और अवहेलना करना तुम्हें परेशान करता है, उसी तरह से जिस तरह से तुम उनके पास जाते हो. इस लिए उनके बारे में निर्णय आराम से लें, और वह शांत रहेंगी, और तुम अपने को न तो उनके पीछे जाते हुए या अवहेलना करते हुए देखोगे.

सम प्रवृति का हृदय अपने को स्थिर बनाए रखता है, तब वह न तो किसी चीज को खिचता है, और न संकुचित करता है, और न फैलाता है और न ही छिपाता है, बल्कि वह उस प्रकाश से चमकता है, जिससे वह सत्य को देखता है, सभी चीजों का सत्य और वह सत्य जो खुद उसमें है.

माना कोई व्यक्ति मेरा तिरस्कार करता है. उसे खुद से उसे देखने दो. बल्कि मैं इस तरफ देखूंगा, की मैं कोई ऐसी चीज न करूं या कहूं जिसका खंडन करना पड़े. क्या कोई आदमी मेरे से घृणा कर सकता है? उसे उस तरफ देखना चाहिए. परंतु मैं हर आदमी की तरफ सौम्य और उदार बना रहूंगा, और उसे उसकी गलती बताने का प्रयास करूंगा, तिरस्कार से नहीं, और न ही अपने संयम का प्रदर्शन करते हुए, बल्कि विनम्रता और ईमानदारी से, महान पोसचन की तरह, जब तक वह इसे स्वीकार करने को तैयार हो. अंतरिक हिस्सों को इस तरह का होना चाहिए, और देवताओं को आदमी न तो किसी चीज से असंतुष्ट और न ही शिकायत करता हुआ दिखना चाहिए. उसमें क्या बुराई है, यदि उसके कृत्य अभी उसके स्वभाव से सहमत हैं, और कृत्य सहमत

www.PDFshala.com

है उससे जो कि ब्रह्मांड की प्रकृति है, चूंकि आदमी उस तरह से कृत्य करने की कोशिश करता है जो किसी तरह से आम हित के हों?

आदमी एक दूसरे का तिरस्कार करता है और एक दूसरे की चापलूसी करता है; आदमी दूसरे से ऊपर उठने की चाहना रखता है, और एक दूसरे को धक्का देकर गिराना चाहता है.

कितना अगंभीर और निष्ठाहीन वह है जो कहता है, मैं इससे ईमानदार तरीके से निपटना चाहता हूँ- तब तुम क्या कर रहे हो? इसे बताने का यह कोई अवसर नहीं है. वह खुद से आपके कृत्यों में दिख जाएगा. आवाज खुद से आपके माथे पर लिख जाएगी. जैसा आदमी का चरित्र होता है, वह उसे तत्काल अपनी आंखों में दिखा देता है, जैसेकि वह जो प्यार में हैं अपनी प्रेमिका की आंखों से सभी कुछ पढ़ लेता है. आदमी जो कि ईमानदार और अच्छा है वह ठीक उसी तरह के आदमी के जैसा है जिससे खुशबू आ रही हो, जिससे की कोई जब उसके पास आता है वह उसकी गंध ले सके चाहे या नहीं चाहे. परंतु सादगी का दिखावा कुटिल लकड़ी की तरह से है. कुछ भी झूठी दोस्ती से ज्यादा शर्मनाक नहीं है, इससे हमेशा बचकर रहो. अच्छे और सरल और उदार सभी कुछ उसे आंखों में दिखाते हैं, और इसमें कोई गलती नहीं होती.

कैसे अच्छी तरह से रहा जाए यह आत्मा के अधिकार में है, यदि वह उदासीन है उन चीजों से जो कि उदासीन हैं. और वह उदासीन होगा, यदि वह इन चीजों को अलग-अलग देखता है और सभी को साथ-साथ, और यदि वह याद दिलाती हैं की इनमें से कोई भी हमारे अंदर खुद के बारे में राय पैदा नहीं करती हैं, और न ही हमारे पास आती हैं; बल्कि यह चीजें अचल बनी रहती हैं, और वह हम हैं जो उनके बारे में निर्णय देते हैं, और जैसा हम कहते हैं, खुद में लिखते हैं, यह हमारे अधिकार में है की हम उनको न लिखें, और यह हमारे अधिकार में है की यदि जाने अनजाने में यह निर्णय हमारी बुद्धि को प्रभावित कर रहा है, उसे वहां से मिटा दें; और यदा रखे की ऐसा आकर्षण थोड़े ही समय के लिए होता है, और फिर वह खत्म हो जाता है. यदि यह चीजें प्रकृति के अनुसार हैं, उनका आनंद लें, और यह तुम्हारे लिए आसान रहेंगी; परंतु यदि प्रकृति के विपरीत हैं, उसे चाहें जो हमारे खुद के स्वभाव के अनुरूप है, और उसके लिए प्रयास करें, तब भी जब उसे दोहराया नहीं जा सकता है; प्रत्येक आदमी को अपना अच्छा चाहने की अनुमति है.

विचार करें जब हर चीज आती है, और किससे यह बनी है, और किसमें यह बदल जाएगी, और किस तरह की यह चीज होगी जब वह बदल जाएगी, और यह कोई नुकसान न करे.

यदि किसी ने तुम्हें आहत किया है, पहले विचार करें; मेरा उस आदमी से क्या संबंध है, और क्या हम एक दूसरे के लिए बने हैं; और दूसरे संदर्भ में, क्या मैं उनसे सामंजस्य बैठाने के लिए बना हूं. बल्कि इसका परीक्षण पहले सिद्धांत से करें; यदि सभी चीजें अणु नहीं हैं, यह प्रकृति है जो सभी चीजों को व्यवस्थित करती है: यदि ऐसा है, खराब चीजें अच्छी चीजों की खातिर अस्तित्व में होती हैं, और एक दूसरे की खातिर.

www.PDFshala.com

दूसरा, विचार करे किस तरह के आदमी वह काम करते समय, आराम करते समय, और इससे आगे हैं: विशेषतः किन परिस्थितियों में वे इस राय के हैं; और उनके कृत्य करते समय विचार करें किस गरिमा से वे वह करते हैं जो वह करते हैं.

तीसरा, यदि आदमी सही करते हैं जो वह कर रहे हैं, हमें नाखुश नहीं होना चाहिए. लेकिन यदि वह सही नहीं कर रहे हैं, तो इसका सीधा अर्थ है की वह उसे अनायास और अज्ञानता से कर रहे हैं. जैसे कि हर आत्मा अनिच्छा से सत्य से वंचित है, उसी तरह से अनिच्छा से उस ताकत से वंचित है जो कि आदमी को उसके अनुसार काम करने को विवश कर सके. तदनुसार आदमी को दुःख पहुंचता है जब उन्हें अन्यायी, कृतघ्न, और लालची और पड़ोसी के साथ गलत करने वाला कहा जाता है.

चौथा, विचार करें तुम भी अनेक गलत काम करते हो, और दूसरे लोगों की तरह व्यवहार करते हो; और जबकि तुम कुछ गलतियों से बचते हो, फिर भी तुम्हारा स्वभाव होता है इन्हें करने का, चाहे कायरता से, या प्रतिष्ठा को ध्यान में रखकर, या किसी तुच्छ उद्देश्य को लेकर, तुम्हें फिर भी इस तरह की गलतियों से बचना चाहिए.

पाँचवाँ, विचार करें की तुम यह भी समझो की क्या आदमी गलत या सही कर रहें हैं, क्योंकि अनेक काम परिस्थितियों के विशेष संदर्भ में किए जाते हैं. और संक्षिप्त में, आदमी को काफी कुछ सीखना चाहिए जिससे की वह आदमी के कृत्यों के लिए सही फैसले ले सके.

छठा, विचार करो कितना ज्यादा झगड़ा और शोक हम करते हैं, जबकि आदमी का जीवन एक पल का है, और थोड़े समय के बाद हम मृत्यु के निकट होंगे.

सातवाँ, वह आदमी के कृत्य नहीं है जो हमें परेशान करते हैं, बल्कि वह हमारा दृष्टिकोण है जो हमें परेशान करता है. उस दृष्टिकोण को दूर करो, और काम करने के बारे में अपने निर्णय का समाधान करो जैसे वहाँ कुछ गंभीर है और गुस्सा जा चुका है. कैसे मैं तब इस दृष्टिकोण को दूर करूं? विचार करते हुए की दूसरे का गलत काम तुम्हें शर्मिंदा नहीं कर सकता: क्योंकि जबतक जो शर्मनाक है तन्हा बुरा है, तुम भी अनेक बार गलत करते हो, और चोर या सभी कुछ बन जाते हो.

आठवां, विचार करें कितना ज्यादा दर्द हमें गुस्सा करने से मिलता है जो कि ऐसे काम को करने से पैदा होता है जितना की खुद उस काम से नहीं, जिसको लेकर हम गुस्सा हुए थे.

नौवां, विचार करो अच्छा स्वभाव अजेय है, यदि वह वास्तविक है, और कृत्रिम मुस्कान या अभिनय का हिस्सा नहीं. बहुत हिंसक खुद से क्या करता है, यदि वह निरंतर अपने प्रति विनम्र स्वभाव को बनाए रखता है, और यदि, अवसर प्रस्ताव देता है, वह खुद को सौम्यता से धिक्कारता है और शांति से अपनी गलती को सही करता है, उसी समय जब वह नुकसान करना

www.PDFshala.com

चहता है, कहते हुए, ऐसे नहीं, मेरे बच्चे: हमारा प्रकृति द्वारा किसी और चीज के लिए गठन किया गया है: मैं निश्चित ही घायल नहीं होऊंगा, परंतु मैं खुद को घायल कर रहा हूं, मेरे बच्चे! और उसे सौम्य कुशलता से और आम सिद्धांत से यह दिखाओ की वह ऐसा है, और मधुमक्खी भी वैसा नहीं करती है जैसा वह करता है, और न ही अन्य जानवर जो कि प्रकृति द्वारा झुंड में रहते हैं. और तुम इसे न तो दोहरे अर्थ में करो और न ही तिरस्कार की भावना से, बल्कि प्यार से और बिना आत्मा के द्वेष से; और उस तरह से नहीं की वह उसे भाषण दे, और न ही उस तरह से की कोई दर्शक प्रशंसा करे, बल्कि जब वह अकेला हो, और यदि अन्य उपस्थित हों...

इन नौ नियमों को याद रखो, जैसे यह उपहार के रुप में मियुसिस से मिले हैं, और अंत तक आदमी बने रहो जब तक तुम जीओ. तुमको चापलूसी करने वाले आदमियों से दूर रहना चाहिए और उनसे बच के रहो, क्योंकि वह असामाजिक हैं और नुकसान करते हैं. और यह सत्य तुममें क्रोध की स्थिति में बना रहे, की भावावेश से चलना मर्दाना नहीं है, बल्कि दयालुता और नम्रता, जो कि मानव स्वभाव से ज्यादा सहमत है, इसलिए वह ज्यादा मर्दाना हैं; और वह जिसके पास यह विशेषताएं हैं उसके पास शक्ति, जोश और साहस है, और वह वैसा आदमी नहीं है जो भावावेश और असंतोष जुड़ा हो. उसी तरह से आदमी जिसका मन सभी तरह के भावावेश से लगभग स्वतंत्र है, वह भी ताकत के करीब है: और जैसेकि दर्द की संवेदना का होना कमजोरी का चरित्र है, उसी तरह से गुस्सा भी. क्योंकि जो दर्द को और जो गुस्से को उत्पन्न करता है, वह दोनों ही घायल करते हैं और दोनों हार मानते हैं.

बल्कि यदि तुम दसवां हिस्सा भी मियसिस के देवता, अपोलो से ग्रहण कर लो, और वह यह है- यह स्वीकार करना की गलत आदमी गलत नहीं करेगा पागलपन है, क्योंकि उसे असंभव मानता है. बल्कि अनुमति देना की वह आदमी दूसरों से ऐसा ही करेगा, और स्वीकार करना की उसने कुछ भी गलत नहीं किया है, वह तर्कहीन और निरंकुशता है.

यहां वरिष्ठ लोगों के चार मुख्य पतन हैं जिनसे तुम्हें बच कर रहना होगा, और जब भी तुम इन्हें पाओ, तुम इन्हें दूर करो और हर अवसर पर कहो; यह विचार जरूरी नहीं हैं: यह सामाजिकता को नष्ट कर देगा: यह जो तुम खुद से कहने जा रहे हो वह वास्तविक विचारों से नहीं आता है; उसके लिए तुम्हें विचार करना चाहिए की यह आदमी के लिए सबसे बेतुकी चीज है की वह अपने वास्तविक विचारों से नहीं बोलता है. साथ ही चौथा है की तुम खुद से किसी जबरदस्ती कम सम्मानजनक और विनाशशील हिस्से, शरीर, और उसके आनंद को चाहते हो.

अवास्तविक और उग्र हिस्से जो तुममें समाहित होते हैं, जिनमें प्रकृति से ऊपर उठने का प्राकृत होता है, फिर भी ब्रह्मांड की प्रकृति से सहमति को लेकर वह शरीर में अत्यधिक ताकतवर हो जाते हैं. और साथ ही तुम्हारे सांसारिक हिस्से और पानी की प्रकृति में नीचे जाने का प्राकृत होता है, उठ खड़े होते हैं और उस स्थिति को अधिकार में लेते हैं जो कि उनकी स्वाभाविक नहीं हैं. इस तरह से तब मौलिक हिस्से सार्वभौमिक का अनुसरण करते हैं, जब वह एक जगह स्थित हो जाते हैं वह वहां बने रहते हैं जब तक की सार्वभौमिक अस्थिर होने के संकेत नहीं देता है. यह तब अनोखा नहीं है की बौद्धिक हिस्सा खुद की स्थिति से अनभिज्ञ और असहमत न हो? और तब भी

www.PDFshala.com

जब कोई ताकत उस पर न लगाई गई हो, बल्कि केवल वह चीजें जो कि उसके स्वभाव के अनुरूप हैं: तब भी वह स्वीकार नहीं करता है, बल्कि दूसरी दिशा में चलता है. अन्याय और असंयम और क्रोध और रोष और डर के प्रति झुकाव कुछ नहीं बल्कि वह कृत्य है जिसमें कोई प्रकृति से विचलित होता है. और तब भी जब शासन करने वाली ताकत हर चीज से असंतुष्ट होती है जो तब अपने से दूर हो रही होती है: क्योंकि तब वह देवताओं के प्रति असंतुष्टि और द्वेष पैदा करती है.

यदि किसी का जीवन में एक और हमेशा समान उद्देश्य नहीं है, वह जीवन भर हमेशा एक जैसा नहीं रह सकता है. वह जो मैंने कहा है वह काफी नहीं है जबतक की इसमें यह भी न जोड़ा जाए, की वह उद्देश्य क्या हो. क्योंकि सभी चीजों के लिए कभी एक समान राय नहीं रहती है जो कि एक तरह से या दूसरी तरह से बहुसंख्यक द्वारा अच्छी मानी जाती हैं, बल्कि कुछ विशेष चीजों के लिए भी, जो कि, आम हित से संबंधित चीजें हैं; इस लिए खुद के लिए एक उद्देश्य स्थापित करो जो कि सामाजिक और राजनीतिक रूप से समान हो. वह जो अपने सभी प्रयास इन उद्देश्यों की तरफ लगाता है, अपने कृत्यों को उसी के अनुसार बनाता है, और हमेशा एक जैसा बना रहता है.

शहरी और जंगली चूहों के बारे में सोचो, शहरी चूहों की चेतावनी और घबराहट के बारे में भी.

सुकरात अनेक लोगों की राय को अफवाह, लड़ रहे बच्चों की डरावनी बाते कहा करते थे.

लेसेडिमोनियनस सार्वजनिक समारोह में अनजानों के लिए बैठने के लिए स्थान छाया में स्थापित करते थे, परंतु खुद से कहीं भी बैठ जाते थे.

सुकरात ने खुद को माफ किया प्डायक्स के पास न जाकर, वह इसलिए नहीं क्योंकि वह खतरनाक अंत को देख रहे थे, बल्कि यदि मुझे समर्थन नहीं मिला तब मैं उन्हें उसे वापस नहीं कर सकूंगा.

ईपिसियन के लेखन में यह एक नियम है, निरंतर सोचते रहो किसी मनुष्य के बारे में जिसने पहले कभी पुण्य के काम किए हैं.

प्यथोगोरस बोलते हैं की सुबह स्वर्ग की तरफ देखो जिससे की हम याद कर सकें उन तारों को जो निरंतर एक ही चीज करते हैं और एक ही तरह से अपना काम करते हैं, और उनकी शुद्धता और निर्वस्त्र होने को देखो. क्यों कि तारों के ऊपर कोई घूंघट नहीं होता है.

विचार करें किस तरह के आदमी सुकरात थे जब उन्होंने खुद को खाल से ढक लिया, जब ऐक्सथिपी, उनकी पत्नी ने उनके लबादे को ले लिया और चली गई, और तब सुकरात ने अपने दोस्तों से क्या कहा जो कि उनसे शर्मिंदा थे और दूर जाने लगे जब उन्होंने उसे इस तरह से देखा.

www.PDFshala.com

न तो लिखने में या पढ़ने में तुम दूसरों के लिए कोई भी नियम स्थापित करो जब तक खुद तुम खुद से उनका पालन न करो.

यदि तुम गुलाम हो: मुक्त भाषण तुम्हारे लिए नहीं है. और मेरा हृदय खुद में हंसता है. वह सौभाग्य को नष्ट कर देते हैं, कठोर वचन बोलकर.अंजीर को सर्दी में खोजना पागल आदमी का काम है: उसी तरह से जब वह अपने बच्चे को खोजता है जब उसे इसकी अनुमति नहीं होती है.

जब आदमी अपने बच्चे को चूमता है, इपिकेटुस कहते हैं, वह अपने से बुदबुदाते हैं, "कल हो सकता है तुम भी मारे जाओ." परंतु क्या यह गलत शगुन के शब्द हैं.- "कोई भी शब्द गलत शगुन का नहीं होता, जो प्रकृति के किसी काम को व्यक्त करता है, तब यह भी गलत शगुन के शब्द होते हैं जो बताते हैं की मक्का की बालियां पक चुकी हैं." इपिकेटुस कहते हैं.

कच्चा अंगूर, पका हुआ गुच्छा, सूखा अंगूर, सभी बदलाव हैं, नहीं होने में नहीं, बल्कि कुछ में जो अभी अस्तित्व में नहीं हैं.

इपिकेटुस कहते हैं, कोई भी आदमी हमारी स्वतंत्र आत्मा को चुरा नहीं सकता है. आदमी को अपनी स्वीकृति देने के लिए उस कला को खोजना चाहिए; और अपनी गतिविधि के संदर्भ में उसे सावधान रहना चाहिए की वह परिस्थितियों के अनुसार बनें, वह सामाजिक हित में हों, उनके पास विषय के मूल्यों के प्रति सम्मान हो; और जहां तक संवेदनाओं की चाहना हैं उसे उनसे दूर रहना चाहिए; और जहां तक घृणा की बात है उसे इसे किसी भी चीज पर प्रदर्शित नहीं करना चाहिए जो हमारे अधिकार में न हो. तब वाद, वह कहते हैं आम मसलों को लेकर नहीं बल्कि इसको लेकर हो की क्रोध करें या नहीं करें.

सुकरात कहा करते थे, तुम क्या चाहते हो? तर्कसंगत या तर्कहीन आत्मा? तर्कसंगत आदमी की आत्मा? कैसा तर्कसंगत आदमी? मजबूत या कमजोर? मजबूत. तब तुम उसके जैसे क्यों नहीं बनते हो? क्योंकि हम वैसे हैं. तब क्यों तुम लड़ते और झगड़ते हो?

www.PDFshala.com

अध्याय- 12

वह सभी चीजें जिनके पास तुम घुमावदार रास्तों से पहुँचते हो जो तुम्हारे पास अभी है, यदि तुम खुद से उन्हें अभी नकारते नहीं हो. और इसका मतलब है, तुम भूत को संज्ञान में नहीं लेते हो, और भविष्य पर विधि से विश्वास करते हो, और वर्तमान को धर्मपरायणता और न्याय के अनुरूप निर्देशित करते हो. धर्मपरायणता के अनुरूप, तुम वह काम करो जो तुम्हें निर्दिष्ट किया गया है, क्योंकि प्रकृति ने उसे तुम्हारे लिए बनाया है और तुम्हें उसके लिए बनाया है. न्याय के अनुरूप, तुम हमेशा स्वतंत्र होकर और बिना कपट के सत्य बोलो, और वह चीजें करो जो कि कानून के अनुकूल और प्रत्येक के मूल्य के अनुसार हों. और न ही आदमी की दुष्टता, और न ही राय, और न ही आवाज, और न ही शारीरिक अनुभूतियाँ जो उसके लिए विकसित हो गई हैं तुम्हें डराएं; क्योंकि निष्क्रिय हिस्सा इसकी तरफ देखेगा. तब जब तुम प्रस्थान करने के निकट होगे, हर चीज की उपेक्षा करते हुए तुम केवल शासन करने वाले और उनके अंदर के देवत्व का सम्मान करोगे, और यदि तुम डरते हो केवल इसलिए नहीं की तुम्हारे पास कुछ समय जीने के लिए हो, बल्कि तुमने जीवन की शुरूआत प्रकृति के अनुसार नहीं की—तब तुम ब्रह्मांड के योग्य होगे जिसने तुम्हें पैदा किया है, और तुम इस जन्म स्थान में अजनबी नहीं रहोगे, और आश्चर्य नहीं करोगे उन चीजों पर जो रोज होती हैं जैसे कि वह कुछ अनपेक्षित है, और निर्भर रहना इसपर और उसपर.

ईश्वर देखता है सभी आदमियों की बुद्धि (शासन करने वाले सिद्धांत) को जो अशुद्धि और भौतिक चाहना से आच्छादित हैं. अपने बौद्धिक हिस्से से वह केवल छूता है बुद्धि को जो कि खुद उससे इन शरीरों में बहती है और निकलती है. और यदि तुम भी ऐसा ही करो, तुम अपने को भारी परेशानी से दूर कर लेते हो. वह जो बेचारे शरीर का लिहाज नहीं करता है जो कि उसे आच्छादित करके रखता है, वह पोशाकों, और आवासों और प्रतिष्ठा और ऐसी बाहरी चीजों के प्रदर्शन को देखते हुए खुद को परेशानी में नहीं रखता है.

चीजें वह होती हैं जिस तरह से उनका सृजन होता है, एक छोटा बच्चा, एक छोटा जीवन, बुद्धि. इसमें से पहली दो तुम्हारी हैं, जब तक यह उनका कर्तव्य है की वह अपना ध्यान रखें; परंतु तीसरी उचित रूप से तुम्हारी है. इसलिए यदि तुम इसे अपने से अलग कर लेते हो, अपनी समझ से, जो कुछ भी दूसरे करते हैं और कहते हैं, और जो कुछ भी तुमने किया या कहा, और जो कुछ भी भविष्य की चीजें तुम्हें परेशान करती हैं क्योंकि वह हो सकती हैं, और जो कुछ भी शरीर में है जो तुम्हारा आवरण है, या जीवन (सांस) में है, जो प्रकृति से शरीर से जुड़ी है, वह तुम्हारी आत्मा की स्वतंत्रता से जुड़ी है, और जो कुछ भी बाहरी परिस्थिति मंथन कराती है, जिससे की बौद्धिक

www.PDFshala.com

ताकत भाग्य से मुक्त हो खुद से शुद्धता और स्वतंत्रता से रह सकें, वह करते हुए जो न्यायसंगत हैं और स्वीकार करते हुए जो हो रहा है, और सत्य को कहते हुए: यदि तुम पृथक कर लेते हो, इस शासक से उन चीजें को जो जुड़ी हैं संवेदना के प्रभाव से, और चीजें जिनका समय आना है और समय जो बीत चुका है, और तब अपने को बना लेते हो अपने आप में परिपूर्ण, अपने में संतुष्ट, दूसरों पर सरसरी निगाह डालते हुए; और यदि तुम प्रयास कर रहे हो जीने का जो कि वास्तव में जीवन है, तब वह वर्तमान है- तुम जीवन के उस हिस्से को पार कर लोगे जो तुम्हारे पास तुम्हारी मृत्यु तक बना रहता है, बैचेनी से मुक्त, भले आदमी की तरह, और खुद की आत्मा के आज्ञाकारी.

मैं अकसर आश्चर्य करता हूं कैसे यह है की हर आदमी दूसरों की जगह खुद अपने से ज्यादा प्यार करता है, लेकिन अपने लिए निम्न मूल्य निर्धारित करता है दूसरों के मूल्यों की जगह. यदि तब ईश्वर या ज्ञानी शिक्षक खुद को आदमी के सामने प्रस्तुत करे और उससे बोले कुछ न सोचने को और न करने को जिसे वह व्यक्त नहीं कर सकता है जैसे ही वह उसकी कल्पना करता है, वह इसे सहन नहीं कर सकेगा एक दिन के लिए भी. हम उन बातों का ज्यादा सम्मान करते हैं जिनसे की हमारा पड़ोसी हमारे बारे में सोचे इसकी जगह की हम खुद से अपने बारे में सोचें.

कैसे यह संभव है की देवताओं ने जिन्होंने सभी चीजों को सही तरह से और कायदे से मानवता के लिए व्यवस्थित किया है, ने केवल इसकी अनदेखी की हो, की कुछ लोग और बहुत अच्छे लोग, और आदमी जो, जैसा हम कहते हैं, के पास अधिकांश से और देवताओं से अधिक है, और धर्मपरायण कृत्यों और धार्मिक अनुसरण से देवताओं के अति निकट हैं, जब वह एक बार मर जाते हैं फिर से अस्तित्व में नहीं आते हैं, बल्कि पूरी तरह से बुझ जाते हैं?

यदि ऐसा है, यह सुनिश्चित करें की यदि यह विपरीत भी है, देवताओं ने इसे किया होगा. यदि यह सही है, यह भी संभव है; और यदि वह प्रकृति के अनुसार है, प्रकृति ने ऐसा चाहा होगा. परंतु यह ऐसा नहीं है, यदि वास्तव में यह ऐसा नहीं है, आश्वस्त रहें इसे ऐसा नहीं होना होगा:- क्योंकि तुम जो खुद से देखते हो वह इस समीक्षा में देवताओं से विवाद ही होगा; और इसलिए हमें देवताओं से विवाद नहीं करना चाहिए, जब तक की वहाँ सबसे उत्कृष्ट और सबसे न्यायोचित न हो:- परंतु यदि यह ऐसा है, तो उन्हें उपेक्षा से अन्याय और बिना विचार किए ब्रह्मांड में कुछ भी निर्देशित करने की अनुमति नहीं होगी. उन चीजों का भी अभ्यास करो जिन्हें पाने में परेशानी हो. यहाँ तक की बायाँ हाथ, जो कि निष्क्रिय है उन सभी चीजों में जिनका तुम अभ्यास करते हो, लगाम को कस को पकड़ो सीधे हाथ की जगह; और इसका अभ्यास करते रहो.

विचार करें आदमी शरीर और आत्मा में क्या होगा जब उसे मृत्यु अपने अधिकार में ले लेगी; और विचार करो जीवन की तकलीफों पर, समय का भूत और भविष्य की असीमित सोच में नष्ट होना, सभी मसलों में तुच्छता.

मनन करें चीजों के प्रारंभिक सिद्धांत (आकार) का उनके अंदर झांक कर; कृत्यों का उद्देश्य;

www.PDFshala.com

विचार करें क्या दर्द है, आनंद है, और यश है; जो खुद में बेचैनी का कारण हैं; कैसे दूसरा रुकावट नहीं बन सकता है; यह चीज का अपना दृष्टिकोण है.

सिद्धांतों के अमल करने में तुम कुश्ती लड़ने वाले की तरह से हो न कि तलवार बाज की तरह से; तलवार बाज की तलवार गिरी जिसका वह इस्तेमाल कर रहा है और उसकी मौत हुई; परंतु दूसरी तरफ कुश्ती में उसके केवल हाथ ही होते हैं और वह उनके अतिरिक्त किसी और चीज का प्रयोग नहीं कर सकता है.

देखें चीजें अपने में क्या हैं, उन्हें विभाजित करें, आकार और उद्देश्य में.

शक्तिशाली व्यक्ति को कुछ नहीं करना चाहिए इसके अतिरिक्त की वह जो ईश्वर ने उसके लिए स्वीकृत किया है और जो ईश्वर दे, उसे स्वीकार करना.

सम्मान के साथ जो प्रकृति के अनुरूप हो उसके लिए हमें देवताओं को दोष नहीं देना चाहिए, क्योंकि वे कुछ भी खुद से या अनायास गलत नहीं करते, और न ही आदमी अनिच्छा के अतिरिक्त कुछ भी गलत करते हैं. फलस्वरूप वह किसी पर भी को दोषारोपण न करें.

कितना हास्यास्पद और कितना अजनबी है वह जो किसी भी चीज से अचंभित होता है जो जीवन में घटित होती है.

चाहे वहाँ घातक आवश्यकता है और अजेय अनुक्रम, या दयालु विधाता, या बिना उद्देश्य या निर्देश के भ्रम. यदि वहां अजेय आवश्यकता है, तो तुम क्यों विरोध करते हो? बल्कि यदि वहां विधि खुद से संतुष्ट है, अपने को देवत्व की मदद करने की अनुमति दो. बल्कि यदि वहां कोई भ्रम हो, बिना निर्देशक के यह याद रखें इस आंधी में तुम्हारे पास निश्चित ही शासन करने वाली बुद्धि है. और यदि आंधी तुम्हें उड़ा कर ले जा रही है, तब उसे यह गरीब मांस, गरीब सांस, सभी कुछ ले जान दो; बुद्धि को कम से कम वह नहीं लेकर जा सकती है.

क्या दीपक की रोशनी चमकती है बिना अपनी चमक को खोए जब तक की वह बुझ न जाए; और क्या सत्य और न्याय और संयम जो कि उसमें हैं उसकी मृत्यु से पहले बुझ जाएगा?

जब आदमी ने गलत प्रस्तुतिकरण प्रस्तुत किया है, कहें, कैसे मैं जानूं की यह गलत काम है? और यदि गलत किया है, कैसे पता चलें की उसने खुद से खंडन नहीं किया है? और इस तरह से यह खुद के चेहरे को नोचने जैसा है. यह विचार करें वह, कैसा बुरा आदमी होगा जिसने बुरा किया है, वह उस आदमी की तरह से होगा जो अंजीर का पेड़ नहीं है पर जो अंजीर में रस धारण करता है. ऐसे चरित्र के लिए आदमी क्या किया जा सकता है? तब चिड़चिड़ाहट ही ऐसे आदमी से बचा सकती है.

www.PDFshala.com

यदि वह सही नहीं है, उसे न करें: यदि वह सत्य नहीं है, उसे न करें. चाहे उनके प्रयास कुछ भी हों-

हर चीज में हमेशा अवलोकन करें क्या यह चीज प्रस्तुत करती है, और उसका समाधान करें विभाजित करके उसे मसले में, उद्देश्य में और समय में जिसमें उसका अंत हो जाए.

अंत में देखे की क्या वहाँ कुछ चीज बेहतर हैं और ज्यादा महान उस चीज से जो भिन्न प्रभाव पैदा करती हैं, और वह तारों से खींची जा रही है. क्या इस पल मेरे दिमाग में हैं? क्या यह डर है, या संदेह, या चाहना, या कुछ चीज इस प्रकार की?

पहले, कुछ भी विचार शून्य होकर, और न ही बिना उद्देश्य के करें. दूसरे, कृत्य उस तरह से करें जो सामाजिकता के अतिरिक्त कुछ न हो.

विचार करें कुछ भी कहीं भी नहीं था, और न ही कोई भी चीज जो दिखती है बनी रहेगी, और न ही वह लोग जो अभी जीवित हैं. हर चीज प्रकृति द्वार बदलाव के लिए बनाई गई है और बदल जाती है और नष्ट हो जाती है इस क्रम में की दूसरी चीजें निरंतर विरासत में अस्तित्व में बनी रहें.

विचार करें हर चीज के लिए एक दृष्टिकोण है, और दृष्टिकोण तुम्हारे अधिकार में है. तब इसपर अधिकार करें, जब अपना दृष्टिकोण चुनने की जरूरत हो, नाविक की तरह जिसने हलचल को दोगुना कर दिया है, वह भी शांत, हर तरह से स्थिर और तरंग रहित खाड़ी को खोजता है.

हर गतिविधि चाहे जो भी वह हो, जब उसे उचित समय पर प्रयोग किया जाता है, कोई बुराई नहीं करती जब उसका इस्तेमाल किया जाता है; और न ही वह जो इस कृत्य को करता है, क्या वह उस कारण से किसी बुराई को सहन करता है जिससे कृत्य को किया गया है. इसी तरह से तब संपूर्ण जो कि सभी कृत्यों को करते हैं, जो हमारा जीवन है, यदि वह सही समय पर कृत्यों करते है, इस बुराई को सहन नहीं करते हैं की कृत्यों को किया गया; और न ही वह जिसने इस श्रृंखला को उचित समय पर खत्म किया है, इसमें बुरा करता है. परंतु उचित समय और सीमा प्रकृति तय करती है, कभी-कभी जैसे वृद्धावस्था में आदमी का अजीब स्वभाव, इस तरह से बदलाव करके संपूर्ण ब्रह्मांड को निरंतर युवा और परिपूर्ण बनाता रहता है. और हर चीज जो कि उपयोगी है ब्रह्मांड के हमेशा अच्छी है और समय पर है. इसलिए हर आदमी के जीवन का अंत बुराई नहीं है, क्योंकि न तो यह शर्मनाक है, चूंकि यह इच्छा से स्वतंत्र है और आम चाहना के विपरीत नहीं है, बल्कि यह अच्छी है, चूंकि यह ब्रह्मांड के समयोचित और लाभदायक और अनुकूल है. इसलिए जिसे की देवताओं द्वारा चलाया जाता है उसे उसी तरीके से देवताओं के साथ चलना होता है और उसी चीज की तरफ जो उसके दिमाग में है.

इन तीन सिद्धांतों को अपने पास हमेशा तैयार रखो. वह जो कुछ भी तुम करते हो, उसे बिना विवेक का प्रयोग करे नहीं करोगे बल्कि न्याय संगत कृत्य होगा; बल्कि जो कुछ भी तुम्हारे

www.PDFshala.com

साथ बिना कुछ किए होगा, विचार करें वह या तो संयोग से या विधि के अनुसार होगा, और तुम न तो संयोग को दोष दोगे या विधि को कोसोगे. दूसरा, हर जीव समय के उस बीज से पैदा हुआ है जब उसे आत्मा मिली है, और आत्मा के जाने पर वह उसमें वापस चला जाएगा, और किस चीज से हर आदमी बना है और किस चीज में वह समा जाएगा. तीसरा, यदि यकायक तुम धरती से ऊपर उठ जाओ, और तुम मानवीय चीजों की तरफ देखो, और उनकी विविधता का अवलोकन करो कितनी महान वह हैं, और उसी समय एक निगाह में देखना कितनी भारी संख्या में जीव हवा में उठ रहे हैं, विचार करें जितनी बार वह उठ रहे हैं, क्या वह भी वही चीज देख रहे हैं, चीजों में समानता और समय की अल्पता. क्या यह चीजें गर्व करने लायक हैं?

राय को बदल डालो: कौन तुम्हें बचा सकता है. कौन तुम्हें इसे बदलने से डरा सकता है?

जब तुम्हारा खुद किस चीज को लेकर परेशान है, तुम यह भूल जाते हो, की सभी चीजें ब्रह्मांड की प्रकृति के अनुसार होती हैं; और यह भी भूल जाते हो, की आदमी का गलत खुद उसका नहीं होता है; और उससे आगे यह भी भूल जाते हो, की जो कुछ भी होता है, हमेशा हुआ है और हमेशा होगा, और अभी भी सभी जगह होगा; इसे भी भूल जाते हो, कि कितने पास की आदमी और सारी मानव जाति की रिश्तेदारी है, क्योंकि यह एक समुदाय है, केवल थोड़े से खून या बीज का नहीं, बल्कि बुद्धि का. और तुम यह भी भूल चुके हो, कि हर आदमी की बुद्धि देवता के समान है, और वह देवत्व पर समाप्त होती है; और भूल जाते हो की कुछ भी आदमी का नहीं है, बल्कि उसका बच्चा और उसका शरीर और उसकी आत्मा देवत्व से आती है; यह भी भूल जाते हो की हर चीज एक राय है; और अंत में यह भी भूल जाते हो की हर आदमी केवल वर्तमान में जीता है और केवल उसी को खोता है.

निरंतर अपने को याद दिलाते रहो की जो लोग भारी मात्रा में हर चीज को लेकर शिकायत करते रहते थे, जो किसी तरह की महान प्रसिद्धि या दुर्भाग्य या सौभाग्य से हमेशा चर्चा में रहते थे: फिर सोचो की अब वह लोग कहां हैं? धुआं और राख और एक किस्सा, या एक किस्सा भी नहीं. और यह भी तुम्हारे दिमाग में बना रहे सभी कुछ इस तरह का, कैसे फैबिया कैटलिनियस दूर देश में रहते थे, और लयुक्स ल्युप्स बगीचों में, और स्टिर्टिनुस बेयाई में और रफस वेलिया में; और उत्सुकता से भरी सोच किसी भी चीज की तरफ गर्व से जोड़ती है; और कैसे हर चीज बेकार होती है जिसके बाद आदमी हिंसक तनाव में होता है; और कितना आदमी के लिए यह दार्शनिक होगा की वह उस अवसर को देखे जो उसके सामने है.

◆ ◆ ◆

www.PDFshala.com

अनुवादक के बारे में

डा. आलोक कुमार एक शिक्षक, लेखक और अनुवादक, और प्रशिक्षु राजनीतिज्ञ भी. आगरा में रहते हैं और डा. भीम राव अंबेडकर वि. वि. के एक संस्थान औद्योगिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (IET) में गणित के प्रवक्ता हैं.

हमेशा विश्वास करते हैं की कोई भी कुछ बेहतर कर सकता है यदि वह सोचता है.

एक शिक्षक और लेखक के रुप में गणित और कंप्यूटर से लगाव है. नियमित रुप से आम रुचि की चीजों को करते हैं और पुस्तकों का अनुवाद करते हैं. लेखक और अनुवादक के रुप में जिनकी मातृ भाषा हिंदी है उन्हें विश्व के श्रेष्ठ साहित्य और जानकारियों से अवगत करने का छोटा प्रयास भी करते हैं.

इस विषय पर और विचार जानने के लिए आप संपर्क कर सकते हैं---

डा आलोक कुमार,

निहाल निकेतन, अशोक नगर, आगरा

मोबाईल- (91) 9412331314

ई-मेल: dralokumar@gmail.com

फेसबुक: https://www.facebook.com/dralok.in

वेवसाइट: dralok.in

© Dr Alok Kumar, 2016

© Center for Innovative Leadership, 2016

www.PDFshala.com